भास्कर 1/12/25 पेज 12

खेती • अलग-अलग किस्मों को जून-जुलाई, अक्टूबर-नवंबर या फरवरी-मार्च में खेतों में लगा सकते हैं

पपीता की खेती किसानों के लिए लाभकारी वैज्ञानिक तकनीक से लगाएं पौधा : डॉ. संजय

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रति हेक्टेयर लगभग तीन लाख रुपये की शुद्ध कमाई कर सकते हैं

पपीते की बहुत सारी किस्में हैं जिसे किसान जून-जुलाई से लेकर अक्टूबर-नवंबर या फरवरी-मार्च तक खेतों में लगाकर ज्यादा मुनाफा कमा सकते है। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। पपीता की खेती किसानों के लिए एक ऐसा विकल्प है जिसके माध्यम से किसान सभी लागत खर्च निकालने के बावजूद प्रति हेक्टेयर लगभग तीन लाख रुपये की शुद्ध कमाई कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि पपीते की रेड लेडी प्रजाति एक ऐसी प्रजाति है जिसकी खेती किसानों को मालामाल बना सकती है। पपीते की खेती में इस प्रजाति को कृषि वैज्ञानिक किसानों के लिए सबसे उपयुक्त मानते हैं।

पपीते के पौधों के बीच अंतरवर्ती खेती कर कमा सकते हैं दोगुना मुनाफा : कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि खेतों में पपीता लगाएं जाने के बाद पपीते के दो पौधों के बीच पर्याप्त मात्रा में जगह खाली पड़ी रहती है। ऐसी स्थिति में किसान इन जगहों का उपयोग छोटे आकार वाले सब्जियों के पौधों को लगाकर इसकी खेती करते हुए अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान पपीते के दोनों पेड़ों के बीच प्याज, पालक, मेथी, मटर, बींस आदि सब्जियों की खेती आसानी से कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि पपीते की फसल में किसानों को यह सावधानी जरूर बरतनी चाहिए कि वे पपीते से एक बार फसल लेने के बाद उसी खेत में तीन साल तक पपीते की खेती न करें तो बहुत अच्छा रहेगा। चूंकि एक ही खेत में लगातार पपीते की खेती करने से फलों का आकार छोटा होने लगता है।

नर्सरी में रखा पपीता का पौधा।

सामान्य पीएच मान वाली बलुई दोमट मिट्टी बेहतर

उन्होंने बताया कि पपीते के बेहतर उत्पादन के लिए 20 डिग्री सेंटीग्रेड से 30 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान सबसे उपयुक्त होता है। उन्होंने किसानों को बताया कि पपीते की रोपाई के लिए सामान्य पीएच मान वाली बलुई दोमट मिट्टी बेहतर होती है। उन्होंने कहा कि पपीते के पौधे में एफीड एवं सफेद मक्खियों के वायरस के द्वारा पर्ण संकुचन रोग और रिंग स्पॉट रोग भी लग जाता है। इससे बचाव के लिए किसान पौधे पर डाइमथोएट दवाई का 2 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

किसान तकनीक से कब, कैसे और किस तरह करें पपीते की खेती

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पपीता उष्ण कटिबंधीय फल है। किसान इसके अलग-अलग किस्मों को जून-जुलाई से लेकर अक्टूबर-नवंबर या फरवरी-मार्च तक खेतों में लगा सकते है। पपीते की फसल पानी को लेकर काफी संवेदनशील होती है। पपीता लगाए जाने से लेकर फल आने तक इसमें उचित मात्रा में ही पानी देना चाहिए। पानी की कमी से पौधों और फलों की बढ़त पर असर पड़ता है परंतु पानी की अधिकता होने से सीधा पपीता का पौधा ही नष्ट हो जाता है। किसानों को पपीता उन्हीं खेतों में लगाना चाहिए जहां पानी बिल्कुल भी जमा न होता हो। उन्होंने बताया कि पपीते में गर्मी में हर हफ्ते तथा ठंड में दो हफ्ते के बीच इसमें सिंचाई करनी चाहिए। किसान पपीता लगाने के लिए उन्नत किस्म के बीजों को अधिकृत जगहों से खरीदकर तथा अच्छे से खेतों की जुताई कराकर खेतों में एक सेंटीमीटर की गहराई पर इसकी रोपाई करें। उन्होंने बताया कि पपीते का पौधा लगाने के लिए किसान 60 सेंटीमीटर लंबा, 60 सेंटीमीटर चौरा तथा 60 सेंटीमीटर गहरा खेतों में गड्ढा खोदने के बाद उसमें उचित मात्रा में नाइट्रोजन, फोस्फोरस, पोटाश व देशी खादों को डालकर गड्ढे को 20 सेंटीमीटर की ऊंचाई तक भर दें तथा इसके बाद ही इस गड्ढे में पौधे की रोपाई करें।

भास्कर 1/12/25 पेज 13

खेती-किसानी • कृषि वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण सलाह को अपना कर रोग से बागों को बचा कर बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं किसान

केले के पौधे में लगने वाला गुच्छशीर्ष रोग खतरनाक और विनाशकारी : वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

केले के पौधे में लगने वाला बंची टाप यानी गुच्छ शीर्ष रोग काफी खतरनाक और विनाशकारी होता हैं। यह रोग विषाणु से उत्पन्न होने वाला रोग हैं। इस रोग ने सन 1950 में केरल राज्य के करीब 4000 वर्ग किलोमीटर के केले के बागों को संक्रमित कर पूरे देश में तहलका मचा दिया था। केला उत्पादक किसान वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण सलाह व टिप्स को अपनाकर इस रोग से अपने बागों को बचाते हुए केले से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने बताया कि एक आँकड़े के अनुसार केरल से जुड़े केले के बागों में इस रोग का प्रकोप होने से प्रतिवर्ष लगभग 6 करोड़ रुपए की क्षति किसानों को होती है। केरल के बाद यह रोग अब उड़ीसा, तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं बिहार के प्रांतों में भी पहुंच गया हैं। इसलिए इन राज्यों से जुड़े केला उत्पादक किसानों को काफी सतर्कता बरतने की जरूरत हैं।

गुच्छशीर्ष रोग से ग्रसित केले के पौधे।

यह है इस रोग के प्रमुख लक्षण

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के लक्षण केले के पौधों पर किसी भी अवस्था में देखे जा सकते हैं। पौधों के शीर्ष पर पत्तियों का गुच्छा बन जाता है इसलिए इस रोग को गुच्छ शीर्ष रोग कहते हैं। इस रोग से संक्रमित होने के बाद पौधे बौने ही रह जाते है। रोग का प्राथमिक संक्रमण रोगी अत: भूस्तारी के रोग से होता है जबकि रोग का द्वितीय संक्रमण कीड़ों से होता है। केले के तरूण पौधों पर इस रोग का प्रकोप खासकर सबसे पहले होता है जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है। इतना ही नहीं इस रोग के लगने के बाद पौधे की ऊंचाई 60 सेमी से अधिक नहीं हो पाती है तथा इन पौधों में फल भी नहीं लग पाते है।

किसान बंची टॉप रोग को ऐसे करें प्रबंधित

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि केले के स्वस्थ व रोगी पौधों पर कीटनाशक दवा का एक एमएल मात्रा प्रति 2 लीटर पानी के साथ घोलकर किसानों को छिड़काव करते रहना चाहिए। इस छिड़काव से रोगवाहक कीड़े नष्ट हो जाते हैं और रोग के प्रसार पर रोक लग जाती है। इस रोग से बेहतर निदान पाने के लिए केला उत्पादक सभी किसानों को एक साथ व एक समय मिलकर आसपास के सभी बागों में कीटनाशक का छिड़काव करना चाहिए। एक ही दिन दवाओं का प्रयोग करने से केले में लगे इस रोग के कीड़े आसपास के बगीचों में भाग नही पाते हैं। उन्होंने बताया कि किसान इस रोग से केले के पौधों को बचाने के लिए रोपाई के वक्त सहनशील और रोग प्रतिरोधी केले के प्रजाति का चयन करें। बाग में जब रोग लगे हो तब किसान संक्रमित पौधों को उनके बाहरी लक्षणों के आधार पर पहचान करते हुए उन्हें भूमि से कीट के साथ काटकर हटा दें। केला उत्पादक किसान हमेशा विषाणु अनुक्रमित प्रमाणित ऊतक संवर्धन के पौधों का प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि किसान इस रोग से केले के पौधों को बचाने के लिए केले के बागों को खरपतवारों से मुक्त रखें तथा अंतर फसल के रूप में कद्दू वर्गीय फसलों को बाग के अंदर बिल्कुल भी न लगाएं। कद्दू वर्गीय फसल वायरस रोगों के प्रति काफी अतिसंवेदनशील होते है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 3 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री एवं न्यूनतम 12 से 14 डिग्री के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
01 दिसंबर	24.0	13.0
02 दिसंबर	24.0	13.5
	दरभंगा	
01 दिसंबर	24.0	13.5
02 दिसंबर	24.5	14.5
	पटना	
01 दिसंबर	26.2	15.8
02 दिसंबर	26.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 1/12/25 पेज 4

किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराने पर दिया जोर

अतिथि को सम्मानित करते कुलपति.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्यापति सभागार में प्रसार शिक्षा परिषद की दो दिवसीय नौ वीं बैठक में केवीके एवं किसानों के उत्थान के लिए मंथन किया गया. इसमें गुणवत्तायुक्त बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया. सभी केवीके में रियल टाइम जीपीएस बेस्ड सिस्टम मॉनिटरिंग की सुविधा बहाल की जायेगी. वीडियो कांफ्रेंसिंग की भी सुविधा से केवीके को लैस किया जायेगा. केंद्रों पर मखाना की खेती को बढ़ावा देते हुए प्रत्यक्षण की शुरुआत करने की दिशा में पहल शुरू करना है. केला अनुसंधान केंद्र एवं केवीके के माध्यम से केले के रेशे से बने विभिन्न उत्पाद पर प्रशिक्षण एवं उद्यमिता विकास के लिए कार्य करना है. वहीं केले की रस से ऑर्गेनिक खाद का निर्माण भी किया जाना है. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने बताया कि प्रसार शिक्षा विवि की एक वैधानिक संस्था है. इसकी बैठक बहुत ही महत्वपूर्ण होती है. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विवि को केंद्रीयकृत होने से पहले प्रसार शिक्षा परिषद की कुल 60 बैठकें एवं केंद्रीयकृत होने के बाद से हुई 9 बैठकों को प्रकाशित करने की जरूरत है. समन्वय स्थापित कर अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में आगे बढ़ने की जरूरत है.

कृषि विज्ञान केंद्रों एवं विवि में उपलब्ध कृषि यंत्रों को कस्टम हायरिंग सेंटर के रूप में सुचारू रूप से पीपीपी मोड में संचालित किया जाना है. जिससे किसानों को सीधे लाभान्वित किया जा सके. मरीचा धान के अलावा अन्य फसलों को भी जीआई टैग दिलाने की दिशा में कार्य करने की जरूरत है. किसानों को देने वाले बीज के पूरा के पूरा पैकेज ऑफ प्रैक्टिस बनाकर साथ में दिया जाये. जिससे किसान उस पैकेज का समुचित लाभ ले पायें.

प्रभात खबर 1/12/25 पेज 5

मधुमेह रोगियों के लिए मिलेट्स बेहतर विकल्प

प्रतिनिधि, पूसा

खेतों में प्रत्यक्षण करते किसान.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ श्वेता मिश्रा ने बताया कि बिहार में श्री अन्न उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मिट्टी की तैयारी, बीज चयन, बुवाई की तकनीक और टिकाऊ कृषि पद्धतियां अपनाई जाती है. इसमें मुख्य रूप से शून्य जुताई व सीधी बुवाई शामिल हैं. इन तकनीकों का महत्व श्री अन्न के उच्च पोषण मूल्य कम पानी की आवश्यकता व जलवायु-प्रतिरोधी क्षमता में निहित है. यह पारंपरिक फसलों के लिए एक टिकाऊ और स्वास्थ्यप्रद विकल्प बनाता है. उन्होंने बताया कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले, रोग-प्रतिरोधी और जल्दी पकने वाली किस्मों का चयन करना चाहिए. धान की फसल के बाद बिना जुताई किए सीधे गेहूं, चना या सरसों की बुवाई की जाती है. जिससे लागत और श्रम कम होता है. खरीफ मौसम में धान, मक्का और सोयाबीन के साथ-साथ बाजरा की सीधी बुवाई की जाती है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और जल दक्षता में सुधार करती है. फसल अवशेषों से मल्चिंग करने से मिट्टी की नमी संरक्षित रहती है. खरपतवार नियंत्रण होता है. जैविक खादों का उपयोग श्री अन्न की गुणवत्ता और उपज में सुधार कर सकता है. श्री अन्न प्रोटीन, विटामिन, खनिज और फाइबर से भरपूर होते हैं, जो गेहूं और चावल से भी बेहतर हैं. वे ग्लूटेन-मुक्त होते हैं. जिससे सीलिएक रोग या मधुमेह वाले लोगों के लिए एक बेहतर विकल्प हैं. किसानों की आय में वृद्धि होती है. श्री अन्न की मांग बढ़ने से किसानों को आर्थिक रूप से लाभ होता है. बिहार सरकार श्री अन्न को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं और वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है.

प्रभात खबर 1/12/25 पेज 5

दीक्षारंभ कार्यक्रम में 'मधुबनी कला' पर विशेष सत्र आज

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को स्नातक छात्रों के लिए "मधुबनी कला" पर एक विशेष सत्र होगा. यह सत्र विश्वविद्यालय के महत्वाकांक्षी 'दीक्षारंभ' कार्यक्रम का एक हिस्सा होगा. विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पीके प्रणव ने जिले के प्रसिद्ध मिथिला पेंटिंग कलाकार डॉ. कुंदन कुमार राय को इस कार्यक्रम के लिए अतिथि विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया है. विवि ने सत्र 2022-23 से 'दीक्षारंभ' कार्यक्रम शुरू किया है जो नव-प्रवेशित छात्रों के लिए एक संरचित इंडक्शन (प्रेरण) कार्यक्रम है. इसका उद्देश्य छात्रों को चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय विरासत, परंपरा व संस्कृति के मूल मूल्यों से परिचित कराना है. इस वर्ष दीक्षारंभ कार्यक्रम 13 दिसंबर 2025 तक निर्धारित है. जिसमें लगभग 450 स्नातक छात्र भाग ले रहे हैं. कुलसचिव द्वारा जारी पत्र में कहा गया है कि मधुबनी कला पर यह सत्र छात्रों में रचनात्मकता और सांस्कृतिक समझ को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा. सत्र का उद्देश्य यह भी है कि अतिथि विशेषज्ञ के अनुभव और विचार छात्रों व संकाय सदस्यों को प्रेरित करें. डा. राय ने बताया कि मधुबनी पेंटिंग बिहार ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और कलात्मकता का चित्रपट है. यहां के संपन्न इतिहास और संस्कृति की अभिव्यक्ति के रूप में मशहूर यह चित्रकला हमारे इतिहास को हमारे आज से जोड़ने वाला एक पुल है. जिसका परचम आज पूरी दुनिया में लहरा है.

डॉ कुंदन कुमार राय.

कार्यक्रम • अभिनेता व अभिनेत्री ने छात्रों को ड्रामा और सिनेमा से संबंधित अभिनय के बारे में दी जानकारी

दीक्षारंभ ऐसा प्रशिक्षण है जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद करेगा : वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान विवि के नव आगंतुक छात्रों में अभिनय कौशल के साथ-साथ अन्य सॉफ्ट स्किल के विकास को लेकर भी प्रयास किये जा रहे हैं। इसी कड़ी में दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान सोमवार को बिहार की अभिनेत्री सोनल झा ने ड्रामा तथा सिनेमा से संबंधित अभिनय के बारे में छात्रों के साथ संवाद किया।

उन्होंने कहा की अभिनय में शिक्षा बहुत मदद करती है। मनुष्य की भावनाये अभिनय के मूल है। थियेटर से जुड़े अभिनेता जावेद अख्तर ने भी थियेटर की बारीकियों को लेकर विद्यार्थियों के साथ चर्चा की। थिएटर आर्टिस्ट एवं नृत्यांगना मोना झा ने छात्र एवं छात्राओं को नृत्य की बारिकियों एवं भाव भंगिमाओं की जानकारी दी। दीक्षारंभ में सभी नवांगतुक छात्र छात्राओं को उनकी पसंद के मुताबिक विभिन्न क्लबों से भी जोड़ा गया है। सोमवार को स्पोर्ट्स क्लब, लिटरेरी क्लब, कल्चरल क्लब, आर्ट्स एंड क्राफ्ट क्लब एवं अन्य क्लब से संबंधित कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिसमें छात्र छात्राओं ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित की। स्पोर्ट्स क्लब में शामिल विद्यार्थियों के लिए तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में फुटबॉल, वॉलीबाल, एथलेटिक्स एवं अन्य प्रतियोगितायें आयोजित की गई। इधर कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने भी रविवार को स्वयं दीक्षारंभ के दौरान क्लास लिया।

उन्होंने छात्रों को दीक्षारंभ के महत्व के बारे में बताया और कहा कि दीक्षारंभ एक ऐसा प्रशिक्षण है जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का असर छात्र जीवन भर महसूस कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 13 दिसंबर तक चलेगा और इसका समापन एक वृहत समारोह प्रदक्षिणा से होगा। समापन के दिन सभी विद्यार्थियों को राष्ट्र सेवा और देशभक्ति से संबंधित शपथ भी दिलाई जाएगी। उन्होंने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम के बाद छात्रों का रेगुलर क्लास शुरू होगा जिसका एकेडमिक कैलेंडर छात्रों को दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान ही उपलब्ध करा दिया गया है।

कार्यक्रम में शामिल मुख्य अतिथि कुंदन राय व अन्य।

सबसे घने अंधेरे के बाद ही होता हैं सूर्य का उदय : कुंदन कुमार

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि समस्तीपुर के मोटिवेशनल स्पीकर व आर्टिस्ट कुंदन कुमार राय ने भी शिरकत की। उन्होंने लगातार चौथी बार मुख्य अतिथि के रूप में नव आगंतुक छात्र छात्राओं को अपने मोटिवेशन से जागृत और कला से अलंकृत किया। कुंदन कुमार राय के विवि पहुँचने पर कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस की डीन डॉ. उषा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. गायत्री के अलावे सीसी एस एंड चेयरमैन आर्ट्स एंड क्राफ्ट क्लब द्वारा पुष्प गुच्छ व स्मृति चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर नव आगंतुक छात्रों को संबोधित करते हुए कुंदन कुमार रॉय ने कहा की जीवन में कितना भी अंधेरा क्यों न हो छात्रों को उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि सबसे घने अंधेरे के बाद ही सूर्य का उदय होता है। उन्होंने कहा कि पुसा विवि का विरासत और यहां का शैक्षणिक वातावरण दोनों काफी उत्तम हैं। विवि द्वारा शुरू किये गए दीक्षारंभ कार्यक्रम से छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण हो रहा हैं। छात्र राष्ट्रीय विरासत, परंपरा और संस्कृति के मूल मूल्यों से भी परिचित हो रहे हैं। उन्होंने अंत में छात्रों को मिथिला पेंटिंग के बारे में विस्तृत जानकारी दी और उन्हें बॉर्डर, पत्ते, कमल, चिड़िया, हिरन और राधा कृष्ण भी बनाना सिखाया।

गेहूं की फसल में समय से करें खरपतवारों का नियंत्रण

प्रिय अन्नदाता,

किसानों के खेतों में बोई गई गेहूं की फसल अब धीरे धीरे बढ़ रही हैं। इस समय गेहूं की फसल में अनावश्यक कई तरह के खरपतवार भी निकल आएं हैं। इन खरपतवारों को अगर समय से नियंत्रित नही किया गया तो इससे किसानों के गेहूं का उत्पादन 20 से 40 प्रतिशत या इससे भी अधिक घट सकता हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के फसल सुरक्षा विभाग के वैज्ञानिक सुमित कुमार सिंह ने बताया की गेहूं उत्पादक किसान अगर संभव हो तो गेहूं बोने के 25 से 30 दिन के भीतर हाथ से गेहूं की फसल में निराई-गुड़ाई करवाकर या कोनोवीडर या खुरपी के माध्यम से खरपतवार को हटवा दें। अगर किसान रासायनिक नियंत्रण करना चाहते हैं तो वे प्री-इमरजेंस हर्बिसाइड जैसे पेंडिमेथालिन तथा पोस्ट-इमरजेंस हर्बिसाइड जैसे क्लोडिनाफौप, फेनोक्साप्रोप, पिनोएक्साडेन, सलफोसलफ्यूरोन और मेटसुलफ्यूरोंन का प्रयोग फसल की अवस्था और खरपतवार की प्रजाति के अनुसार कर सकते है। उन्होंने बताया की समय पर सिंचाई, प्रबंधन, बुआई में उचित बीज दर, गेहूं की फसल का अच्छा जमाव आदि भी खरपतवार के दबाव को कम करता है।

कृषि वैज्ञानिक सुमित कुमार सिंह।

किसान इसका रखें ध्यान

- किसान गेहूं की फसल में खरपतवार के नियंत्रण को लेकर जब भी हर्बिसाइड्स का छिड़काव करें उस समय गेहूं की फसल में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।
- स्प्रे फ्लैट-फैन नोजल से तथा फसल की सही अवस्था में करना आवश्यक है ताकि अधिकतम नियंत्रण और सुरक्षित फसल की अचछी वृद्धि सुनिश्चित हो सके।

आप खेती किसानी से जुड़ी किसी भी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 9559815510 पर मैसेज करें।

मनुष्य की भावनाएं अभिनय के मूल में, शिक्षा काफी मददगार

डा. राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम में ड्रामा और थियेटर की भी मिली जानकारी

संस. जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ के दौरान छात्रों में अभिनय कौशल, एवं अन्य साफ्ट स्किल के विकास को लेकर भी जागरूकता फैलाया गया। अभिनेत्री सोनल झा ने ड्रामा तथा सिनेमा से संबंधित अभिनय के बारे में छात्रों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि अभिनय में शिक्षा बहुत मदद करती है। मनुष्य की भावनाएं अभिनय के मूल में है। थियेटर से जुड़े अभिनेता जावेद अख्तर ने भी थियेटर की बारीकियों को लेकर छात्रों के साथ चर्चा की। थिएटर आर्टिस्ट एवं नृत्यांगना मोना झा ने छात्र एवं छात्राओं को नृत्य की बारीकियों एवं भाव भंगिमाओं की जानकारी दी।

कुलपति डा. पी एस पांडेय ने भी दीक्षारंभ के दौरान छात्रों से उन्मुख हुए। उन्होंने छात्रों को दीक्षारंभ के महत्व के बारे में बताया और कहा कि दीक्षारम्भ एक ऐसा प्रशिक्षण है जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का असर वे जीवन भर महसूस कर सकेंगे। दीक्षारंभ में सभी नवांगतुक छात्र छात्राओं को उनकी पसंद के मुताबिक विभिन्न क्लबों से भी जोड़ा गया है। सोमवार

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति • जागरण

को स्पोर्ट्स क्लब, लिटरेरी क्लब, कल्चरल क्लब, आर्ट्स एंड क्राफ्ट क्लब एवं अन्य क्लब से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्पोर्ट्स क्लब में शामिल विद्यार्थियों के लिए तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में फुटबाल, वालीबाल, एथलेटिक्स एवं अन्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। दीक्षारंभ कार्यक्रम 13 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। इसका समापन एक वृहत समारोह प्रदक्षिणा से होगा। इसमें सभी विद्यार्थियों को राष्ट्र सेवा और देशभक्ति से संबंधित शपथ भी दिलाई जाएगी।

Dainik Jagran 02-12-2025

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में समारोह का आयोजन

मनुष्य की भावनाएं अभिनय का मूल मंत्र : सोनल झा

- अभिनय कौशल एवं अन्य सॉफ्ट स्किल के विकास पर हुआ कार्यक्रम
- अभिनेता जावेद अख्तर ने थियेटर की बारीकियों को समझाया

पूसा, निज संवाददाता। बिहार की अभिनेत्री सोनल झा ने कहा कि मनुष्य की भावनायें अभिनय का मूलमंत्र है। इसमें शिक्षा का अहम योगदान है। वे डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में नव नामांकित छात्रों के लिए जारी दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान छात्रों में अभिनय कौशल एवं अन्य सॉफ्ट स्किल के विकास पर आयोजित समारोह में बोल रही थी।

थियेटर से जुड़े अभिनेता जावेद अख्तर ने थियेटर की बारीकियों को समझाते हुए कहा कि कला प्रदर्शन चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए कलाकारों को उसके किरदार को समझना पड़ता है। इसमें दिल व दिमाग की एकाग्रता की भूमिका अहम है। थिएटर आर्टिस्ट एवं नृत्यांगना मोना झा ने नृत्य की बारिकियों से अवगत कराया। बाद में कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने दीक्षारंभ के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि बदलते समय में युवाओं में अनुशासन के साथ सभ्यता व संस्कृति

अभिनय कौशल स्किल के उद्घाटन के दौरान डीन डॉ. उषा सिंह व अन्य।

का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। दीक्षारंभ इसी कड़ी का हिस्सा है। जो स्वस्थ रखने के साथ रहन सहन, पठन-पाठन, छुपी प्रतिभा को निखारने समेत कई अन्य कार्यों की जानकारी देता है। दीक्षारंभ छात्रों के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाता है। इसका असर छात्र जीवन भर महसूस करते हैं। इस दौरान छात्रों को विवि से गठित क्लबों से जोड़ा गया। इसमें स्पोर्ट्स क्लब, लिटरेरी क्लब, कल्चरल क्लब, आर्ट्स एंड क्राफ्ट क्लब आदि शामिल है। मिली जानकारी के अनुसार दीक्षारंभ 13 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा।

Hindustan 02-12-2025

दीक्षारंभ के दौरान छात्रों में अभिनय कौशल एवं अन्य सॉफ्ट स्किल के विकास पर जोर

छात्र व छात्राओं के सर्वांगीण विकास में दीक्षारम्भ की महती भूमिका : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के दौरान छात्रों में अभिनय कौशल एवं अन्य साफ्ट स्किल के विकास को लेकर भी प्रयास किये जा रहे हैं. इसी कड़ी में बिहार की अभिनेत्री सोनल झा ने ड्रामा व सिनेमा से संबंधित अभिनय के बारे में छात्रों के साथ संवाद किया. उन्होंने कहा कि अभिनय में शिक्षा बहुत मदद करती है. उन्होंने कहा कि मनुष्य की भावनाएं अभिनय के मूल हैं. थियेटर से जुड़े अभिनेता जावेद अख्तर ने भी थियेटर की बारीकियों को लेकर विद्यार्थियों के साथ चर्चा की. थिएटर आर्टिस्ट एवं नृत्यांगना मोना झा ने छात्र एवं छात्राओं को नृत्य की बारीकियों एवं भाव-भंगिमाओं की जानकारी दी. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने दीक्षारंभ के दौरान क्लास लिया. उन्होंने छात्रों को दीक्षारंभ के महत्व के बारे में बताया.

उद्घाटन सत्र में मौजूद अतिथि.

कहा कि दीक्षारम्भ एक ऐसा प्रशिक्षण है जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में मदद करेगा. उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का असर वे जीवन भर महसूस कर सकेंगे. दीक्षारंभ में सभी नवांगतुक छात्र-छात्राओं को उनकी पसंद के मुताबिक विभिन्न क्लबों से भी जोड़ा गया है. सोमवार को स्पोर्ट्स क्लब, लिटरेरी क्लब, कल्चरल क्लब, आर्ट्स एंड क्राफ्ट क्लब एवं अन्य क्लब से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किये गये. इसमें छात्र- छात्राओं ने भाग लिया. अपनी प्रतिभा प्रदर्शित किये. स्पोर्ट्स क्लब में शामिल विद्यार्थियों के लिए तिरहुत कृषि महाविद्यालय ढोली में फुटबॉल, वालीबाल, एथलेटिक्स एवं अन्य प्रतियोगिताएं की गई. दीक्षारंभ कार्यक्रम 13 दिसंबर तक आयोजित किया जायेगा. जिसका समापन एक वृहत समारोह प्रदक्षिणा से होगा. इसमें सभी विद्यार्थियों को राष्ट्र सेवा व देशभक्ति से संबंधित शपथ भी दिलाई जायेगी. दीक्षारंभ कार्यक्रम के बाद छात्रों का रेगुलर क्लास शुरू होगा. जिसका एकेडमिक कैलेंडर छात्रों को दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान ही उपलब्ध करा दिया गया है.

Prabhat Khabar 02-11-2025

दीक्षारंभ कार्यक्रम • अमरुतचरित दास ने अपनी भावनाओं पर विजय पाने के बारे में विस्तार से बताया

छात्र नौकरी लेने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें, तभी समाज का होगा विकास

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम के नौवें दिन कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने बच्चों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं जीवन में समस्याओं से लड़कर आगे बढ़ने के बारे में बताया। डॉ.पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय के बच्चे अच्छी नौकरी तो पा ही जाते हैं लेकिन वे चाहते है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बड़ी कंपनियों के मालिक बनें। उन्होंने कहा कि छात्र नौकरी लेने वाले नही बल्कि नौकरी देने वाले बनें। उन्होंने कहा कि वे देख सकते हैं कि कई नये छात्र जो आज दर्शक दीर्घा में हैं वे बड़ी कंपनियों के मालिक बनेंगे। उन्होंने स्वामीनारायण संस्था के प्रसिद्ध संत एवं अक्षरधाम मंदिर दिल्ली के प्रभारी साधु अमरूतचरित दास के एक रिकार्डेड लेक्चर को भी सुनाया। कुलपति ने कहा कि उनके विशेष आग्रह पर स्वामी जी ने इस लेक्चर को विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तैयार करके भेजा है। अपने व्याख्यान में साधु अमरुतचरित दास ने अपनी भावनाओं पर विजय पाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने देश और विदेश के प्रसिद्ध लोगों के उदाहरण भी दिए जो साधारण परिस्थितियों से निकलकर और अपनी कमजोरियों पर नियंत्रण करके विशेष बने। उन्होंने कहा कि हम सबको अपने अंदर झांकना चाहिए और ऐसी आदतें जो हमें गुलाम बना रहे हैं उनसे मुक्ति पाने के लिए कड़ा संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा कि असली लड़ाई हम सबके अंदर चलती है जो स्वयं पर विजय पा लेता है वह सर्वगुण संपन्न हो जाता है। उन्होंने कहा कि हम सबका उद्देश्य स्वयं को विकसित और बेहतर बनाना होना चाहिए। उन्होंने छात्रों से अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत को अपने अंदर विकसित करने के लिए उन्हें प्रेरित भी किया।

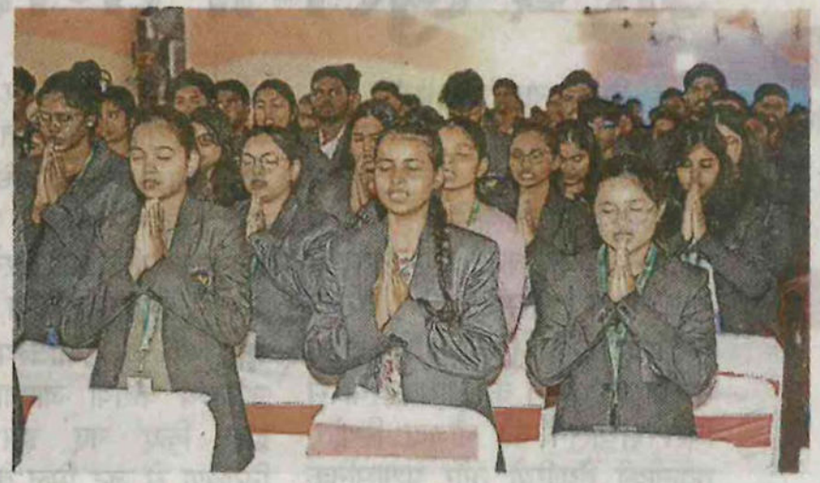

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व मौजूद नव आगंतुक छात्र।

दीक्षारंभ का उद्देश्य छात्रों में चरित्र निर्माण करना

कुलपति ने कहा कि दीक्षारंभ का उद्देश्य छात्रों में चरित्र निर्माण करना है। उन्होंने छात्रों को लर्न, अर्न एवं रिटर्न के बारे में भी बताया और समाज को रिटर्न करने के तरीके पर चर्चा की। कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव ने कहा कि दीक्षारंभ की शुरुआत सर्वे भवन्तु सुखिनः , सर्वे संतु निरामयाः से होती है और इसके बाद वंदे मातरम का गान होता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने छात्रों को इस तरह से तैयार करने की कोशिश कर रहा है कि वे समाज और विश्व को आगे बढ़ाने में सहायक हो सके। फिशरिज कॉलेज ढोली के डीन डॉ. पी पी श्रीवास्तव ने भी छात्रों के साथ संवाद किया और उनके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय के कुलपति से मिलने में छात्रों को बहुत समस्या होती है लेकिन यही एक विश्वविद्यालय है जहां कुलपति स्वयं छात्रों का क्लास लेते हैं और उनके विकास को लेकर हर समय चिंतित रहते हैं। कार्यक्रम का संचालन डा. अंजनी कुमारी ने किया।

कलाकार के लिए लिंग, भूमिका व सीमाएं बाधक नहीं : प्रो. जावेद

मंगलवार को कला का प्रदर्शन कर छात्रों को सिखाते कलाकार।

पूसा, निज संवाददाता। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक व थियेटर के अनुभवी कलाकार प्रो. जावेद अख्तर खान ने कहा कि एक सच्चे कलाकार के लिए लिंग, भूमिका या परंपरागत सीमाएं कभी मायने नहीं रखती। उसका उद्देश्य अपने किरदार में पूर्ण समर्पण के साथ उतरना होता है। उन्होंने थियेटर को खेल बताते हुए कहा कि मंच पर जाने से पूर्व कलाकार को अपने पात्र में पूरी तरह डूबना जरूरी है।

तभी वह अपनी कला का सही प्रदर्शन कर सकेगा। वे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान छात्रों को कला, व्यक्तित्व विकास और आत्म अभिव्यक्ति के महत्व पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ अनुशासन, आत्मविश्वास व सर्वांगीण विकास का बेहतर प्लेटफार्म है। बिहार की चर्चित अभिनेत्री सोनल झा ने अभिनय को कौशल के साथ मनुष्य की भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति बताया। कथक की चर्चित कलाकार मोना झा ने कहा कि नाटक, नृत्य व रचनात्मक अभिव्यक्ति छात्रों में आत्मविश्वास को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। यह तनाव को कम करने व स्वयं को बेहतर ढ़ंग से प्रस्तुत करने में मदद करता है। इस दौरान कलाकारों ने गतिविधि के माध्यम से छात्रों को नृत्य व नाटक की तकनीकों से अवगत कराया। मौके पर कुलपति डॉ.पीएस पांडेय समेत अन्य मौजूद थे। धन्यवाद डॉ. शंकर झा ने दिया।

Dainik Jagran 03-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 7 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
03 दिसंबर	25.4	12.0
04 दिसंबर	25.4	12.5
	दरभंगा	
03 दिसंबर	25.4	12.5
04 दिसंबर	25.0	12.5
	पटना	
03 दिसंबर	26.2	13.8
04 दिसंबर	26.2	13.8

डिग्री सेल्सियस में

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व जीवन की समस्या विषय पर कार्यक्रम आयोजित

'लर्न, अर्न व रिटर्न का सिस्टम अपनाने की छात्रों को जरूरत'

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि,पूसा के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा दीक्षारंभ का उद्देश्य छात्रों में चरित्र निर्माण करना है। जिससे वे परिवार के साथ समाज व देश के प्रति समर्पित भाव से कार्य करें।उन्होंने लर्न, अर्न और रिटर्न को समझाते हुए कहा कि छात्र शिक्षा ग्रहण कर जो कुछ अर्जित करते हैं, उसे समाज व संस्थान को वापस भी करना चाहिए। वे मंगलवार को विवि में जारी दीक्षारंभ समारोह के मौके पर बच्चों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता व जीवन की समस्या विषय पर चर्चा कर रहे थे

। उन्होंने कहा कि छात्रों को नौकरी से अधिक कंपनियों का मालिक बनने की ओर ध्यान देने की जरूरत है। इस दौरान स्वामी नारायण संस्था के प्रसिद्ध संत एवं अक्षरधाम मंदिर, दिल्ली के प्रभारी साधु अमरूत चरित दास के रिकार्ड व्याख्यान सुनाया गया। कुलसचिव डॉ.पीके प्रणव ने कहा कि विवि अपने छात्रों को इस तरह तैयार करने की कोशिश कर रहा है, जो समाज और विश्व को आगे बढ़ाने में सहायक हो। डीन डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने छात्रों के साथ सीधा संवाद किया। संचालन डॉ.कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद डॉ.ऋतंभरा ने किया।

विवि में आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान प्रार्थना करते वीसी, डीन व कुलसचिव।

छात्रों ने खाद्य प्रसंस्करण का कार्य सीखा

पूसा। कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, पूसा के बी.टेक (फूड टेक्नोलॉजी) के 38 छात्रों ने मंगलवार को वैशाली बेकरी, मुजफ्फरपुर एवं कॉग्नोस्मेड फूड टेस्टिंग लेबोरेटरी, पटना का भ्रमण किया। इस दौरान छात्रों ने खाद्य प्रसंस्करण और गुणवत्ता परीक्षण की जानकारी ली। सहायक प्राध्यापक डॉ.पिंटू चौधरी व डॉ.निकिता मिश्रा के मार्गदर्शन में आयोजित भ्रमण कार्यक्रम में छात्रों ने बेकरी उत्पाद निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा। जिसमें कच्चे माल का चयन से लेकर औद्योगिक मशीनों के उपयोग, उत्पादन दक्षता, स्वच्छता मानकों, गुणवत्ता नियंत्रण एवं बाजार आपूर्ति प्रबंधन तक शामिल रहा। वहीं कॉग्नोस्मेड फूड टेस्टिंग लेबोरेटरी, पटना में छात्रों ने खाद्य गुणवत्ता और सुरक्षा मूल्यांकन की वैज्ञानिक एवं नियामकीय प्रक्रियाओं का प्रायोगिक जानकारी से रूबरू हुए। इस दौरान भौतिक रासायनिक विश्लेषण, सूक्ष्म जीवीय परीक्षण, पोषण प्रोफाइलिंग और मिलावट का पता लगाने की विभिन्न उन्नत परीक्षण विधियों की जानकारी ली।

Hindustan 03-12-2025

कृषि विवि में पशु चिकित्सालय खुलने की उठ रही मांग

पूसा, निज संवाददाता। पशुपालन ग्रामीण आजीविका व राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख श्रोत है। राज्य की कुल आबादी का करीब 35 प्रतिशत किसान इससे जुड़े हैं। बदलते समय में समुचित देखभाल व विस्तार पशुपालकों की समस्या बन कर उभर रही है। इसमें पशु चिकित्सकों की कमी मुख्य समस्याओं में शामिल है। पूसा विवि में पशु चिकित्सालय खुलने की मांग जोर पकड़ रही है। विभागीय अधिकारियों की मानें तो अकेले समस्तीपुर जिले में कुल 38 पशु अस्पताल हैं। जिसके लिए महज 22 पशु चिकित्सा पदाधिकारी कार्यरत हैं। एक एक पदाधिकारी के पास 2 से 3 प्रखंडों का प्रभार है। जबकि प्रखंड में पशु चिकित्सा पदाधिकारी व भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी के अलग अलग पद हैं। ऐसे हालात पूरे राज्य के बताये गये हैं। पशुपालकों की समस्या को ऐसे हालातों में आसानी से समझा जा सकता है। बुद्धिजीवियों व पशुपालकों का बड़ा वर्ग इसके विकास व समस्याओं के निदान के लिए एक महाविद्यालय को खोलना समय की मांग बताते हैं। यह रोजगार विस्तार के साथ पशुपालन से जुड़े कार्यों को गति दे सकेगा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में वर्षों से पशु उत्पादन शोध संस्थान कार्यरत है। जहां दूध उत्पादन के अलावा पशुओं के विस्तार व उससे जुड़े कार्य हो रहे हैं। इस संस्था का विस्तार कर पशु चिकित्सा महाविद्यालय में परिणत कर दिया जाय तो पशु उत्पादन, शोध और चिकित्सा के क्षेत्र में राज्य खासकर उत्तर बिहार का क्षेत्र नई उड़ान भरेगा। यह पशुपालन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर के साथ बेहतर पशु चिकित्सक, गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण व अन्य सुविधा उपलब्ध करा संजीवनी का कार्य करेगा।

विवि में वर्षों से कार्यरत पशु उत्पादन शोध संस्थान।

करीब 5 हजार पशुओं पर एक पशु चिकित्सक कार्यरत

पूसा, ताजपुर एवं समस्तीपुर के प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी सह भ्रमणशील पशु चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. मनीष कुमार ने बताया कि वर्ष 2019 की पशुगणना के अनुसार राज्य में गायों की संख्या 1.53 करोड़, भैंसों की 77 लाख, बकरियों की 1.28 करोड़, घोड़ों की 32 हजार और गधों की 11 हजार है। जबकि पशु चिकित्सक महज 13 सौ हैं। ऐसे में करीब 5 हजार पशुओं पर एक पशु चिकित्सक कार्यरत हैं। पूसा में एक पशु चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना करके इस अंतर को पाटा जा सकता है।

क्या होगा लाभ

- पशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार व उत्पादकता बढ़ेगा।
- कॉलेज में पशुपालन की शिक्षा और प्रशिक्षण से पशुपालकों को अपनी प्रथाओं में सुधार का मौका मिलेगा।
- बेहतर पशु चिकित्सा व शिक्षा से पशु उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार व उत्पादकों को बेहतर लाभ मिलेगा।
- रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। जिससे सबसे अधिक युवाओं को कैरियर बनाने में मदद मिलेगी। पशु चिकित्सा शिक्षा और सेवाओं में निवेश करके, राज्य अपने पशुपालकों का समर्थन कर सकती है।

Dainik Jagran 03-12-2025

मशरूम उत्पादन को उद्यमिता का रूप देने की जरूरत

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के प्रांगण में मुख्य प्रशिक्षकों के लिए मशरूम स्पॉन तकनीक विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. जिसकी अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि मशरूम उत्पादन व्यवसाय को उद्यमिता का रूप देने की जरूरत है. वर्ष 2010 में बिहार मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में आठवां से 10वां स्थान पर था. जबकि फिलवक्त मशरूम उत्पादन में बिहार नंबर वन बनकर देश एवं विदेश में परचम लहरा रहा है. परंपरागत समय में सघन खेती के दौरान अंधाधुंध रासायनिक खाद का प्रयोग किया गया. जिससे राज्य का कुपोषण दर बढ़ गया.

फसल के उत्पादों में वैल्यू एडिशन करने की आवश्यकता है. जिससे किसानों को अपने उत्पादों के बदले समुचित लाभ प्राप्त हो सके. मशरूम के ज्यादातर प्रभेदों पर जलवायु परिवर्तन का असर बहुत ही नगण्य ही पड़ता है. जिससे बिहार के विभिन्न जिलों में सालों भर मशरुम की खेती संभव हो सका है. व्यवसाय में जोखिम उठाने पर ही आमदनी की राह प्रशस्त होता है. आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए मशरूम विशेषज्ञ डॉ दयाराम ने कि विवि के मशरूम उत्पादन तकनीक दमदार है. राज्य से कुपोषण मिटाते हुए रोजगार सृजन के लिए वैज्ञानिक प्रयासरत है. संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक सह केंद्र प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद ने किया. मौके पर मुजफ्फरपुर खबरा से तुलसी स्पॉन लैब कर मशरूम स्पॉन उत्पादक रमा कुमारी पांडेय, वैशाली से विवेक कुमार, केशव कुमार, ओमी वर्मा, सुभाष, मुकेश, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे.

दीप जलाकर प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन करते निदेशक अनुसंधान.

Prabhat Khabar 03-12-2025

आयोजन. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में दीक्षारंभ के नौवें दिन बोले कुलपति

जीवन की समस्याओं से लड़कर आगे बढ़ने की जरूरत : कुलपति

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ के नौवें दिन कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने छात्र-छात्राओं को भावनात्मक बुद्धिमत्ता व जीवन में समस्याओं से लड़कर आगे बढ़ने के बारे में बताया. डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय के बच्चे के अच्छी नौकरी पा ही जाते हैं. लेकिन वे चाहते हैं कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बड़ी कंपनियों के मालिक बनें. उन्होंने कहा कि वे देख सकते हैं कि कई नये छात्र जो आज दर्शक दीर्घा में हैं वे बड़ी कंपनियों के मालिक बनेंगे. उन्होंने स्वामीनारायण संस्था के प्रसिद्ध संत एवं अक्षरधाम मंदिर दिल्ली

दीक्षारंभ में मौजूद कुलपति व अन्य.

के प्रभारी साधु अमरुत चरित दास के एक रिकार्डेड लेक्चर को भी सुनाया. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि उनके विशेष आग्रह पर स्वामी जी ने इस लेक्चर को विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तैयार करके भेजा है.

अपने व्याख्यान में साधु अमरुत चरित दास ने अपनी भावनाओं पर विजय पाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने देश व विदेश के प्रसिद्ध लोगों के उदाहरण भी दिये जो साधारण परिस्थितियों से निकलकर व अपनी कमजोरियों पर नियंत्रण करके विशेष बने. उन्होंने कहा कि हम सबको अपने अंदर झांकना चाहिए. ऐसी आदतें जो हमें गुलाम बना रहे हैं उनसे मुक्ति पाने के लिए कड़ा संघर्ष करना चाहिए. उन्होंने कहा कि असली लड़ाई हम सबके अंदर चलती है जो स्वयं पर विजय पा लेता है वह सर्वगुण संपन्न हो जाता है. कुलपति ने कहा कि हम सबका उद्देश्य स्वयं को विकसित और बेहतर बनाना होना चाहिए. उन्होंने छात्रों से अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने को भी प्रेरित किया. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि दीक्षारंभ का उद्देश्य छात्रों में चरित्र निर्माण करना है. उन्होंने छात्रों से लर्न अर्न एवं रिटर्न के बारे में भी बताया. समाज को रिटर्न करने के तरीके पर चर्चा की. कुलसचिव डॉ पीके प्रणव ने कहा कि दीक्षारंभ की शुरुआत सर्वे भवन्तु सुखिनः , सर्वे संतु निरामयाः से होती है. इसके बाद वंदे मातरम् का गान होता है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने छात्रों को इस तरह से तैयार करने की कोशिश कर रहा है कि वे समाज और विश्व को आगे बढ़ाने में सहायक हो सके. फिशरिज कालेज ढोली के डीन डॉ पीपी श्रीवास्तव ने भी छात्रों के साथ संवाद किया. उनके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिये. डॉ श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय के कुलपति से मिलने में छात्रों को बहुत समस्या होती है. लेकिन यही एक विश्वविद्यलय है जहां कुलपति स्वयं छात्रों का क्लास लेते हैं. उनके विकास को लेकर हर समय चिंतित रहते हैं. संचालन डा कुमारी अंजनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ रितंभरा सिंह ने किया.

Prabhat Khabar 03-12-2025

बीटेक (फूड टेक्नोलॉजी) के 38 छात्रों के लिए एक व्यावहारिक औद्योगिक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित

पेशेवर क्षमता को सुदृढ़ करने की जरूरत: मिश्रा

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

छात्रों के साथ वैज्ञानिक.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय पूसा के बीटेक (फूड टेक्नोलॉजी) के 38 छात्रों के लिए एक व्यावहारिक औद्योगिक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किया गया. इस भ्रमण के अंतर्गत छात्रों ने दो प्रमुख संस्थानों वैशाली बेकरी, मुजफ्फरपुर और कॉग्नोस्मेड फूड टेस्टिंग लेबोरेटरी, पटना का भ्रमण किया. इसका उद्देश्य छात्रों को खाद्य प्रसंस्करण और गुणवत्ता परीक्षण के वास्तविक औद्योगिक वातावरण से अवगत कराना था. यह भ्रमण डॉ. पिंटू चौधरी (सहायक प्रोफेसर) व डॉ. निकिता मिश्रा के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. वैशाली बेकरी में छात्रों ने बेकरी उत्पाद निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा. जिसमें कच्चे माल का चयन, आटे की तैयारी एवं किण्वन, आकार निर्माण, बेकिंग, ठंडा करना, पैकेजिंग और भंडारण जैसी सभी चरण शामिल थे. साथ ही छात्रों ने औद्योगिक मशीनों के उपयोग, उत्पादन दक्षता, स्वच्छता मानकों, गुणवत्ता नियंत्रण तथा बाजार आपूर्ति प्रबंधन के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की. कॉग्नोस्मेड फूड टेस्टिंग लेबोरेटरी, पटना में छात्रों ने खाद्य गुणवत्ता और सुरक्षा मूल्यांकन की वैज्ञानिक एवं नियामकीय प्रक्रियाओं का प्रायोगिक ज्ञान अर्जित किया. उन्हें भौतिक-रासायनिक विश्लेषण, सूक्ष्मजीवीय परीक्षण, पोषण प्रोफाइलिंग और मिलावट का पता लगाने की विभिन्न उन्नत परीक्षण विधियों से परिचित कराया गया. छात्रों ने आधुनिक प्रयोगशाला उपकरणों जैसे स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, एचपीएलसी यूनिट और माइक्रोबायोलॉजिकल एनालिसिस सिस्टम के संचालन को प्रत्यक्ष रूप से देखा. साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मानकों के अनुपालन की आवश्यकता पर भी विस्तृत जानकारी प्राप्त की. औद्योगिक उत्पादन इकाई और परीक्षण प्रयोगशाला के इस संयुक्त एक्सपोजर ने छात्रों के सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभव से जोड़ा तथा खाद्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनकी तकनीकी दक्षता, उद्योग-उन्मुख समझ और पेशेवर क्षमता को अत्यधिक सुदृढ़ किया. दौरे का नेतृत्व कर रहे डॉ पिंटू चौधरी और डॉ निकिता मिश्रा ने बताया कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण छात्रों में व्यावहारिक ज्ञान, अनुसंधान रुचि और खाद्य उद्योग की समझ विकसित करने में अत्यंत सहायक होते हैं. उन्होंने छात्रों को करियर अवसरों, आधुनिक तकनीकों और उद्योग की मांगों के बारे में भी मार्गदर्शन दिया.

Prabhat Khabar 03-12-2025

आयोजन • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जयंती पर केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाया गया

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पर चर्चा, भावभीनी श्रद्धांजलि दी

भास्कर न्यूज | पूसा

भारत के पहले कृषि मंत्री एवं प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जन्मदिवस के दिन पूसा में स्थापित हुए डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने बुधवार को काफी हर्ष उल्लास के माहौल में अपना स्थापना दिवस समारोह मनाया। इस अवसर पर विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय, कुलसचिव, समेत विवि के विभिन्न डीन, डायरेक्टर और वैज्ञानिकों ने सर्वप्रथम विवि परिसर स्थित डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। स्थापना दिवस समारोह को लेकर विवि परिसर में दो दिवसीय स्नातकोत्तर छात्रों के लिए एक बड़ा सम्मेलन तथा पूर्ववर्ती छात्रों के लिए एक मिलन समारोह कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के सौ से अधिक पूर्ववर्ती छात्र अपने परिवार के साथ सम्मिलित हुए। समारोह में बोलते हुए कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में पहली बार पूर्व छात्रों के लिए मिलन समारोह एवं पीजी स्टूडेंट के लिए कानक्लेव आयोजित किया जा रहा है ताकि वर्तमान और पूर्व छात्र एक दूसरे के साथ घुल मिल सकें। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का आयोजन विशेष रूप से भारत के पहले राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के जन्म दिवस पर किया जा रहा है क्योंकि आज के ही दिन इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इतना ही नहीं आज के ही दिन कृषि शिक्षा दिवस भी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों ने देश और विदेश में प्रतिष्ठा अर्जित की है। वे चाहते है कि वर्तमान छात्र उनसे प्रेरणा लें और इस बात को महसूस करें कि उनका भविष्य उज्जवल है। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर एवं नेचुरल फार्मिंग के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना हो रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय तीन वर्षों में बावनवें रैंक से चौदहवें रैंक पर पहुंच गया है।

विवि की लाइब्रेरी पूरी तरह से डिजिटल और ऑटोमेटेड हो गई है। अब छात्र कहीं से भी लाइब्रेरी की सभी सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने छात्रों को लर्न, अर्न एवं रिटर्न के लिए प्रेरित करता है। आज विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र विश्वविद्यालय में रिटर्न के लिए आये हैं जो गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्र देश के विभिन्न राज्यों और विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं। इसलिए पूर्ववर्ती छात्र संघ का विभिन्न राज्यों में और विदेशों में भी जल्द ही चैप्टर बनाया जायेगा। कुलपति ने पूसा के इतिहास के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और कहा कि यह क्षेत्र कृषि शिक्षा का तीर्थ स्थल है। विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और पूर्व कुलपति डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी ने कहा कि इतने साल बीत गए लेकिन किसी ने पूर्ववर्ती छात्रों के बारे में ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कुलपति डॉ. पांडेय को इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस अवसर पर विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपए दान देने की घोषणा भी की। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सीईओ एवं महानिदेशक कल्याण कुमार ने कहा कि जब उन्होंने इस विश्वविद्यालय में नामांकन लिया था तो वे भी अपने भविष्य को लेकर सशंकित थे क्योंकि वे एक गांव के साधारण किसान परिवार से आये थे। लेकिन यहां के गुरुजनों ने उन्हें जिस तरह ढाला कि वे आज एक प्रतिष्ठित बैंक के प्रमुख हैं। झारखंड से पहुंचे जटाशंकर चौधरी ने बताया की उन्होंने सफलता कैसे प्राप्त की और इस मुकाम तक कैसे पहुंचे। उन्होंने कहा कि यहां आकर लग रहा है कि वे अपने पुराने घर में आ गए हैं। कैमूर जिला के वर्तमान जिलाधिकारी और विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र सुनील कुमार ने अपनी पढ़ाई के दौरान की कहानियों का जिक्र किया और बताया कि कैसे वर्तमान में भी वे इस विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा का उपयोग कैमूर जिले के विकास के लिए कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेहतर विकास के लिए उन्हें राष्ट्रपति से हाल ही में सम्मान भी प्राप्त हुआ है। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय ने अपने सभी पूर्ववर्ती छात्रों को और उनके परिजनों को अंगवस्त्र व मेडल देकर सम्मानित भी किया। इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्रों के सम्मान में एलुमिनाई पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

विवि के पूर्व छात्रों ने देश और विदेश में अर्जित की है प्रतिष्ठा : कुलपति

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलाधिपति और मौजूद वैज्ञानिक व छात्र।

पीजी स्टूडेंट कानक्लेव का आयोजन विवि का एक अच्छा प्रयास : कुलाधिपति

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. पीएल गौतम ने सबसे अंत में अपना संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि छात्रों को पूर्ववर्ती छात्रों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पीजी स्टूडेंट कानक्लेव का आयोजन विवि का एक अच्छा प्रयास है। इससे छात्रों के शोध को एक उच्च स्तरीय स्टेज मिलेगा। उन्होंने शोध की चर्चा करते हुए कहा कि शोध में पब्लिकेशन को लेकर की कुछ समस्या आ गई है। ऐसे में पब्लिकेशन को लेकर अनिवार्य बनाने हेतु फिर से विचार करने की आवश्यकता है ताकि वैज्ञानिक सिर्फ प्रोमोशन के लिए शोध न करें बल्कि अपने जुनून और नवोन्मेषी अन्वेषण के लिए शोध करें। उन्होंने कहा कि कुलपति ने पिछले तीन वर्षों में शिक्षा,अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। विश्वविद्यालय के दीक्षारंभ कार्यक्रम को पूरे देश में लागू कर दिया गया है जोकि अपने आप में एक मिसाल है। उन्होंने कहा की इस समारोह में मौजूद विवि के पूर्व छात्रों से नए छात्र बातचीत कर अनुभवों की जानकारी लेंगे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डा. अंजनी कुमारी एवं धन्यवाद ज्ञापन उपकुलसचिव डॉ. सतीश कुमार ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत वंदे मातरम् से हुई और समापन राष्ट्र गान से हुआ। मौके पर डीन डॉ. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, स्कूल आफ़ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. रामदत्त, लाइब्रेरियन डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी, छात्र तथा पूर्ववर्ती छात्रों एवं उनके परिजन मौजूद थे।

छात्रों को शोध के लिए मिलेगा उच्चस्तरीय स्टेज

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में स्थापना दिवस पर पूर्ववर्ती छात्र मिलन समारोह का आयोजन

संस. जागरण ● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में स्थापना दिवस के अवसर पर दो दिवसीय प्रथम पूर्ववर्ती छात्र मिलन समारोह एवं स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी का आयोजन किया। समारोह में विश्वविद्यालय के 100 से अधिक पूर्ववर्ती छात्र अपने परिवार के साथ सम्मिलित हुए। विश्वविद्यालय में सभी पूर्ववर्ती छात्रों एवं उनके परिजनों को अंगवस्त्र और मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्रों के सम्मान में एलुमनाई पुस्तक का विमोचन किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में पहली बार पूर्ववर्ती छात्रों के लिए मिलन समारोह का आयोजन किया गया है। इसके साथ ही पीजी स्टूडेंट कान्क्लेव भी आयोजित हुई। इससे वर्तमान और पूर्ववर्ती छात्र एक दूसरे के साथ घुल मिल सके। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के बारे में भी विस्तार से जानकारी देते हुए डिजिटल एग्रीकल्चर एवं नेचुरल फार्मिंग के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना हो रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय तीन वर्षों में 52वें रैंक से 14वें रैंक पर पहुंच गया है। लाइब्रेरी पूरी तरह डिजिटल और आटोमेटेड हो गई है। अब छात्र कहीं से भी लाइब्रेरी की सभी सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का आयोजन विशेष रूप से भारत के पहले राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के जन्म दिवस पर किया जा रहा है क्योंकि यह विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस भी है और इसी दिन कृषि शिक्षा दिवस भी है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों ने देश और विदेश में प्रतिष्ठा अर्जित की है। वे चाहते है कि वर्तमान छात्र उनसे प्रेरणा लें और इस बात को महसूस करें कि उनका भविष्य उज्जवल है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने छात्रों को लर्न, अर्न एवं रिटर्न के लिए प्रेरित करता है। आज विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र विश्वविद्यालय में रिटर्न के लिए आये हैं जो गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्र देश के विभिन्न राज्यों और विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं। इसलिए पूर्ववर्ती छात्र संघ का विभिन्न राज्यों और विदेशों में भी जल्द ही चैप्टर बनाया जाएगा। कुलपति ने पूसा के इतिहास के बारे में भी विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि यह क्षेत्र कृषि शिक्षा का तीर्थ स्थल है। मंच संचालन डा. अंजनी कुमारी सिंह ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन उप कुलसचिव डा. सतीश कुमार ने किया। मौके पर डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डा. रामदत्त, लाइब्रेरियन डा. राकेश मणि शर्मा, डा. कुमार राज्यवर्धन आदि उपस्थित रहे।

- विश्वविद्यालय तीन वर्षों में 52वें से 14वें रैंक पर पहुंचा
- पीजी स्टूडेंट कान्क्लेव का भी किया गया आयोजन

विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा का किया जा रहा उपयोग

कैमूर जिला के वर्तमान जिलाधिकारी और विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र सुनील कुमार ने अपनी पढ़ाई के दौरान की कहानियों का जिक्र किया और बताया कि कैसे वर्तमान में भी वे इस विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा का उपयोग कैमूर जिले के विकास के लिए कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेहतर विकास के लिए उन्हें राष्ट्रपति से हाल ही में सम्मान भी प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि मैं आज जो कुछ भी हूं इस विश्वविद्यालय और शिक्षकों के आशीर्वाद से हूं।

पूर्व कुलपति ने तीन लाख दान देने की घोषणा

विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और पूर्व कुलपति डा. गोपाल जी त्रिवेदी ने कहा कि इतने साल बीत गए लेकिन किसी ने पूर्ववर्ती छात्रों के बारे में ध्यान नहीं दिया था। उन्होंने इस अवसर पर विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपये दान देने की भी घोषणा की। सेंट्रल बैंक आफ इंडिया के सीइओ एवं महानिदेशक कल्याण कुमार ने कहा कि जब उन्होंने इस विश्वविद्यालय में नामांकन लिया था तो वे भी अपने भविष्य को लेकर सशंकित थे, क्योंकि वे एक गांव के साधारण किसान परिवार से आये थे। लेकिन यहां के गुरुजनों ने उन्हें जिस तरह ढाला कि वे आज एक प्रतिष्ठित बैंक के प्रमुख हैं। झारखंड के जटाशंकर चौधरी ने बताया कि यहां आकर लग रहा है कि वे अपने पुराने घर में आ गए हैं।

पीजी स्टूडेंट कान्क्लेव से मिलेगा उच्च स्तरीय स्टेज

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. पीएल गौतम ने कहा कि छात्रों को पूर्ववर्ती छात्रों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पीजी स्टूडेंट कान्क्लेव का आयोजन एक अच्छा प्रयास है। इससे छात्रों के शोध को एक उच्च स्तरीय स्टेज मिलेगा। उन्होंने शोध की चर्चा करते हुए कहा कि शोध में पब्लिकेशन को लेकर कई तरह की समस्या आ गई है। ऐसे में पब्लिकेशन को लेकर अनिवार्य बनाने पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है ताकि सिर्फ प्रोमोशन के लिए लोग शोध न करें बल्कि अपने जुनून और नवोन्मेषी अन्वेषण के लिए शोध करें। विश्वविद्यालय के दीक्षारंभ कार्यक्रम को पूरे देश में लागू कर दिया गया है जोकि अपने आप में एक मिसाल है।

कार्यक्रम को संबोधित करते कालेज के सचिव ● जागरण

लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी राजेंद्र बाबू के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : मौलाना मजहरुल हक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डा. राजेंद्र प्रसाद की जयंती श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में संगोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें छात्र- छात्राओं एवं शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत डा. राजेंद्र प्रसाद की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर हुई। प्राचार्य डा. अंजुम वारिस ने कहा कि डा. राजेंद्र प्रसाद का संपूर्ण जीवन सादगी, ईमानदारी और राष्ट्र सेवा का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने छात्रों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। महाविद्यालय के सचिव मो. अबू सईद ने कहा कि डा. राजेंद्र प्रसाद भारतीय लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी थे। उन्होंने स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत आधार दिया। अंत में सभी उपस्थित लोगों ने उनके आदर्शों व विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। मौके पर डा. अशोक कुमार अकेला, रंजना कुमारी, राहत करीम, डा. आशीष कुमार, स्वाति कुमारी, विकास कुमार, डा. सेराज अहमद, डा. हरजिन्दर कौर, शमीमा फरहत, मो. नजीर, मो. फैयाज, मो. दानिश, जुल्फिकार आलम, राम शंकर राय, रंजन कुमार, अवधेश कुमार, प्रमोद कुमार सिंह उपस्थित थे।

Dainik Jagran 04-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 7 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
04 दिसंबर	25.4	12.0
05 दिसंबर	25.4	12.5
दरभंगा		
04 दिसंबर	25.4	12.5
05 दिसंबर	25.0	12.5
पटना		
04 दिसंबर	26.2	13.8
05 दिसंबर	26.2	13.8

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 04-12-2025

हिन्दुस्तान 4/12/25 पेज 5

विवि में स्थापना दिवस पर दो दिवसीय पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन व पीजी छात्रों की संगोष्ठी शुरू

प्रतिबद्धता और समर्पण भाव से रिसर्च होगा सफल : कुलाधिपति

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम ने कहा कि रिसर्च जुनून है। यह पूरी प्रतिबद्धता व समर्पण भाव से सफल होता है। बदलते समय में नवोन्मेषी अन्वेषण करने की जरूरत है। इसमें नई व आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखना समय की मांग है। यह ज्ञान को बढ़ाने के साथ लक्ष्य प्राप्ति में अहम भूमिका निभाता है। वे बुधवार को विवि में स्थापना दिवस पर आयोजित दो दिवसीय पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन एवं पीजी छात्रों की संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। उन्होंने नये छात्रों से कहा कि वे पूर्ववर्ती छात्रों से प्रेरणा लें एवं लक्ष्य निर्धारित कर लगन व मेहनत से कार्यों को गति दें। उन्होंने पीजी छात्रों की संगोष्ठी से बेहतर परिणाम की संभावना जताई।

कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने देशरत्न डॉ.राजेन्द्र प्रसाद जी को नमन करते हुए कहा कि आज ही पूरे देश में राष्ट्रीय कृषि शिक्षा दिवस भी मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कृषि शिक्षा व शोध की जननी पूसा की 240 वर्षों का इतिहास है। पीजी एडुकेशन भी वर्ष 1923 में पूसा से शुरू हुई थी। उन्होंने कहा कि विवि से जुड़े लोगों ने इसे सींचकर वट वृक्ष का रूप दिया है। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती छात्रों ने देश-विदेश में विवि का मान बढ़ाया है। यह क्षेत्र कृषि शिक्षा का तीर्थ स्थल है। उन्होंने विवि की उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए बेहतर रैंकिंग, डिजिटल एग्रीकल्चर एवं नेचुरल फार्मिंग के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों पर विस्तार से चर्चा की। लाइब्रेरी पूरी तरह डिजिटल और आटोमेटेड हो गई है। अब छात्र कहीं से भी लाइब्रेरी की सुविधाएं ले सकते हैं। पूर्व कुलपति डॉ.गोपालजी त्रिवेदी ने शोध को और धारदार बनाने पर जोर देते हुए विवि को 3 लाख रुपये का सहयोग देने का आह्वान किया।

विवि के स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन करते कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम, कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय व अन्य।

पूर्ववर्ती छात्रों ने अपने अनुभव को किया साझा

विवि के पूर्ववर्ती छात्र एवं वर्तमान में सेन्ट्रल बैंक के एमडी व सीईओ कल्याण कुमार ने कहा विवि ने कई प्रतिभावान छात्रों को निखार कर बड़े पदों पर बैठाया है। वे भी सामान्य परिवार से निकलकर यहां तक पहुंच सके हैं। इसमें विवि का अहम योगदान है। कैमूर के डीएम सुनील कुमार ने कहा कि विवि ने उनके सपनों को साकार किया है। उनके कार्यों के लिए उन्हें राष्ट्रपति से सम्मान पाने का गौरव भी पाया। सेवानिवृत आईएएस जटाशंकर चौधरी ने अपने जीवन के कटु अनुभव, छात्र जीवन में सोच में होने वाले परिवर्तन पर विस्तार से चर्चा करते हुए छात्रो से सकारात्मक सोच के साथ लक्ष्य हासिल करने पर बल दिया। मौके पर प्रबंधन बोर्ड के सदस्य जय कृष्ण झा व भुवनेश्वर प्रसाद ने भी संबोधित किया। विषय प्रवेश डीन डॉ.मयंक राय, स्वागत डीन डॉ.पीपी सिंह, संचालन डॉ.कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद उप कुलसचिव डॉ.सतीश कुमार सिंह ने दिया। समारोह की शुरूआत दीप प्रज्जवलित कर व विवि कुलगीत से की गई। इस दौरान छात्राओं ने बंदे मातरम एवं पं. सत्यनारायण मिश्र ने स्थापना दिवस पर गीत प्रस्तुत किया।

विवि में मनाई डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जयंती

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में बुधवार को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद की जयंती मनायी गयी। इस दौरान कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम, कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय, विवि के डीन-डायरेक्टर व वैज्ञानिकों ने विवि में लगी आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। बाद में दीप प्रज्जवलित कर प्रथम राष्ट्रपति को याद किया। मौके पर वक्ताओं ने उनकी प्रतिभा व देशहित में उनके कार्यों को याद करते हुए युवाओं को प्रेरणा लेने पर बल दिया।

हिन्दुस्तान 4/12/25 पेज 5

जुनून व नवोन्मेषी अन्वेषण को शोध की जरूरत : चांसलर

संबोधित करते चांसलर डॉ पीएल गौतम.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में स्थापना दिवस पर दो दिवसीय प्रथम पूर्ववर्ती छात्र मिलन समारोह व स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी हुई. केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम ने कहा कि वर्तमान में अध्ययनरत छात्रों को पूर्ववर्ती छात्रों से प्रेरणा लेनी चाहिए. कहा कि शोध में पब्लिकेशन को लेकर की तरह की समस्या आ गई है. ऐसे में पब्लिकेशन को लेकर अनिवार्य बनाने पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है. ताकि सिर्फ प्रोमोशन के लिए लोग शोध न करें बल्कि अपने जुनून और नवोन्मेषी अन्वेषण के लिए शोध करें. राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र व पूर्व कुलपति डॉ गोपालजी त्रिवेदी ने कहा कि इतने साल बीत गये लेकिन किसी ने पूर्ववर्ती छात्रों के बारे में ध्यान नहीं दिया था. उन्होंने विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपए दान देने की भी घोषणा की.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सीइओ व महानिदेशक कल्याण कुमार ने कहा कि जब उन्होंने इस विश्वविद्यालय में नामांकन लिया था तो वे भी अपने भविष्य को लेकर सशंकित थे. लेकिन यहां के गुरुजनों ने उन्हें जिस तरह ढाला कि वे आज एक प्रतिष्ठित बैंक के प्रमुख हैं. झारखंड से जटाशंकर चौधरी ने बताया कि कैसे उन्होंने सफलता प्राप्त की. कैमूर जिला के जिलाधिकारी व विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र सुनील कुमार ने अपनी पढ़ाई के दौरान की कहानियों का जिक्र किया. सभी पूर्ववर्ती छात्रों को और उनके परिजनों को अंगवस्त्र और मेडल देकर सम्मानित किया गया. इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्रों के सम्मान में एलुमनाई पुस्तक का भी विमोचन किया गया. संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन उप कुलसचिव डॉ सतीश कुमार ने किया. डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, डॉ उषा सिंह, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ रामदत्त, लाइब्रेरियन डॉ राकेश मणि शर्मा, पशु चिकित्सा पदाधिकारी डॉ संजीव कुमार ठाकुर, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि थे.

Prabhat Khabar 04-12-2025

पूसा के क्षेत्र कृषि शिक्षा का है तीर्थ स्थल : कुलपति

सभागार में मौजूद एल्युमनाई.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में स्थापना दिवस पर दो दिवसीय प्रथम पूर्ववर्ती छात्र मिलन समारोह और स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में पहली बार पूर्व छात्रों के लिए मिलन समारोह आयोजित किया गया है. इसके साथ ही पीजी स्टूडेंट कान्क्लेव भी आयोजित किया जा रहा है. ताकि वर्तमान और पूर्व छात्रों एक दूसरे के साथ घुलमिल सकें. उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का आयोजन विशेष रूप से भारत के पहले राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद के जन्म दिवस पर किया जा रहा है. क्योंकि यह विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस भी है. इसी दिन कृषि शिक्षा दिवस भी है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों ने देश और विदेश में प्रतिष्ठा अर्जित की है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय तीन वर्षों में बावनवे रैंक से चौदहवें रैंक पर पहुंच गया है. लाइब्रेरी पूरी तरह डिजिटल और आटोमेटेड हो गई है. अब छात्र कहीं से भी लाइब्रेरी की सभी सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं.

Prabhat Khabar 04-12-2025

किसान सिंचित व समयकालीन गेहूं की बोआई संपन्न करें

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के द्वारा किसानों के लिये समसामयिक सुझाव जारी किया गया है. किसानों को सलाह दी गयी है कि सिंचित एवं समयकालीन गेहूं की किस्मों की बोआई 5 दिसम्बर तक आवश्यक सम्पन्न कर लें. उत्तर बिहार के लिए सिंचिंत एवं समयकालीन गेहूं की पीबीडब्लू-178, पीबीडब्लू-252, एचडी-2967, राजेंद्र गेहूं-3 एवं 4 किस्में अनुशंसित है. बीज को बोआई से पहले बेबीस्टीन 2.5 ग्राम की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें. छिटकबां विधि से बोआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बोआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें. बोआई पूर्व खेत में 150-200 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नत्रेजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें.जिन खेतों में दीमक का प्रकोप हो, बोआई पूर्व बीज को क्लोरपायरिफॉस 20 ईसी दवा का 8 मिली प्रति किलोग्राम बीज की दर से आवश्य उपचारित करें. 10 दिसम्बर के बाद गेहूं की पिछात किस्मों की बोआई की सलाह दी जाती है. उत्तर बिहार के लिए गेहूं की पिछात किस्में एचयूडब्लू-234, डब्लूआर-544, एचडी-2967, एचडब्लू- 2045, राजेन्द्र गेंहूं-1 तथा एचआई-1563 अनुशंसित है. गन्ना की रोपाई के लिए स्वस्थ बीज का चयन करें. इसके लिए सीओपी-9301, सीओपी-2061, सीओपी-112, बीओ-91, बीओ-153 एवं बीओ-154 किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित है. कार्बेंडाजिम दवा के एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर गन्ना के गेड़ियों को 10-15 मिनट तक उपचारित कर रोपाई करें. दीमक, कल्ला एवं जड़ छिद्रक कीट से बचाव हेतु बीज को क्लोरपाईरिफॉस 20 ईसी का 5 लीटर प्रति हेक्टेयर रोपनी के समय पोरियों पर सिराउर में छिड़काव करें. रबी मक्का की बोआई किसान सम्पन्न कर लें. अगात बोयी गयी मक्का की फसल में निकौनी एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें.किसान आलू की रोपाई प्राथमिकता से पूरा करने का प्रयास करें. जिन किसानों के खेतों में आलू के पौधों की ऊंचाई 15 से 20 सेमी हो गयी हो उन्हें आलू में निकौनी कर मिट्टी चढ़ाने एवं सिंचाई की सलाह दी है.चना की बोआई के लिए उपयुक्त समय चल रहा है. किसान 10 दिसम्बर तक चना की बोआई अवश्य सम्पन्न कर लें. पूसा-256, केपीजी-59(उदय), केडब्लूआर 108, पंत जी 186 एवं पूसा 372 चना के लिये अनुशंसित उन्नत कस्में है. बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मिली प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें. पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पांच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बोआई करें. राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल,राजेन्द्र सफुलाम एवं राजेन्द्र राई पिछेती की बोआई सम्पन्न करने का प्रयास करें.

Prabhat Khabar-4-12-2025

RPCAU students urged to emulate alumni footsteps

B K Mishra | TNN

Patna: Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU)'s chancellor PL Gautam on Wednesday called upon the students to take inspiration from the university's distinguished alumni who have distinguished themselves in the field of green revolution and made India self-sufficent in foodgrains' production.

Inaugurating the three-day 56th Foundation Day celebrations and the first-ever alumni meet of the university, Gautam emphasized the importance of alumni mentorship and urged the present day scholars to follow the footsteps of their seniors and contribute significantly to the country's development.

University's VC PS Pandey highlighted the significance of the occasion and said the

भास्कर 5/12/25 पेज 12

आयोजन • पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन व स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

पूसा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति हैं पुस्तक प्रेमी छात्रों में भी विकसित करना चाहते हैं पुस्तक प्रेम : कुलाधिपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन एवं स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में देश के विभिन्न हिस्सों से कृषि एवं कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में पुस्तक प्रकाशित करने वाले प्रकाशक सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में पचास हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं। पुस्तक प्रदर्शनी दो दिनों तक चलेगा। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कुलाधिपति डॉ. पी एल गौतम ने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय पुस्तक प्रेमी हैं। वे छात्रों में भी पुस्तक के प्रति प्रेम विकसित करना चाहते हैं इसीलिए इतने वृहत स्तर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि पुस्तकें हमारे जीवन को संवारती है। पुस्तकों में ज्ञान का खजाना छुपा है जो चाहे और जितना चाहे इस खजाने से अपने लिए ज्ञान अर्जित कर सकता है।

पुस्तक प्रदर्शनी में शामिल कुलाधिपति।

उन्होंने कहा कि कृषि एवं संबंधित क्षेत्र की किताबों को खरीदने के लिए छात्रों को कोई मुश्किल नहीं हो इसलिए देश भर के प्रतिष्ठित प्रकाशकों को इस प्रदर्शनी में बुलाया गया है जिसमें देश और विदेश की हजारों पुस्तकें हैं। छात्र और शिक्षक एक ही जगह से अपने लिए पुस्तक खरीद सकते हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों की हजारों पुस्तकें हैं लेकिन फिर भी छात्रों और शिक्षकों के मन में चलता रहता है कि विभिन्न विषयों में किस तरह की पुस्तकें प्रकाशित हो रही है। इस ज्ञानवर्धन में भी यह प्रदर्शनी सहायता करेगी। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा ने बताया कि इस प्रदर्शनी में लगभग कृषि से संबंधित सभी विषयों की हजारों पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि 2016 के बाद पहली बार कुलपति के विशेष निर्देश पर इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। इसकी सफलता को देखते हुए आने वाले समय में इसे हर साल आयोजित करने पर विचार किया जायेगा। पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान डीन पीजीसीए डॉ.मयंक राय, डॉ. शिवपूजन सिंह, डॉ. महेश कुमार, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

भास्कर 5/12/25 पेज 14

छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन लगभग 3 सौ से अधिक शोध की दी गई प्रस्तुति

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी

भास्कर न्यूज | पूसा

संगोष्ठी में मौजूद वैज्ञानिक व छात्र।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन लगभग तीन सौ से अधिक शोध की प्रस्तुति दी गई। शोध पत्र प्रस्तुति के लिए विश्वविद्यालय में विभिन्न कालेजों में एक साथ तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया। सभी तकनीकी सत्रों में शोध प्रस्तुति में प्रथम स्थान पाने वाले छात्रों को सर्टिफिकेट,मेडल एवं पुरस्कार राशि देकर उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा। इधर पूर्ववर्ती छात्रों के सम्मेलन के दूसरे दिन पूर्ववर्ती छात्रों और उनके परिजनों को विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थाओं और विभागों का भ्रमण सह दर्शन कराया गया। पूर्ववर्ती छात्रों के भोजन के लिए विशेष रूप से मिथिला के व्यंजन बनाए गए थे और नाश्ता में मरीचा धान का चूडा और दही की व्यवस्था भी की गई थी। पूर्ववर्ती छात्रों के सम्मान में विश्वविद्यालय के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जिसमें विभिन्न राज्यों के गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किये गये। पूर्ववर्ती छात्र सुबोध कुमार ने कहा कि वे विश्वविद्यालय में आकर धन्य महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने जिस तरह की व्यवस्था की है वो सराहनीय है। विश्वविद्यालय द्वारा रहने की, भोजन की और भ्रमण की बहुत अच्छी व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि विश्वविद्यालय आने वाले वर्षों में देश और दुनिया में एक नया मुकाम हासिल करेगा।

दैनिक जागरण 5/12/25 पेज 2

प्रदर्शनी से छात्रों में पुस्तक के प्रति प्रेम बढ़ाने का प्रयास : कुलाधिपति

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन एवं स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन स्पोटर्स कांप्लेक्स में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में देश के विभिन्न हिस्सों से कृषि एवं कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में पुस्तक प्रकाशित करने वाले प्रकाशक सम्मिलित हैं।

पुस्तक प्रदर्शनी दो दिनों तक चलेगी। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कुलाधिपति डा. पीएल गौतम ने कहा कि कुलपति डा. पीएस पांडेय पुस्तक प्रेमी हैं। वे छात्रों में भी पुस्तक के प्रति प्रेम विकसित करना चाहते हैं इसीलिए इतने वृहत स्तर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। कुलपति ने कहा कि पुस्तकें हमारे जीवन को संवारती है। पुस्तकों में ज्ञान का खजाना छुपा है जो चाहे और जितना चाहे इस खजाने से अपने लिए ज्ञान अर्जित कर सकता है। कृषि एवं संबंधित क्षेत्र की किताबों को खरीदने के लिए छात्रों को कोई मुश्किल नहीं हो इसलिए देश भर के प्रतिष्ठित प्रकाशकों को इस प्रदर्शनी में बुलाया गया है। जिसमें देश और विदेश की हजारों पुस्तकें हैं।

छात्र और शिक्षक एक ही जगह से अपने लिए पुस्तक खरीद सकते हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में विभिन्न विषयों की हजारों पुस्तकें हैं लेकिन फिर भी छात्रों और शिक्षकों के मन में चलता रहता है कि विभिन्न विषयों में किस तरह की पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। इस ज्ञानवर्धन में भी यह प्रदर्शनी सहायता करेगी। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय अध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा ने बताया कि इस प्रदर्शनी में लगभग कृषि से संबंधित सभी विषयों की हजारों पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि 2016 के बाद पहली बार इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। इसकी सफलता को देखते हुए आने वाले समय में इसे हर साल आयोजित करने पर विचार किया जाएगा। पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, डा. शिवपूजन सिंह, डा. महेश कुमार, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

2016 के बाद पहली बार इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में

- पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन एवं स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन पुस्तक प्रदर्शनी
- कृषि से संबंधित सभी विषयों की हजारों पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही हैं प्रदर्शनी में

पुस्तक प्रदर्शनी का निरीक्षण करते कुलपति • जागरण

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 7 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी आएगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
05 दिसंबर	25.4	12.0
06 दिसंबर	25.4	12.5
	दरभंगा	
05 दिसंबर	25.4	12.5
06 दिसंबर	25.0	12.5
	पटना	
05 दिसंबर	26.2	13.8
06 दिसंबर	26.2	13.8

डिग्री सेल्सियस में

जताया। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति कम देख नाराजगी जताई।

हिन्दुस्तान 5/12/25 पेज 7

पुस्तक प्रेम विकसित करने में प्रदर्शनी होगी सहायक

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन एवं स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में देश के विभिन्न हिस्सों से कृषि एवं कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में पुस्तक प्रकाशित करने वाले प्रकाशक सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में 50 हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं। दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम ने कहा कि कुलपति डॉ.पीएस पांडेय पुस्तक प्रेमी हैं। वे छात्रों में भी पुस्तक के प्रति प्रेम विकसित करना चाहते हैं।

प्रभात खबर 5/12/25 पेज 4

मशरूम की बुआई में कंपोस्ट की गुणवत्ता जांचने पर जोर

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च में बटन मशरूम बुआई के लिए कम्पोस्ट का निर्माण जारी है. बटन मशरूम की बोआई समय से करने की जरूरत है. मशरूम विशेषज्ञ .डॉ दयाराम ने कहा कि जो किसान अभी तक बटन मशरूम नहीं लगाये हैं वे अविलंब इसी सप्ताह में त्वरित गति से बोआई कर लें. अन्यथा फसल से प्राप्त होने वाला उत्पादन प्रभावित होने की आशंका बनी रहेगी. खासतौर से इस वर्ष असामयिक वर्षा के कारण न समय से खाद का निर्माण हो पाया. न ही समय से बोआई हो सकी है. किसान खाद की उपलब्धता के आधार पर प्राथमिकता के साथ बिजाई का कार्य सम्पन्न करें.

मशरूम उत्पादक अगर कहीं बाहर से कम्पोस्ट की खरीददारी करते हैं तो उस खाद की गुणवत्ता की अवश्य जांच करें. फिर विवि से अनुशंसित स्पॉन की बिजाई करें. मशरूम केंद्र प्रभारी सह वैज्ञानिक डॉ आरपी प्रसाद ने कहा कि मशरूम कम्पोस्ट की गुणवत्ता जांचने के दौरान खास ख्याल रखने की आवश्यकता होती है. जो कंपोस्ट का उपयोग बिजाई के दौरान करना है उसमें अमोनिया की गंध नहीं होनी चाहिए. तैयार कम्पोस्ट में नमी की मात्रा 60 से 65 प्रतिशत होनी चाहिए. कम्पोस्ट का पीएच मान 7.22 से 7.8 तक व कम्पोस्ट का रंग भूरा होनी चाहिए. नमी की मात्रा व तापमान अधिक हो तो उसे खुले स्थान पर में बनाकर जरूरत के हिसाब से ठंडा करके नमी एवं तापमान को नियंत्रित कर लें. बटन मशरूम का उत्पादन अगर किसान झोपड़ी में कर रहे हो तो एक क्विंटल कम्पोस्ट में एक किलोग्राम स्पॉन की दर से कम्पोस्ट में डालकर प्रयोग करें. मशरूम को झोपड़ी में लगाने के बाद 24 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान व अपेक्षित आद्रता 85 से 90 प्रतिशत बनाये रखने का सुझाव दिया है.

प्रभात खबर 5/1/25 पेज 4

मेगा बुक एग्जीबिशन ज्ञान साझा करने का मंच

पूसा .डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर में मेगा बुक एग्जीविशन के उद्घाटन सत्र के उपरांत छात्र-छात्राओं का जत्था प्रदर्शनी की ओर उमड़ पड़ा. इसमें लगे दर्जनों बुक स्टालों से छात्र-छात्रा उपयोगी किताबों की खरीददारी की. प्रदर्शनी के दौरान विवि स्थित मृदा विज्ञान विभाग की छात्रा ज्योति कुमारी ने बताया कि विश्वविद्यालय में मेगा बुक एग्जीविशन का शैक्षणिक एवं शोध कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका है. यह किसानों को नई तकनीकों, उपकरणों व वैज्ञानिक जानकारी से परिचित कराता है. जिससे उत्पादकता बढ़ती है. कृषि पद्धति बेहतर होती है. यह किसानों, विशेषज्ञों व कंपनियों के बीच ज्ञान साझा करने का अनौपचारिक मंच प्रदान करता है. नई तकनीकों व बेहतर रणनीति को अपनाने से किसानों की उत्पादकता व दक्षता बढ़ सकती है. मौके पर मेघा वर्मन, स्वस्तिका राज, चन्द्र ज्योति, खुशी, अल्का भंडाला, मोनिका, मोना श्री आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर 5/12/25 पेज 4

पुस्तक के प्रति प्रेम विकसित करने की जरूरत : कुलाधिपति

उद्घाटन करते कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में पूर्ववर्ती छात्र सम्मेलन व स्नातकोत्तर छात्र संगोष्ठी के दूसरे दिन स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गयी. इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से कृषि एवं कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में पुस्तक प्रकाशित करने वाले प्रकाशक सम्मिलित हुए. 50 हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई. उद्घाटन करते हुए कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम ने कहा कि कुलपति डॉ पीएस पांडेय पुस्तक प्रेमी हैं. वे छात्रों में भी पुस्तक के प्रति प्रेम विकसित करना चाहते हैं.

कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि पुस्तकें हमारे जीवन को संवारती है. पुस्तकों में ज्ञान का खजाना छुपा है. ज्ञानवर्धन में यह प्रदर्शनी सहायता करेगी. विश्वविद्यालय के पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा ने बताया कि इस प्रदर्शनी में लगभग कृषि से संबंधित सभी विषयों की हजारों पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही है. 2016 के बाद पहली बार कुलपति के विशेष निर्देश पर इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजित की गयी है. डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ महेश कुमार डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे.

विशिष्ट छात्र ही ले सकते हैं प्रतिष्ठित कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नामांकन : कुलाधिपति

आयोजन : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ कार्यक्रम, कहा- विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों में देश भर के विश्वविद्यालयों को राह दिखाई

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम के बारहवें दिन कुलाधिपति डॉ. पीएल गौतम ने नवांगतुक छात्रों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि छात्रों को यह समझना चाहिए कि वे विशिष्ट है तभी देश के एक प्रतिष्ठित केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में अपने लिए जगह बना पाये हैं। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने पिछले कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय का जिस तरह से विकास किया है वह अनूठा है। पुसा विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों में पूरे देश भर के विश्वविद्यालयों को राह दिखाई है। दीक्षारंभ की शुरुआत कुलपति की संकल्पना है जिसे आज देश भर के विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया गया है। इसी तरह से प्राकृतिक खेती में स्नातक कोर्स शुरू करने वाला भी पुसा का यह विवि पहला विश्वविद्यालय बन चुका है। कुलपति की अध्यक्षता में ही देश भर के विश्वविद्यालयों के लिए इस कोर्स का सिलेबस बनाया गया है। उन्होंने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर और ड्रोन ट्रेनिंग एवं मेंटेनेंस में भी यह विवि पूर्वी भारत को राह दिखा रहा है। इन्हीं कारणों से कृषि मंत्रालय ने जब कृषि वैज्ञानिकों को किसानों के दरवाजे तक भेजा तो उस कार्यक्रम के पूर्वी भारत की कमान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पांडेय को दी गई और इसी विश्वविद्यालय में इसका कमांड रूम भी स्थापित किया गया।

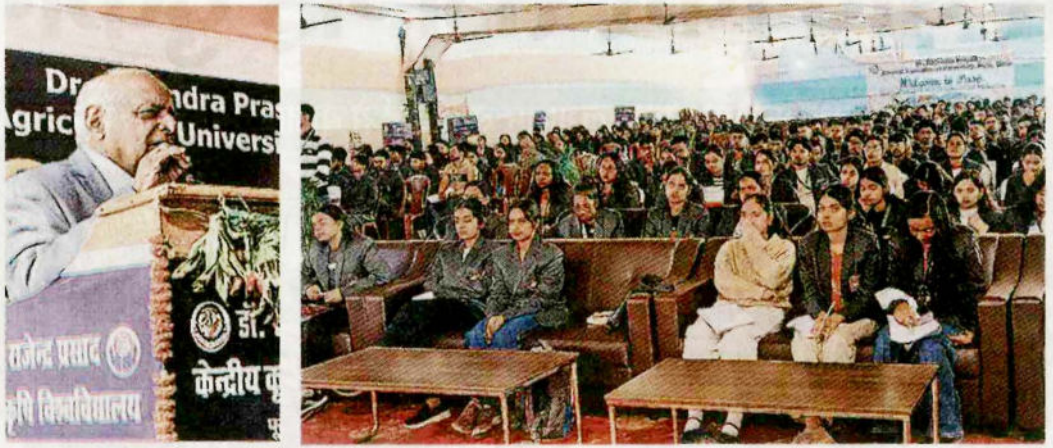

दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान नए छात्रों को संबोधित करते कुलाधिपति व मौजूद नए छात्र।

विशिष्ट सोचना और विशिष्ट करना भी होगा

उन्होंने कहा कि छात्रों को भी यह समझना होगा कि वे देश भर के विश्वविद्यालय को नई राह दिखा सकते हैं। उन्हें साधारण से हटकर विशिष्ट सोचना होगा और विशिष्ट करना भी होगा। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जब आप एक विशिष्ट विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे हैं तो साधारण पढ़ाई करने से काम नहीं चलेगा। आपको विशिष्ट बनकर दिखाना होगा।

समस्याओं को शांति व सहयोग की भावना से निपटाना होगा

कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने छात्रों से कुलाधिपति का परिचय कराया और उनके जीवन वृत्त की जानकारी दी। कुलपति ने कहा कि विवि छात्रों का है। वे पूरा प्रयास करते हैं कि छात्रों को किसी तरह की कोई समस्या न हो। लेकिन जिस तरह परिवार में कभी न कभी कुछ न कुछ समस्या आ जाती है। उसी तरह विश्वविद्यालय परिवार में भी कभी कभी कुछ समस्या आ सकती है। ऐसे में सभी छात्रों को इन समस्याओं को शांति और सहयोग की भावना से निपटना होगा। कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया जबकि डॉ. ऋतंभरा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर सैकड़ों कृषि वैज्ञानिक व नव आगंतुक छात्र मौजूद थे।

भास्कर 6.12.25 पेज 16

आयोजन • पूसा विवि के नवनामांकित छात्रों ने केवीके बिरौली समेत अन्य प्रक्षेत्रों का किया भ्रमण

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में वैज्ञानिकों ने छात्रों को विभिन्न अनुसंधान कार्यों व कृषि तकनीकों से कराया रू-ब-रू

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम से जुड़े नव-नामांकित विद्यार्थियों का एक दल पिछले दो दिनों से प्रक्षेत्र भ्रमण पर हैं। इस दो दिवसीय प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान नव नामांकित छात्र-छात्राओं के दल ने कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली, पिपराकोठी, माधोपुर, तुर्की, बेगूसराय और नयानगर के प्रगतिशील किसान सुधांशु सिंह के उद्यानिकी फार्म का भ्रमण किया। सबसे पहले छात्र कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली पहुंचकर केवीके के स्थापना के उद्देश्य से रूबरू हुए।

केवीके के हेड डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी के नेतृत्व में वैज्ञानिक डॉ. धीरू तिवारी, सुमित कुमार सिंह, एग्रीकल्चर इंजीनियर विनीता कश्यप आदि ने छात्रों को केवीके परिसर में चलाये जा रहे विभिन्न कृषि अनुसंधान कार्यक्रमों तथा केंद्र में अवस्थित विभिन्न प्रदर्शन इकाई जैसे वर्मीकम्पोस्ट, नर्सरी, समेकित कृषि प्रणाली, कृषि यंत्र, अजोला उत्पादन, मिट्टी जांच प्रयोगशाला, ड्रोन स्प्रे, फार्म में विभिन्न तकनीक के द्वारा लगाएं गए फसल, बगीचा आदि का भ्रमण कराकर उन्हें इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। इतना ही नही वैज्ञानिकों ने नव-नामांकित विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा की जा रही मुख्य गतिविधियां जैसे कृषक प्रशिक्षण, खेतों में फसल प्रत्यक्षण, ऑन फार्म ट्रायल के साथ-साथ अन्य प्रसार कार्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी।

केवीके बिरौली में जुटे नवनामांकित छात्र व वैज्ञानिक।

विद्यार्थियों को ड्रोन के द्वारा फसल पर स्प्रे करके भी दिखाया

वैज्ञानिक सुमित कुमार ने सभी विद्यार्थियों को ड्रोन के द्वारा फसल पर स्प्रे करके भी दिखाया, जिसे देखकर छात्र काफी उत्साहित हुए। केवीके हेड डॉ. तिवारी ने विद्यार्थियों से कहा की वे कृषि को परम्परागत खेती के रूप में न देखें बल्कि खेती को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और नवीनतम तकनीकों से जोड़कर देश की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने के साथ-साथ किसानों को समृद्ध बनाने में भी अपना योगदान दें। बाद में नव नामांकित सभी छात्र नयानगर के समृद्ध किसान सुधांशु सिंह के फार्म पर पहुँचे। यहां पहुंचकर उन्होंने विभिन्न उद्यानिकी फसलें जैसे केला, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी, मौसमी, अमरूद आदि की बागबानी को देखा। समृद्ध किसान सुधांशु सिंह ने छात्रों को प्रीसीजन फार्मिंग मॉडल के अलावे अन्य नए नए कृषि तकनीकों के बारे में बताया। छात्रों ने बताया कि यह भ्रमण उनके लिए काफी ज्ञानवर्धक और लाभकारी साबित हुआ हैं। आगे जारी रहने वाले कृषि की पढ़ाई में छात्रों को इस भ्रमण व जानकारी से काफी मदद मिलेगी।

भास्कर 6.12.25 पेज 17

पुस्तक प्रदर्शनी का छात्र, वैज्ञानिक, कर्मियों के अलावे हजारों लोगों ने अवलोकन किया

पूसा विवि में चल रहे पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान छात्रों में दिखा उत्साह

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रदर्शनी में पुस्तकों का अवलोकन करते कुलाधिपति।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान छात्रों एवं वैज्ञानिकों में काफी अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। इस पुस्तक प्रदर्शनी का छात्रों, वैज्ञानिकों, कर्मियों के अलावे अन्य हजारों लोगों ने अवलोकन किया तथा अपनी अपनी जरूरतों के अनुसार प्रदर्शनी से पुस्तकें भी खरीदी। रूरल मैनेजमेंट में एमबीए कर रहे छात्र अनमोल कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय में पहली बार इस स्तर के पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। यहां कृषि एवं इससे संबंधित क्षेत्र में देश और विदेश के लगभग सभी प्रकाशकों की किताबें मिल रही है। पहले इन पुस्तकों को खरीदने के लिए छात्रों को मुजफ्फरपुर और पटना जैसे जगहों पर भटकना पड़ता था और तब भी अच्छी पुस्तकें नहीं मिल पाती थी। कुछ वैज्ञानिक व छात्रों को तो विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए दिल्ली भी जाना होता था। छात्र ने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय का यह प्रयास काफी सराहनीय है। डॉ. राकेश मणि शर्मा ने कहा कि कुलपति के निर्देश पर इस दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया हैं। प्रदर्शनी की सफलता को देखते हुए हमलोग अब इसे हर वर्ष आयोजित करने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष कुलपति के निर्देश पर साहित्य, इतिहास एवं समाज शास्त्र से जुड़े प्रकाशकों को भी आमंत्रित किया जाएगा ताकि इन विषयों की पुस्तकों को भी अधिक से अधिक प्रदर्शित की जाएं।

विशिष्ट विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए विशिष्ट बनना होगा : कुलाधिपति

संस, जागरण ● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ के दौरान कुलाधिपति डा. पीएल गौतम ने नवागंतुक छात्रों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि छात्रों को यह समझना चाहिए कि वे विशिष्ट हैं तभी देश के एक प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय में अपनी जगह बना पाए हैं। पिछले कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय का जिस तरह से विकास किया है वह अनूठा है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों में पूरे देश भर के विश्वविद्यालयों को राह दिखाई है। दीक्षारंभ की शुरुआत यहीं से हुई जिसे आज देश भर के विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया गया है। इसी तरह से प्राकृतिक खेती में स्नातक कोर्स शुरू करने वाला भी यह पहला विश्वविद्यालय है।

- डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ सत्र को कुलपति ने किया संबोधित
- सभी छात्रों को शांति व सहयोग की भावना से समस्याओं से निपटने की कुलपति ने की अपील

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर और ड्रोन ट्रेनिंग एवं मेंटेनेंस में भी यह पूर्वी भारत को राह दिखा रहा है। इसी कारण कृषि मंत्रालय ने भी जब कृषि वैज्ञानिकों को किसानों के दरवाजे तक भेजा तो उस कार्यक्रम के पूर्वी भारत की कमान विश्वविद्यालय के कुलपति को दी गई और इसी विश्वविद्यालय में इसका कमांड रूम स्थापित किया गया। उन्होंने कहा कि छात्रों को भी यह समझना होगा कि वे देश भर के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखा सकते हैं। उन्हें साधारण से हटकर विशिष्ट सोचना होगा, विशिष्ट करना होगा। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जब आप एक विशिष्ट विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे हैं तो साधारण पढ़ाई करने से काम नहीं चलेगा, आपको विशिष्ट बनना होगा। कार्यक्रम के दौरान कुलपति ने छात्रों से कुलाधिपति का परिचय कराया और उनके जीवन वृत्त की जानकारी दी। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों का है। वे पूरा प्रयास करते हैं कि छात्रों को किसी तरह की कोई समस्या न हो लेकिन जिस तरह परिवार में कई बार समस्या हो जाती है उसी तरह विश्वविद्यालय परिवार में भी कभी-कभी कुछ समस्या हो सकती है। ऐसे में समस्याओं से सभी छात्र शांति और सहयोग की भावना से निबटें। उन्होंने शिक्षकों और वैज्ञानिकों से भी आग्रह किया कि वे सभी विद्यार्थियों को अपने परिवार का ही अंग मानें। कुलसचिव डा. पी के प्रणव ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया जबकि डा. ऋतंभरा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संबोधन देते कुलाधिपति ● जागरण

कुलाधिपति के संबोधन को सुनते श्रोता ● जागरण

प्रदर्शनी में पहुंचे छात्रों ने मनपसंद किताबें खरीदी

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में शुक्रवार को दूसरे दिन पुस्तक प्रदर्शनी में लोगों ने जरूरत मुताबिक पुस्तकें खरीदी। रूरल मैनेजमेंट में एमबीए कर रहे छात्र अनमोल कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पहली बार इस स्तर की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। यहां कृषि एवं इससे संबंधित क्षेत्र में देश और विदेश के लगभग सभी प्रकाशकों की किताबें मिल रही है। पहले इन पुस्तकों के लिए छात्रों को मुजफ्फरपुर और पटना भटकना पड़ता था। विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए दिल्ली जाना होता था। छात्र ने कहा कि कुलपति डा. पी एस पांडेय का यह प्रयास काफी सराहनीय है। विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन डा. राकेश मणि शर्मा ने कहा कि कुलपति के निर्देश पर इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

Dainik Jagran 06-12-2025

नया नगर में किसान का प्रक्षेत्र भ्रमण करते विशेषज्ञ • जागरण

नवाचार व तकनीक से किसानों को खाद्य सुरक्षा करने का हुनर सीखाएं

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के द्वारा स्नातक में नव-नामांकित छात्रों के लिए जारी दीक्षारंभ कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों को प्रक्षेत्र भ्रमण कराया गया। यह प्रक्षेत्र भ्रमण कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली, पिपराकोठी, माधोपुर, तुर्की, बेगूसराय एवं प्रगतिशील किसान सुधांशु सिंह के उद्यानिकी फार्म नयानगर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य, केन्द्रों के द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों तथा केन्द्र में स्थित वर्मी कम्पोस्ट, नर्सरी, समेकित कृषि प्रणाली, कृषि यंत्र, अजोला, मिट्टी जांच प्रयोगशाला, ड्रोन के द्वारा स्प्रे, फार्म में लगे विभिन्न तकनीक के द्वारा लगी फसल, बगीचे का भ्रमण कराया गया एवं इसकी विस्तृत जानकारी दी गई। नव-नामांकित विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा की जा रही मुख्य गतिविधियां प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण, आनलाइन फार्म ट्रायल एवं अन्य प्रसार कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई। सभी विद्यार्थियों को ड्रोन के द्वारा स्प्रे कर प्रत्यक्ष प्रदर्शन दिखाया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बताया गया कि वे कृषि को परम्परागत खेती के रूप में न देखें बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और तकनीक के साथ जोड़कर देश की खाद्य सुरक्षा और किसानों की समृद्धि में अपना योगदान दें। नया नगर में सुधांशु सिंह के फार्म में विभिन्न उद्यानिकी फसलों जैसे- केला, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी, मौसमी, अमरूद इत्यादि में प्रीसीजन फार्मिंग मॉडल का भ्रमण कराया गया।

Dainik Jagran 06-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 10 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-27 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस तक रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
06 दिसंबर	25.2	10.5
07 दिसंबर	25.2	10.0
	दरभंगा	
06 दिसंबर	25.2	10.0
07 दिसंबर	24.8	10.0
	पटना	
06 दिसंबर	26.0	11.8
07 दिसंबर	26.0	11.8

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 06-12-2025

न्यूनतम तापमान में चार डिग्री की गिरावट

संस, जागरण ● पूसा : उत्तर बिहार में अभी मौसम साफ एवं शुष्क रहेगा। अगले चार दिनों में अधिकतम तापमान 24 से 27 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 25.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। न्यूनतम तापमान 7.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। ज्ञात हो कि अधिकतम तापमान जहां सामान्य है वहीं न्यूनतम तापमान सामान्य से 4.6 डिग्री सेल्सियस कम रिकार्ड किया गया। पछिया हवा चलने के कारण तापमान में गिरावट दर्ज होगी। मौसम वैज्ञानिक डा. ए. सत्तार ने बताया कि दिसंबर की शुरुआत आते ही न्यूनतम तापमान में लगभग चार डिग्री की गिरावट जारी है।

Dainik Jagran 06-12-2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह आयोजित, कई बिन्दुओं पर हुई चर्चा

विवि पूर्वी भारत को दिखा रहा राह : गौतम

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में जारी दीक्षारंभ समारोह के दौरान शुक्रवार को कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम ने नवांगतुक छात्रों को संबोधित करते हुए शुक्रवार को कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर, ड्रोन प्रशिक्षण व रखरखाव में विवि पूर्वी भारत को राह दिखा रहा है।

इसी कड़ी में किसानों के दरवाजे तक पहुंच बनाने के कार्य की शत-प्रतिशत सफलता के लिए पूर्वी भारत की कमान पूसा स्थित विवि को दी गई। यह कृषि मंत्रालय के भरोसे को प्रदर्शित करता है। ऐसे में विवि के नामांकित छात्रों को कुछ उत्कृष्ट कार्य कर विवि की पहचान को और सशक्त करने की जरूरत है। मौके पर कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि एक परिवार है। जिसके अंग छात्र, वैज्ञानिक व अन्य सहयोगी हैं।इसे सशक्त करने के साथ किसानों व देश हित को ध्यान में रखकर कार्य करने व समस्याओं का निराकरण करने की जरूरत है।स्वागत कुलसचिव डॉ. पीके प्रणव, संचालन डॉ. विनिता शतपति एवं धन्यवाद डॉ. ऋतंभरा सिंह ने किया।

शुक्रवार को कृषि विश्वविद्यालय में समारोह को संबोधित करते कुलाधिपति डॉ.पीएल गौतम।

- किसानों के दरवाजे तक पहुंचने की जबावदेही विश्वविद्यालय को दी गई
- किसानों और देश हित को ध्यान में रखकर कार्य करने की जरूरत

शुक्रवार को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह में उपस्थित नवनामांकित छात्र-छात्राएं।

प्रदर्शनी में छात्रों व वैज्ञानिकों की जुटी भीड़

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में जारी दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी शुक्रवार को दूसरे दिन भी जारी रही।

इस दौरान छात्रों एवं वैज्ञानिकों ने पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए पुस्तकें खरीदी। रूरल मैनेजमेंट में एमबीए कर रहे छात्र अनमोल कुमार ने कहा कि विवि में पहली बार इस स्तर की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

पूर्व में ऐसे पुस्तकों के लिए मुजफ्फरपुर और पटना भटकना पड़ता था। विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए दिल्ली तक जाना होता था। विवि के पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा ने कहा कि कुलपति के मार्गदर्शन में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसकी सफलता को देखते हुए अब प्रत्येक वर्ष प्रदर्शनी आयोजित करने का प्रयास किया जायेगा।

Hindustan 6-12-2025

छात्र-छात्राओं को भ्रमण कराकर किया जा रहा ज्ञानवर्धन

प्रतिनिधि, पूसा

छात्र-छात्राओं के साथ वैज्ञानिक.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि स्नातक में नव नामांकित छात्र-छात्राओं के लिए दीक्षारम्भ कार्यक्रम का आयोजन किया गया है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत दो दिवसीय प्रक्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया. यह प्रक्षेत्र भ्रमण कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली, पिपराकोठी, माधोपुर, तुर्की, बेगूसराय एवं प्रगतिशील किसान सुधांशु सिंह के उद्यानिकी फार्म नयानगर में आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के स्थापना का उद्देश्य, केन्द्रों के द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों व केन्द्र में अवस्थित विभिन्न प्रदर्शन ईकाइयों में वर्मीकम्पोस्ट, नर्सरी, समेकित कृषि प्रणाली, कृषि यंत्र, अजोला, मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, ड्रोन के द्वारा स्प्रे, फार्म में लगे विभिन्न तकनीक के द्वारा लगे फसल, बगीचा इत्यादि का भ्रमण कराया गया. इसकी विस्तृत जानकारी दी गई. नव-नामांकित छात्रों को कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से की जा रही मुख्य गतिविधियों में प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण, ऑन फार्म ट्रायल एवं अन्य प्रसार कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई. ड्रोन के माध्यम से स्प्रे कर प्रत्यक्ष प्रदर्शन दिखाया गया. छात्रों को बताया गया कि वह कृषि को परम्परागत खेती के रूप में न देखें बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और तकनीक के साथ जोड़कर देश की खाद्य सुरक्षा और किसानों की समृद्धि में अपना योगदान दें. नयानगर में सुधांशु सिंह के फार्म में विभिन्न उद्यानिकी फसलों में केला, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी, मौसम्मी, अमरूद आदि में प्री सीजन फार्मिंग मॉडल का भ्रमण कराया गया.

Prabhat Khabar 06-12-2025

हर वर्ष पुस्तक प्रदर्शनी लगाने का कृषि विवि ने लिया निर्णय

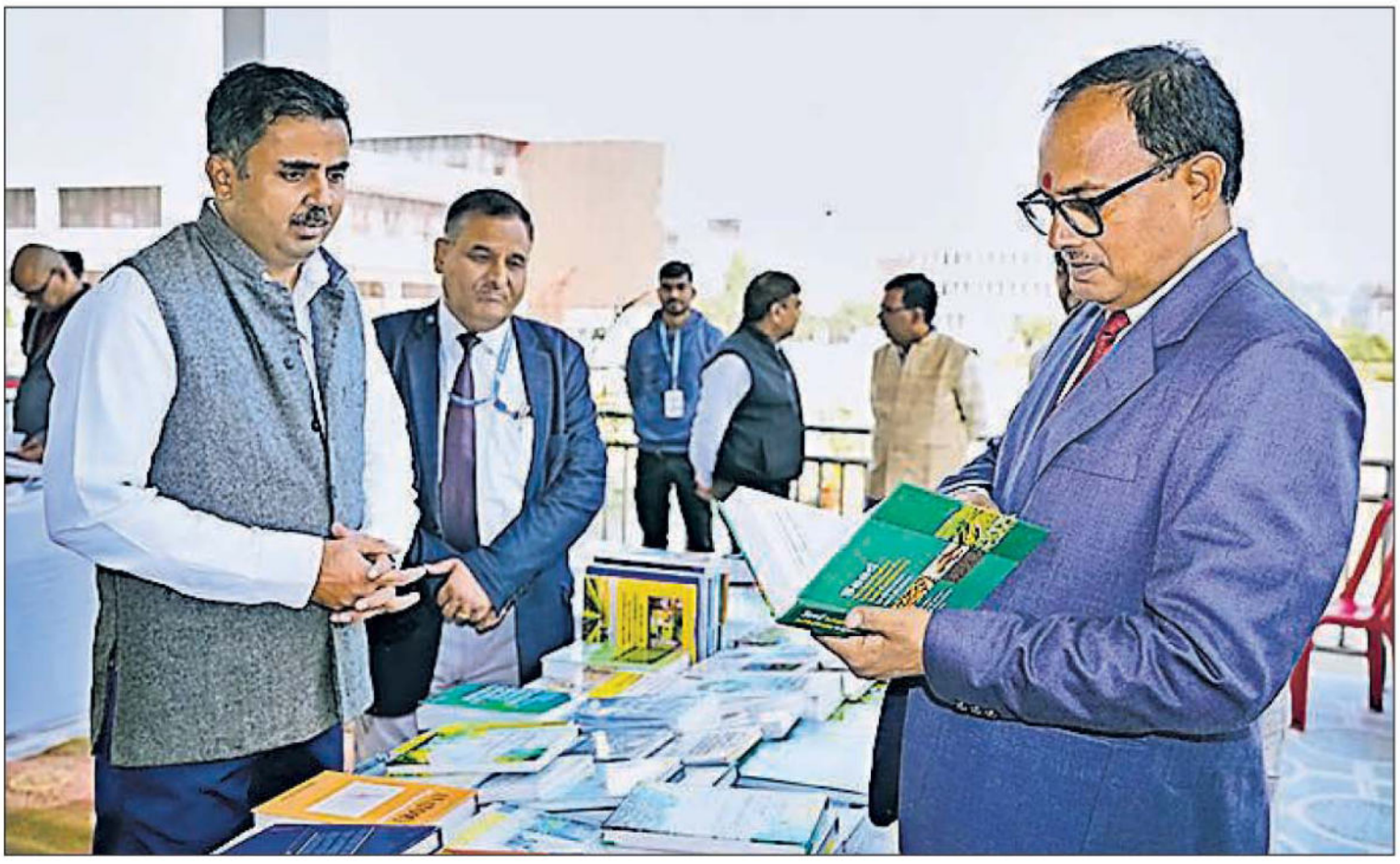

प्रदर्शनी का अवलोकन करते कुलपति.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान छात्रों एवं वैज्ञानिकों में अभूतपूर्व उत्साह दिखा. पुस्तक प्रदर्शनी का हजारों लोगों ने अवलोकन किया. अपनी जरूरत के मुताबिक पुस्तकें खरीदी. रूरल मैनेजमेंट में एमबीए कर रहे छात्र अनमोल कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पहली बार इस स्तर की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है. यहां कृषि एवं इससे संबंधित क्षेत्र में देश और विदेश के लगभग सभी प्रकाशकों की किताबें मिल रही है. पहले इन पुस्तकों को छात्रों को मुजफ्फरपुर और पटना भटकना पड़ता था. तब भी अच्छी पुस्तकें नहीं मिल पाती थी. विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए दिल्ली जाना होता था. छात्र ने कहा कि कुलपति डॉ पीएस पांडेय का यह प्रयास काफी सराहनीय है. विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन डॉ राकेश मणि शर्मा ने कहा कि कुलपति के निर्देश पर इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था. इसकी सफलता को देखते हुए अब इसे हर वर्ष आयोजित करने का प्रयास करेंगे.

उन्होंने कहा कि अगले वर्ष कुलपति डॉ पीएस पांडेय के निर्देश पर साहित्य, इतिहास एवं समाज शास्त्र से जुड़े प्रकाशनों को आमंत्रित किया जायेगा. ताकि इन विषयों की भी अधिक से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित हों. पुस्तक प्रदर्शनी का शाम छह बजे के बाद सम्पन्न हुई.

Prabhat Khabar 06-12-2025

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्र छात्राएं विशिष्ट : डॉ पीएल गौतम

प्रतिनिधि, पूसा

- दीक्षारंभ के दौरान कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम ने छात्र व छात्राओं को किया संबोधित
- कुलपति बोले, शिक्षकों और वैज्ञानिकों से भी आग्रह किया कि वे सभी विद्यार्थियों को अपने परिवार का ही अंग मानें
- डिजिटल एग्रीकल्चर व ड्रोन ट्रेनिंग एवं मेंटेनेंस में भी यह पूर्वी भारत को राह दिखा रहा है

संबोधित करते कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम.

समारोह में मौजूद वैज्ञानिक व छात्र.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ के दौरान कुलाधिपति डॉ पीएल गौतम ने कहा कि छात्रों को यह समझना चाहिए कि वे विशिष्ट हैं. तभी देश के एक प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय में अपने लिए जगह बना पाये हैं. कुलाधिपति ने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों में पूरे देश भर के विश्वविद्यालय को राह दिखाई है. प्राकृतिक खेती में स्नातक कोर्स शुरू करने वाला भी यह पहला विश्वविद्यालय है. डिजिटल एग्रीकल्चर व ड्रोन ट्रेनिंग एवं मेंटेनेंस में भी यह पूर्वी भारत को राह दिखा रहा है. इसी सब के कारण कृषि मंत्रालय ने भी जब कृषि वैज्ञानिकों को किसानों के दरवाजे तक भेजा तो उस कार्यक्रम के पूर्वी भारत की कमान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पांडेय को दी गई. इसी विश्वविद्यालय में इसका कमांड रूम स्थापित किया गया. उन्होंने कहा कि छात्रों को भी यह समझना होगा कि वे देश भर के विश्वविद्यालय को नई राह दिखा सकते हैं. उन्हें साधारण से हटकर विशिष्ट सोचना होगा. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि पूरा प्रयास करते हैं कि छात्रों को किसी तरह की कोई समस्या न हो. लेकिन जिस तरह परिवार में समस्या हो जाती है. उसी तरह विश्वविद्यालय परिवार में भी कभी कभी कुछ समस्या हो सकती है. ऐसे में समस्याओं से सभी छात्र शांति और सहयोग की भावना से निबटें. उन्होंने शिक्षकों और वैज्ञानिकों से भी आग्रह किया कि वे सभी विद्यार्थियों को अपने परिवार का ही अंग मानें. कुलसचिव डॉ पीके प्रणव ने कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण दिया. जबकि डॉ रितंभरा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया.

Prabhat Khabar 06-12-2025

भास्कर 7.12.25 पेज 15

आयोजन • राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरा होने पर कार्यक्रम

संघ का 100वां वर्ष समाज और राष्ट्रवाद के लिए अहम : रामदत्त

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरा होने पर शताब्दी वर्ष संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में आरएसएस के उत्तर बिहार के प्रांत प्रचारक के अलावे सैकड़ों स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता और संघ के संस्थापक डा. केशव राव बलीराम हेडगेवार सहित अन्य विभूतियों के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सह मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे संघ के सह सर कार्यवाह रामदत्त चक्रधर ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 100वां वर्ष भारतीय समाज और राष्ट्रवाद के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। इस साल यह संगठन एक सदी पूरी कर रहा है जिसने समाज में आत्म-जागरूकता, सांस्कृतिक जागरण और सेवा कार्यों जैसे आपदा प्रबंधन, ग्राम विकास आदि के माध्यम से समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। उन्होंने कहा की आज देश में संघ की 83 हजार से ज्यादा शाखाएं लग रही हैं। इन शाखाओं से लाखों स्वयंसेवक जुड़कर समाज व देश के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इतना ही नही संघ से जुड़कर आज करीब 400 से अधिक संगठन विभिन्न क्षेत्रों में भी काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में समाज के लोगों को अपने आप में आत्मबोध करने की जरूरत हैं। उन्होंने कहा कि इस देश के नागरिकों में सदगुण की भावना को विकसित करने की जरूरत हैं। उन्होंने कहा कि साथ रहना भले कठिन हो परंतु एक रहना कठिन नही हैं। हम सभी आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार देकर एक रहने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने पर्यावरण बचाव को लेकर भी समाज के लोगों को जागरूक करने की बात कही।

कार्यक्रम में शामिल लोग।

संघ राष्ट्र हित में निरंतर काम करता है

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे पुसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि पूरे देश के लोग संघ के शताब्दी वर्ष को काफी हर्ष उल्लास से मना रहे हैं। उन्होंने कहा की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना हैं जो राष्ट्र व समाज के हित के लिए निरंतर काम करता रहे। संघ समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत कर उनमें देश के प्रति समर्पण की भावना उत्पन्न करता हैं। देश के प्रत्येक लोगों में जिस दिन देश के प्रति समपर्ण की भावना जागृत हो जाएगी उसी दिन से भारत विश्व के सबसे शक्तिशाली देशों की श्रृंखला में सबसे पहले पायदान पर आकर खड़ा हो जाएगा। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि भारत के एक राज्य के बराबर देश हैं इजरायल। इजरायल के प्रत्येक व्यक्ति में देश के प्रति कूट कूटकर समर्पण की भावना भरी हैं। इन्ही कारणों से आज इजरायल सैन्य ताकत में काफी आगे हैं।

वैज्ञानिक को मिला सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन केंद्र का पुरस्कार

पूसा| डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अंतरगत ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एग्रोमेटियोरोलॉजी को (आईसीएआर) सेंट्रल रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ड्रायलैंड एग्रीकल्चर (सीआरआईडीए) हैदराबाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले केंद्र के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार विगत 27 से 30 नवंबर 2025 तक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में आयोजित किये गए परियोजना की वार्षिक कार्य समूह बैठक के उद्घाटन सत्र के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डॉ.एके नायक के द्वारा पुसा विवि के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार के हाथों में दिया गया। पुरस्कार का चयन आईसीएआर विवंक्वेनियल रिव्यू टीम की सिफारिशों के आधार पर किया गया हैं।

दैनिक जागरण 7.12.25 पेज 8

कृषि विश्वविद्यालय पूसा को मिला सर्वश्रेष्ठ केंद्र का पुरस्कार

उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा ने एक बार फिर जिले का मान बढ़ाया है। विश्वविद्यालय अंतर्गत संचालित आल इंडिया कोआर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट आन एग्रोमेटियोरोलाजी को उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले केंद्र के रूप में सम्मानित किया है। यह सम्मान आइसीएआर– सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट फार ड्रायलैंड एग्रीकल्चर, हैदराबाद की ओर से प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 27 से 30 नवम्बर तक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में आयोजित वार्षिक कार्य समूह बैठक के उद्घाटन सत्र में प्रदान किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डा. एके नायक ने कृषि विश्वविद्यालय पूसा की टीम को सम्मानित किया। चयन आइसीएआर की क्विंक्वेनियल रिव्यू टीम की सिफारिशों के आधार पर किया गया, जो हर पांच साल में देशभर की आइसीएआर परियोजनाओं के प्रदर्शन, उपयोगिता और भविष्य की दिशा का मूल्यांकन करती है। यह पुरस्कार कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा एग्रोमेटियोरोलॉजी क्षेत्र में किए गए उच्चस्तरीय अनुसंधान और उसके प्रभावी उपयोग को दर्शाता है। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडेय, निदेशक अनुसंधान डा. ए.के. सिंह और निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश कुमार झा ने परियोजना के प्रधान अन्वेषक डा. अब्दुस सत्तार और उनकी टीम को बधाई दी।

• यह सम्मान आइसीएआर – सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट फार

• यह सम्मान आइसीएआर – सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट फार

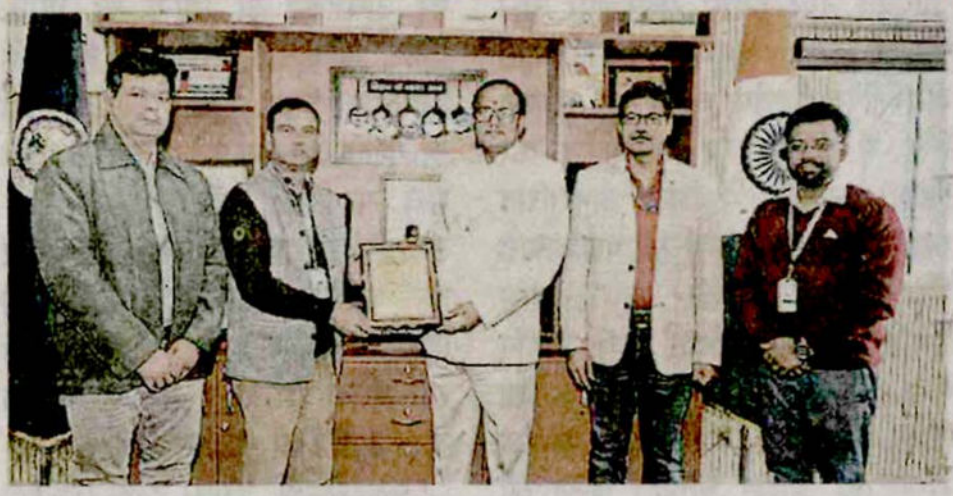

पुरस्कार के साथ विश्वविद्यालय की टीम • जागरण

आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार देकर करें प्रेरित

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि पूसा के विद्यापति सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरा होने पर शताब्दी वर्ष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संघ के सह सर कार्यवाह रामदत्त चक्रधर ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 100 वां वर्ष भारतीय समाज और राष्ट्रवाद के लिए काफी महत्वपूर्ण है। हम सभी आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार देकर एक रहने के लिए प्रेरित करें। विशिष्ट अतिथि पूसा वि के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि पूरे देश के लोग संघ के शताब्दी वर्ष को काफी हर्ष उल्लास से मना रहे हैं। संचालन वि के निदेशक छात्र कल्याण डा. रमण त्रिवेदी ने किया। मौके पर क्षेत्र के सभी स्वयंसेवक मौजूद रहे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 10 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय : साफ़ रहेगा तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-27 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस तक रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
07 दिसंबर	25.2	10.5
08 दिसंबर	25.2	10.0
	दरभंगा	
07 दिसंबर	25.2	10.0
08 दिसंबर	24.8	10.0
	पटना	
07 दिसंबर	26.0	11.8
08 दिसंबर	26.0	11.8

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 7.12.25 पेज 4

समारोह | पूसा में बिहार विधानसभा की समीक्षा बैठक सह सम्मान समारोह आयोजित, उत्कृष्ट कार्य करने वाले हुए सम्मानित

टीम भावना व समर्पण से लोकतंत्र का महापर्व सफल : डीएम

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा के विद्यापति सभागार में शनिवार को बिहार विधानसभा चुनाव की समीझा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें जिला भर के अधिकारियों ने हिस्सा लिया। अध्यक्षता डीएम रोशन कुशवाहा ने की। समारोह की शुरूआत डीएम समेत एसपी अरविंद प्रताप सिंह, डीसीसी शैलजा पांडेय, एडीएम (राजस्व) ब्रजेश कुमार, एडीएम (आपदा) राजेश कुमार सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी विनोद कुमार, एनडीसी रजनीश कुमार राय ने

विवि के विद्यापति सभागार में मौजूद जिला भर के अधिकारी।

संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर की। बैठक में डीएम ने निर्वाचन कार्य में लगे अधिकारियों व कर्मियों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि लोकतंत्र के महापर्व की सफलता उसके कर्मठ और निष्पक्ष कर्मियों पर टिकी होती है। समस्तीपुर ने इस निर्वाचन में उत्कृष्ट कार्य का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि चुनाव जैसी संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण पूरा कराना पूरे प्रशासनिक तंत्र की टीम भावना, पारदर्शिता और समर्पण का परिणाम है। यह सम्मान केवल औपचारिकता नहीं है। यह लोकतंत्र के प्रति निष्ठा का प्रतीक है। इस अवसर पर डीएम ने निर्वाचन कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सभी कर्मियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मौके पर नगर आयुक्त ज्ञान प्रकाश, बंदोबस्त पदाधिकारी विजय कुमार, जिला पंचायती राज पदाधिकारी विष्णु देव मंडल, एएसपी संजय कुमार पांडे, एसडीओ सदर दिलीप कुमार समेत सभी एसडीओ एसडीपीओ, बीडीओ, सीओ व अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

बीडीओ को सम्मानित

कल्याणपुर । बिहार विधानसभा निर्वाचन में कल्याणपुर (अजा) विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में बेहतर तरीके से निर्वाचन कार्य संपन्न कराने को लेकर डीएम रोशन कुशवाहा ने कल्याणपुर बीडीओ देवेंद्र कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया है। इस पर प्रखंड के कर्मचारी सहित विभिन्न पंचायत के मुखिया एवं राजनीतिक दल के लोगों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी है।

हिन्दुस्तान 7.12.25

विवि के मौसम विभाग को किया गया सम्मानित

पेज 4

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एग्रोमेटियोरोलॉजी को आईसीएआर सेंट्रल रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ड्रायलैंड एग्रीकल्चर, हैदराबाद ने "सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला केंद्र पुरस्कार" से सम्मानित किया है।

- विवि के मौसम विभाग को मिला "सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला केंद्र पुरस्कार"

यह पुरस्कार बीते 27 नवम्बर को पंजाब कृषि विवि, लुधियाना में आयोजित परियोजना की वार्षिक कार्य समूह बैठक के उद्घाटन सत्र में दी गई। इस दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डॉ.ए.के.नायक ने विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ.ए.सत्तार को प्रमाण-पत्र व मोमेन्टो सौंपा। यह चयन आईसीएआर की क्यूआरटी की सिफारिशों के आधार पर किया गया था। डॉ.सत्तार ने बताया कि यह(क्यूआरटी) पांच वर्ष की अवधि में आईसीएआर की अनुसंधान परियोजनाओं के प्रदर्शन, प्रासंगिकता व भविष्य की रणनीतियों का मूल्यांकन करने को लेकर विशेषज्ञों की समिति है।

हिन्दुस्तान 7/12/25 पेज 4

'समाज व देश केंद्रित बनाना संघ का लक्ष्य'

संगोष्ठी

विवि के विधापति सभागार में मौजूद संघ व विवि से जुड़े लोग।

पूसा, निज संवाददाता। राष्ट्रीय स्वयं सेवक के सह सरकार्यवाह रामदत्त चक्रधर जी ने कहा कि संघ के लिए राष्ट्र सर्वोपरी है। देश को विश्व गुरू बनाना लक्ष्य है।

इसके लिए लोगों को आत्म केन्द्रीत से समाज व देश केन्द्रीत बनाना लक्ष्य है। इसकी सफलता के लिए कुटुम्ब प्रबोधन, आपसी समरसता, पर्यावरण, स्व की जागृति एवं नागरिक कर्तव्यों का बोध विकसित करना प्रमुख है। वे शनिवार की शाम डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विद्यापति सभागार में लोगों से अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। मौका था आरएसएस के शताब्दी वर्ष संगोष्ठी का।

उन्होंने कहा कि भारत दुनिया को दिशा दिखाने वाला रहा है। वर्तमान में समाज अपने आप को भूल चुका है। उसे आत्मबोध कराना जरूरी है। उन्होंने पंच परिवर्तन पर जोर देते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ी को बेहतर संस्कार देना, छूआ-छूत को खत्म करना, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निरंतर पहल करना, स्व की जागृति को जगाकर श्रेष्ठ के प्रति सम्मान को बढ़ाना, नागरिक कर्तव्यों के प्रति जवाबदेह बनाने की दिशा में कार्य करना वर्तमान समय की जरूरत है। इससे पूर्व विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि पूरा देश आरएसएस का शताब्दी वर्ष मना रहा है। संघ देश व समाज निर्माण के साथ चरित्र निर्माण कर देश के प्रति समर्पित स्वयं सेवक बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि अपनी विशिष्टता को पहचान कर देशहित में उपयोग करने की जरूरत है।

निदेश दिए गए।

हिन्दुस्तान 7-12-25 पेज 4

'मिट्टी व भूमि संरक्षण हमारा कर्तव्य'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलाधिपति डॉ. पीएल गौतम ने कहा कि मिट्टी एवं भूमि संरक्षण हमारा परम कर्तव्य है। इस दिशा में वैज्ञानिकों को निरंतर सशक्त पहल करने की जरूरत है। साथ ही सामुहिक प्रयास को बढ़ावा देने के लिए सबसे अधिक किसानों व युवा पीढ़ी को जागरूक करने की जरूरत है।

विवि में मृदा दिवस पर आयोजित एआई निर्मित पोस्टर ।

वे विवि के स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय से जुड़े मृदा विज्ञान विभाग में वैज्ञानिकों व छात्रों को संबोधित कर रहे थे। मौका था विश्व मृदा दिवस के अवसर आयोजित समारोह व एआई निर्मित पोस्टर प्रतियोगिता का। इस दौरान कुलाधिपति एवं कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने वैज्ञानिक टीम के साथ एआई निर्मित थीम पर बने पोस्टरों का अवलोकन किया। इस दौरान 55 छात्रों ने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। डीन डॉ. मयंक राय ने मृदा विज्ञान के बढ़ते प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा एवं वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एसके. ठाकुर ने कहा कि मृदा को संभाल कर रखना अत्यंत आवश्यक है। जिससे आने वाले पीढ़ी को स्वस्थ एवं पौष्टिक आहार के साथ स्वच्छ पेयजल, प्रदुषण मुक्त वायु मिल सके।

हिन्दुस्तान 7.12.25 पेज 5

'वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कृषि छात्रों को देखने की जरूरत'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा में नव नामांकित छात्रों ने कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली एवं जिले के नयानगर निवासी व प्रगतिशील किसान सुधांशु कुमार के उद्यानिकी फार्म का भ्रमण किया।

इस दौरान केवीके में बीज उत्पादन प्रक्षेत्र समेत वर्मी कम्पोस्ट, नर्सरी, समेकित कृषि प्रणाली, कृषि यंत्र, अजोला, मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, ड्रोन से खेतों में स्प्रे, फार्म में लगे तकनीक, फसल, बगीचा आदि का भ्रमण किया। इस दौरान केवीके की अन्य गतिविधियों के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि वे कृषि छात्र हैं। उन्हें कृषि को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और तकनीक के साथ जोड़ कर देखने एवं देश की खाद्य सुरक्षा और किसानों की समृद्धि में अपना योगदान के प्रयासों की दिशा में पहल करने की जरूरत है। वहीं नयानगर में सुधांशु कुमार के फार्म में केला, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी, मौसमी, अमरूद जैसे उद्यानिकी फसलों के अलावा प्रिसिजन फार्मिंग मॉडल का भ्रमण किया।

प्रभात खबर

कैंपस अलर्ट

7-12-25
पेज 4

मौसम विभाग पूसा सर्वश्रेष्ठ केंद्र अवार्ड से सम्मानित

अवार्ड प्राप्त करते मौसम वैज्ञानिक डॉ ए. सत्तार.

पूसा. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अंतर्गत ऑल इंडिया को-ऑर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन एग्रोमेटियोरोलॉजी को सेंट्रल रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ड्रायलैंड एग्रीकल्चर हैदराबाद द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले केंद्र के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. यह पुरस्कार विगत 27 से 30 नवंबर तक पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना में आयोजित परियोजना की वार्षिक कार्य समूह बैठक के उद्घाटन सत्र के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डॉ. एके नायक के द्वारा पूसा विवि के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार के हाथों में दिया गया. मौसम वैज्ञानिक डॉ. अब्दुस सत्तार की इस उपलब्धि पर पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय, निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह व निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने बधाई दिया है.

प्रभात खबर 7.12.25 पेज 7

नागरिक में सद्गुण की भावना विकसित करने की जरूरत

पूसा . डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरा होने पर शताब्दी वर्ष संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें आरएसएस के उत्तर बिहार के प्रांत प्रचारक के अलावा स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया. कार्यक्रम की शुरुआत भारत माता व संघ के संस्थापक डा. केशव राव बलीराम हेडगेवार सहित अन्य विभूतियों के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया. मुख्य अतिथि सह सर कार्यवाह रामदत्त चक्रधर ने स्वयं सेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 100वां वर्ष भारतीय समाज और राष्ट्रवाद के लिए काफी महत्वपूर्ण है. इस साल यह संगठन एक सदी पूरी कर रहा है जिसने समाज में आत्म-जागरूकता, सांस्कृतिक जागरण और सेवा कार्यों जैसे आपदा प्रबंधन, ग्राम विकास आदि के माध्यम से समाज पर गहरा प्रभाव डाला है. देश के नागरिकों में सद्गुण की भावना को विकसित करने की जरूरत है. विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है जो राष्ट्र व समाज के हित के लिए निरंतर काम करता रहे. संघ समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागृत कर उनमें देश के प्रति समर्पण की भावना उत्पन्न करता है. संचालन विवि के निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी ने किया.

भास्कर 8.12.25 पेज 16

कार्यक्रम • पूसा विवि के कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय का 43वें स्थापना दिवस का हुआ आयोजन

कृषि में अभियंत्रण व इससे जुड़े लोगों का योगदान अहम : वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

कार्यक्रम में मौजूद कुलपति व अन्य अतिथि।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के परिसर में महाविद्यालय का 43वां स्थापना दिवस समारोह गरिमा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम भी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता बतौर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी. एस. पांडेय ने की। संबोधन में कुलपति ने महाविद्यालय के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए महाविद्यालय के विकास और उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि कृषि में अभियंत्रण और इससे जुड़े लोगों का योगदान काफी अभूतपूर्व है। आज अभियंत्रण के जरिये ही मशीनीकृत खेती संभव हो पाई है। मशीनों के उपयोग से किसान अपनी उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ समय और श्रम दोनों बचा रहे हैं। आज नई तकनीकों के माध्यम से सिंचाई के दौरान पानी और फसल में उर्वरक दोनों का बेहतर प्रबंधन संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि आज नई नई तकनीकों से फसल की कटाई, सिंचाई, बीज बुआई, ड्रोन स्प्रे आदि किये जा रहे हैं जिससे किसानों की आय में वृद्धि संभव हो पाई है। उन्होंने कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय द्वारा किए गए विभिन्न उत्कृष्ट कार्यों पर भी विस्तार पूर्वक चर्चा की। कार्यक्रम को महाविद्यालय के सह संस्थापक एवं पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एपी मिश्रा ने भी संबोधित किया। उन्होंने बताया कि वे आईआईटी खड़गपुर में अपने प्राध्यापक पद से त्यागपत्र देकर पुसा विवि के कृषि अभियंत्रण विभाग में काफी महत्वपूर्ण योगदान दी हैं। उन्होंने अभियंत्रण महाविद्यालय के स्थापना, विकास यात्रा तथा वर्तमान प्रगति का विस्तृत विवरण भी प्रस्तुत किया। उन्होंने महाविद्यालय द्वारा कृषि अभियंत्रण शि ा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में हासिल किये गए उपलब्धियों को भी रेखांकित किया। कार्यक्रम में विवि के निदेशक (शिक्षा) डॉ. उमाकांत बेहरा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों की सराहना की और सभी को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय ने कृषि अभियंत्रण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त पहचान स्थापित की है और आने वाले समय में इसे और ऊँचाइयों पर ले जाने की मता भी इस संस्थान में है। विवि के प्राध्यापक सह रजिस्ट्रार डॉ. पी के. प्रणव जो इसी महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे हैं। उन्होंने अपने संबोधन में महाविद्यालय के प्रति गर्व प्रकट किया। अधिष्ठाता डॉ. राम सुरेश ने कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. कुलविंदर कौर एवं डॉ. श्रेया गुप्ता ने संयुक्त रूप से किया। बाद में स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता एवं उपविजेताओं को कुलपति एवं मंचासीन अन्य गणमान्य अतिथियों के द्वारा सर्टिफिकेट एवं मेडल प्रदान किए गए। अंत मे डॉ. पीडी. शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। मौके पर डॉ. पीपी श्रीवास्तव, डॉ. ए. के. सिंह , डॉ. आर. के. झा , डॉ. विशाल कुमार, डॉ. दिनेश रजक, विभिन्न संकाय के सदस्य, कर्मचारी व छात्र-छात्राएं आदि मौजूद थे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 10 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-27 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस तक रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
08 दिसंबर	24.0	11.0
09 दिसंबर	24.5	11.0
	दरभंगा	
08 दिसंबर	24.5	11.0
09 दिसंबर	24.5	11.3
	पटना	
08 दिसंबर	26.0	12.8
09 दिसंबर	26.0	12.8

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 8. 12. 25 पेज 9

कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय का मना 43वां स्थापना दिवस समारोह

कृषि के विकास में यांत्रिकीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण : कुलपति

स्थापना दिवस

- कृषि यंत्रों का निर्माण करने वाले अधिक बुद्धिमान और प्रतिभावान
- विवि के मौसम विभाग को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया
- प्रतिभागियों को मोमेन्टो, मेडल व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि कृषि के विकास में कृषि यांत्रिकरण की भूमिका अहम है।यह कृषि के विकास गति को तेज करता है।

कृषि यंत्रों का निर्माण करने वाले सबसे अधिक बुद्धिमान व प्रतिभावान होते हैं। विवि के छात्र इसका प्रत्यक्ष उदाहरण रहे हैं।वे अपने ज्ञान व बुद्धि से कोई भी लक्ष्य आसानी से हासिल करते रहे हैं।जरूरत है इस कड़ी को और सशक्त करने की। वे रविवार को विवि के विद्यापति सभागार में कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय के छात्रों व वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था महाविद्यालय के 43वें स्थापना दिवस समारोह का। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे इस स्थापना दिवस को मनाकर गौरवान्वित होने के साथ अपनी कमियां व उपलब्धियों का आकलन करें। उन्होंने

7 दिसम्बर पूसा-3 विवि के विद्यापति सभागार में प्रतिभागी को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते कुलपति, कुलसचिव व अन्य

कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखकर यंत्रों के विकास के साथ डिजीटल एग्रीकल्चर व सेंसर बेस्ड तकनीकों के विकास गति को तेज करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विवि ने मशरूम के क्षेत्र इन्सटेंट मिक्सचर का पेंटेट हासिल किया है। तो दूसरी ओर विवि के मौसम विभाग को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया है। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलित कर की गई। स्वागत डीन डॉ. राम सुरेश ने किया। सभा को पूर्व डीन डॉ.एपी मिश्रा, कुलसचिव डॉ.पीके प्रणव, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा ने भी संबोधित किया।संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ.कुलविन्द्र कौर व डॉ.श्रेया गुप्ता ने की। खेलकूद समेत अन्य प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागियों को मोमेन्टो, मेडल व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रभात खबर 8.12.25 पेज 4

आविष्कार के लिए बच्चों में जुनून की जरूरत : वीसी

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय का 43वां स्थापना दिवस आयोजित किया गया. मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के संस्थापक सह पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एपी मिश्रा थे. डॉ. मिश्रा ने आईआईटी खड़गपुर से प्राध्यापक पद को त्यागकर पूसा में विश्वविद्यालय के कृषि संकाय में प्रोफेसर के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया.

अपने संबोधन में महाविद्यालय की स्थापना से लेकर वर्तमान स्वरूप तक की विस्तृत जानकारी साझा की.

छात्रा को पुरस्कृत करते कुलपति.

उन्होंने बताया कि किस प्रकार यह महाविद्यालय कृषि अभियंत्रण शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में निरंतर प्रगति करता आया है. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि अभियंत्रण विभाग के वैज्ञानिक एवं छात्र छात्राओं का ब्रेन बहुत ही तीव्र होता है. छात्र-छात्राएं ही देश का भविष्य है. डिमांड और सप्लाई में बहुत बड़ा गैप है. समस्या आधारित शोध करने की दिशा में पहल करने की जरूरत है.

सेंसर का जमाना है. आविष्कार के लिए जुनून होने की आवश्यकता है. छात्र अपने आप में जुनून पैदा करें. निदेशक (शिक्षा) डॉ. उमाकांत बेहरा ने महाविद्यालय के विकास, उपलब्धियों तथा शैक्षणिक योगदान की सराहना करते हुए स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामना दी.

उन्होंने कहा कि महाविद्यालय ने कृषि अभियंत्रण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त पहचान स्थापित की है और आने वाले वर्षों में यह मानक और ऊंचा करने की क्षमता रखता है.

खेल प्रतियोगिता में अव्वल आये छात्रों को कुलपति ने मेडल एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित भी किया. संचालन वैज्ञानिक डॉ कुलविन्दर कौर एवं श्रेया गुप्ता ने किया. समारोह के दौरान छात्र-छात्राओं ने कई आकर्षक नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश कर चार चांद लगा दिया.

भास्कर 9.12.25 पेज 14 भास्कर 9/12/25 पेज 14

कृषि • मिट्टी अधिक सूखी या बहुत गीली होने पर आलू की फसल में ऑक्सीजन की हो जाती है कमी

आलू की फसल अभी उत्पादन-निर्धारक अवस्था में हैं, किसान रखें विशेष ध्यान

भास्कर न्यूज़ | पूसा

मौजूदा समय यानी दिसंबर माह में किसानों के द्वारा लगाई गई आलू की फसल अपनी सबसे संवेदनशील और उत्पादन-निर्धारक अवस्था में होती है। इस अवस्था को कंद प्रारंभ और कंद विकास अवस्था वाला चरण कहा जाता है। इस अवस्था में पौधे के भूमिगत तनों पर कोशिका-विभाजन और कोशिका -विस्तार तेजी से होता है। इस समय आलू उत्पादकों को अपने आलू के खेतों की मिट्टी में नियमित और संतुलित नमी बनाए रखने की जरूरत होती है। मिट्टी अधिक सूखी या बहुत गीली होने पर आलू की फसल में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे आलू के कंदों में शारीरिक विकृतियां जैसे आलू का फटना, आलू में होल या छेद होना या आलू में गांठ जैसी समस्या बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए आलू उत्पादकों को फसल में हल्की और अंतराल वाली सिंचाई यानी हर 6 से 8 दिन में करनी चाहिए। कृषि वैज्ञानिकों ने इस विधि को सबसे प्रभावी विधि सिद्ध किया है। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के फसल सुरक्षा विभाग के वैज्ञानिक सुमित कुमार सिंह ने बताया कि आलू के इस स्टेज में पोषक तत्वों की भूमिका सामान्य फसल की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे में मिट्टी में तापमान कम होने के कारण जड़ों का विस्तार धीमा होता है जिससे पौधे प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों को कम अवशोषित कर पाते हैं। इसलिए आलू लगाते समय फॉस्फोरस का पर्याप्त उपयोग अनिवार्य माना जाता है। क्योंकि फॉस्फोरस शुरुआती जड़ विकास, स्टोलन निर्माण और कंद के प्रारंभिक गठन को तेज करता है। इसके अलावे नाइट्रोजन (यूरिया) का संतुलित और विभाजित प्रबंधन पौधे की हरित वृद्धि को नियंत्रित करता है। यदि नाइट्रोजन (यूरिया) अधिक मात्रा में दे दिया जाए तो देर वाली फसल में पत्तियों का अत्यधिक विकास कंद निर्माण को पीछे धकेल देता है जिससे उपज घट जाती है। वही पोटाश का प्रयोग आलू के कंद की कोशिका यानी दीवार को मजबूत बनाता है।

केवीके में लगी आलू की फसल ।

पछात फसल पर झुलसा रोग का रहता खतरा

पछात झुलसा से बचाव के लिए किसान मैनकोज़ेब और मेटालेक्सिल या क्लोरोथालोनिल या सिस्टमिक फफूंदनाशियों जैसी दवाओं का स्प्रे 7 से 10 दिन के अंतराल पर करें। प्रारंभिक यानी अगात झुलसा अलटरनेरिया सोलानी द्वारा होता है जो पत्तियों की ऊपरी सतह पर कॉन्सेंनट्रिक रिंग्स बनाकर पत्ती की क्षमता घटाता है। इससे सुरक्षा के लिए कुछ विशेष सावधानियाँ अपनाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले खेत में हल्की सिंचाई ठंड पड़ने से एक दिन पहले कर देनी चाहिए क्योंकि नमी जमीन का तापमान स्थिर रखती है और पौधों को पाले से बचाती है। दोपहर में पानी देने पर तापमान दिन के समय ऊँचा होता है और पानी जल्दी वाष्पित हो जाता है। इससे मिट्टी अचानक ठंडी और फिर जल्दी गर्म होने लगती है जो पौधों में टेम्परेचर शौक पैदा करती है और ठंड का असर बढ़ जाता है। सुबह या शाम के हल्के ठंडे के समय पर पानी देने से मिट्टी का तापमान धीरे-धीरे स्थिर रहता है। मिट्टी में मिट्टी में नमी रातभर तापमान को गिरने नहीं देती जिससे पौधों की जड़ों और तनों को पाले से बचाव मिलता है।

आलू में खरपतवारों का नियंत्रण अत्यंत जरूरी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि आलू लगाने के 40 दिनों बाद अगर आलू की फसल में खरपतवार निकल जाएं हैं तो ये भी आलू की फसल को नुकसान पहुँचाने का काम करते हैं। खरपतवार आलू की फसल से प्रतिस्पर्धा करते रहते है। जबकि आलू के फसल की यह अवधि पौधे के छत्र विकाश और प्रकाश-संश्लेषण क्षमता को निर्धारित करने वाली अवधि होती है। खरपतवार यदि समय पर नियंत्रित न हों तो वे मिट्टी के नाइट्रोजन, पोटाश और सूक्ष्म पोषक तत्वों को तेजी से अवशोषित कर लेते हैं जो कंद निर्माण को सीधे प्रभावित करते है। खरपतवारों से निजात पाने के लिए किसान पेंडीमिथालिन (प्री इमरजेंस) अथवा मेट्रिब्यूजिन (पोस्ट इमरजेंस) का उपयोग कर सकते है। उन्होंने बताया कि कम तापमान, ओस और उच्च आर्द्रता आलू में रोगों के प्रकोप के लिए अत्यंत अनुकूल सूक्ष्म वातावरण तैयार कर देती हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 10 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा तथा मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-27 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 10 से 14 डिग्री सेल्सियस तक रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
08 दिसंबर	24.0	11.0
09 दिसंबर	24.5	11.0
	दरभंगा	
08 दिसंबर	24.5	11.0
09 दिसंबर	24.5	11.3
	पटना	
08 दिसंबर	26.0	12.8
09 दिसंबर	26.0	12.8

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 10.12.25 पेज 14

आयोजन • उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती के विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पारंपरिक खेती के साथ-साथ उच्च मूल्य वाली फसल लगा कर किसान बढ़ाएं अपनी आय, तभी कृषि होगा लाभकारी : तिवारी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली द्वारा ग्रामीण युवक एवं युवतियों के लिए उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती के विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. तिवारी ने ग्रामीण युवाओं को कृषि क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पारंपरिक खेती के साथ-साथ उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे स्ट्राबेरी, शिमला मिर्च, ड्रैगन फ्रूट, बेमौसमी सब्जियों, मशरूम और फूलों की खेती पर ध्यान केंद्रित करके किसान अपनी आय को कई गुना तक बढ़ा सकते हैं। उन्होंने जोर दिया कि तकनीकी ज्ञान और बाजार की समझ आज के कृषि व्यवसाय की रीढ़ है और यह प्रशिक्षण युवाओं को उसी दिशा में मजबूत करेगा। इस चार दिवसीय प्रशिक्षण में युवाओं को उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों को उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती के बारे में की जाने वाली प्रबंधन की तकनीकों से अवगत कराया। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. धीरू ने उत्तम प्रभेदों, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, सूक्ष्म सिंचाई, मल्चिंग तथा रोग एवं कीट प्रबंधन के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को विस्तृत रूप से बताया। प्रशिक्षण में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक सत्र भी शामिल थे जिससे प्रतिभागियों को सीखने का बेहतर अवसर मिला। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को अधिक लाभ देने वाली बागवानी फसलों की जानकारी देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना है। मौके पर निशा रानी, किसान मनोज, गनेश सहित किसान मौजूद थे।

प्रशिक्षण में मौजूद युवा किसान।

भास्कर 10.12.25 पेज 12

पहल • वैज्ञानिक एक प्लेटफार्म पर विभिन्न नवोन्मेषी अनुसंधान के लिए कार्य कर सकेंगे, कृषि में आएगी क्रांति

पूसा विवि और एनआईटी के बीच डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर एमओयू पर हस्ताक्षर

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय के विचारों के अनुसार मंगलवार कक विश्वविद्यालय और एनआईटी पटना के बीच डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया गया। इस एमओयू के अंतरगत विश्वविद्यालय एनआइटी पटना के साथ शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में एवं विशेषकर डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में मिलकर महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव और एनआइटी पटना की ओर से कुलसचिव डॉ.असित नारायण ने हस्ताक्षर किए। कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव ने कहा कि इस समझौते से विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं वैज्ञानिक ओर एनआइटी पटना के शिक्षक एवं वैज्ञानिक एक प्लेटफार्म पर विभिन्न नवोन्मेषी अनुसंधान के लिए कार्य कर सकेंगे। समझौता ज्ञापन समारोह में विश्वविद्यालय के अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राम सुरेश वर्मा, एनआइटी पटना के डीन एकेडमिक डॉ.एम पी सिंह, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. एस के पटेल, एनआइटी के डीन एलुमनाई एवं आउटरीच डॉ. संजय कुमार, डीन फैकल्टी डॉ.प्रकाश चंद्रा, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ.प्रभात कुमार एवं विश्वविद्यालय के अन्य वैज्ञानिक व पदाधिकारी मौजूद थे।

समझौता ज्ञापन के साथ दोनों संस्थानों के कुलसचिव व अन्य।

मोहिउद्दीननगर में कृषि चौपाल में मौजूद किसान।

मोहिउद्दीननगर में किसानों को दी गई आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी

मोहिउद्दीननगर | प्रखंड क्षेत्र के दुबहा पंचायत में मंगलवार को वासंतिक (रबी) कृषि जनकल्याण चौपाल का आयोजन उत्साहपूर्ण माहौल में किया गया। इस चौपाल में खेती-किसानी से जुड़े विभिन्न अहम विषयों—कृषि, आत्मा योजना, उद्यान विभाग, पौधा संरक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य—पर विस्तृत जानकारी किसानों को प्रदान की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता बलिराम राय ने की। चौपाल में उपस्थित बीटीएम रवि कुमार मल्लिक, एटीएम सुधीर कुमार एवं संजय कुमार त्रिवेदी ने किसानों को रबी मौसम की बुवाई, उन्नत किस्मों के चयन, प्राकृतिक खेती, जैविक उर्वरक के उपयोग, कीट एवं रोग प्रबंधन के आधुनिक तरीकों, फसल विविधीकरण तथा मिट्टी परीक्षण के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। विशेषज्ञों ने कहा कि मिट्टी की सेहत सुनिश्चित होने पर फसलों की पैदावार प्राकृतिक रूप से बढ़ती है। इसलिए हर किसान को अपनी खेत की मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए ताकि उर्वरक का सही एवं संतुलित उपयोग हो सके। पौधा संरक्षण इकाई द्वारा किसानों को डिजिटल कृषि तकनीक अपनाने तथा समय-समय पर मोबाइल ऐप के माध्यम से सुझाव लेने की भी सलाह दी गई। चौपाल में उपस्थित किसानों ने पूछे गए सवालों के समाधान भी प्राप्त किए और विभागीय योजनाओं की जानकारी लेकर काफी संतुष्टि जताई। मौके पर जागेश्वर महतो, बलिराम पासवान, संजीव राय, चंदन कुमार राय, गोलू कुमार, सुष्मा देवी, विमला देवी, कविता देवी, मनीष कुमार, बिनोद कुमार राय आदि मौजूद थे। चौपाल के सफल आयोजन से किसानों में रबी मौसम के प्रति नई ऊर्जा और जागरूकता देखने को मिली। किसानों को नई तकनीक से अवगत कराया गया।

एनआईटी पटना संग डिजिटल एग्रीकल्चर में काम करेगा विवि

एमओयू पर हस्ताक्षर के उपरांत मौजूद प्रतिनिधि • जागरण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अब एनआइंटी पटना के साथ डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में कार्य करेगी। इसको लेकर एमओयू हस्ताक्षर किया गया है। एमओयू के अंतर्गत विश्वविद्यालय एनआइटी पटना के साथ शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों एवं विशेषकर डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में मिलकर महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगा। विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर कुलसचिव डा. पीके प्रणव एवं एनआइटी पटना की ओर से कुलसचिव डा. असित नारायण ने हस्ताक्षर किया। कुलसचिव डा. पीके प्रणव ने कहा कि इस समझौता से वैज्ञानिक एवं शिक्षक एक प्लेटफार्म पर विभिन्न नवोन्मेषी अनुसंधान के लिए कार्य कर सकेंगे। समझौता ज्ञापन समारोह में विश्वविद्यालय के अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राम सुरेश वर्मा, एनआइटी पटना के डीन एकेडमिक डा. एमपी सिंह, प्राध्यापक डा. एसके पटेल, एनआइटी के डीन एलुमनाई एवं आउटरीच डा. संजय कुमार, डीन फैकल्टी डा. प्रकाश चंद्रा, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डा. प्रभात कुमार आदि उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 10-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 14 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
10 दिसंबर	24.0	10.0
11 दिसंबर	24.5	10.0
	दरभंगा	
10 दिसंबर	24.5	10.0
11 दिसंबर	24.5	10.3
	पटना	
10 दिसंबर	25.8	11.9
11 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-12-2025

प्रशिक्षण | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में सोशल मीडिया और कृषि पत्रकारिता विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का हुआ शुभारंभ

किसानों तक पहुंच बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका अहम : डीआर

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक अनुसंधान (डीआर) डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि बदलते समय में लोगों तक पहुंच बनाने में सोशल मीडिया एक बेहतर प्लेटफार्म है। ऐसे में किसानों तक पहुंच बनाना समय की मांग है। जिससे वैज्ञानिक नवीनतम तकनीक, समसामयिक सुझाव, कृषि से जुड़ी अन्य गतिविधियां, किसानों की सफलता की कहानी व आय बढ़ाने के श्रोतों को किसानों तक समय पर पहुंचाया जा सकता है। जरूरत है इसके तकनीकों को जान कर किसान व छात्र हित में कार्य करने की। वे मंगलवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में विश्वविधालय से जुड़े राज्य के विभिन्न ईकाईयों के चयनित वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था सोशल मीडिया और कृषि पत्रकारिता विषय पर 4 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि पूर्व के समय में डुगडुगी बजाकर सूचनायें भेजी जाती थी। अब सोशल मिडिया एक असरदार माध्यम है। उन्होंने पीसीआई की चर्चा करते हुए कहा कि इसके लिए प्लेटफार्म, कॉन्टेन्ट एवं इम्पैक्ट का ध्यान रखना जरूरी है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा ने कहा कि प्रसार में पत्रकारिता का अहम योगदान है। लेकिन कृषि पत्रकारिता काफी कम हो रही है। उन्होंने कहा कि सोसल मिडिया में सभी एक्सपर्ट है। लेकिन आकर्षक व किसानो योग्य पहुंच बनाने वाला बनना एक कला है। निलोखेरी (कर्नाल विवि) के वैज्ञानिक डॉ.अजय कुमार ने कहा कि सोसल मिडिया की भूमिका लगातार बढ़ रही है।

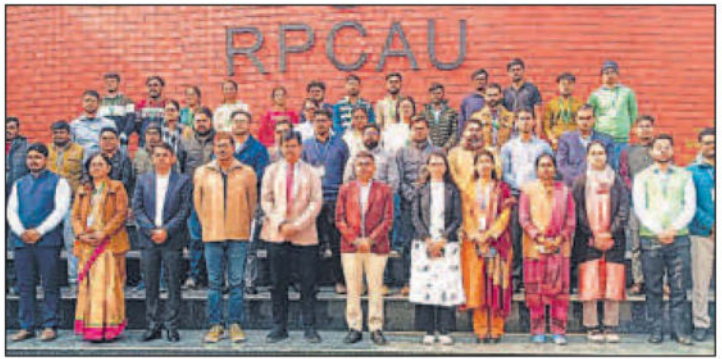

मंगलवार को विवि में प्रशिक्षण के उद्घाटन के मौके पर अतिथियों के साथ प्रशिक्षु वैज्ञानिक।

किसान चौपाल का आयोजन, रबी फसल की दी जानकारी

विद्यापतिनगर । प्रखंड के मऊ धनेशपुर दक्षिण पंचायत में कृषि विभाग द्वारा मंगलवार को किसान चौपाल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय किसान शामिल हुए। चौपाल में विभाग के अधिकारियों ने किसानों को रबी फसल की उन्नत खेती से जुड़ी तकनीक और सावधानियों की विस्तृत जानकारी दी। सहायक तकनीकी प्रबंधक मधुकर श्लोक ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि रबी मौसम में उच्च उत्पादन के लिए बीज उपचार अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे बीज बोने से पहले उसका उपचार अवश्य करें तथा उर्वरकों का प्रयोग संतुलित मात्रा में करें। साथ ही उन्होंने मिट्टी की जांच कर उसे उपयुक्त पोषक तत्वों से समृद्ध बनाने की सलाह भी दी। मौके पर किसान सलाहकार सहित अनेक किसान उपस्थित थे।

'बाजार की समझ कृषि व्यवसाय की रीढ़'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में ग्रामीण युवक एवं युवतियों के लिए उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती विषय पर 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मंगलवार को शुरू हुआ।

उद्घाटन केन्द्र प्रमुख डॉ.आरके तिवारी व अन्य ने दीप प्रज्जवलित कर किया। मौके पर उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को अधिक लाभ देने वाली बागवानी फसलों की जानकारी देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना और स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने ग्रामीण युवाओं को कृषि क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने पर बल देते हुए कहा कि पारंपरिक खेती के साथ-साथ उच्च मूल्य वाली फसलों में शामिल स्ट्राबेरी, शिमला मिर्च, ड्रैगन फ्रूट, बेमौसमी सब्जियां, मशरूम और फूलों की खेती पर ध्यान केंद्रित करके किसान अपनी आय को कई गुना बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय तकनीकी ज्ञान और बाजार की समझ का है। यह कृषि व्यवसाय की रीढ़ है। यह प्रशिक्षण युवाओं को उसी दिशा में मजबूत करेगा।

मंगलवार को केवीके में प्रशिक्षण का उद्घाटन करते केन्द्र प्रमुख व अन्य।

Hindustan 10-12-2025

प्रधानमंत्री मातृत्व अभियान शुरू : सीएस

पूसा, निज संवाददाता। अब प्रखंड के 3 अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान में प्रत्येक महीने के 9, 15 एवं 21 तारीख को गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण होगा। इसमें चंदौली, बथुआ एवं गंगापुर अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र शामिल है। इससे पहले यह सुविधा सिर्फ अनुमंडलीय अस्पताल, पूसा में उपलब्ध थी।

मंगलवार को इसका उद्घाटन पूसा के चंदौली केन्द्र से की गई। इस दौरान सिविल सर्जन डॉ.संजय कुमार चौधरी एवं जिप सदस्य सत्य प्रकाश कुशवाहा ने फीता काटकर इसका उद्घाटन किया। मौके पर सिविल सर्जन ने कहा कि राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार ने जिले के 16 अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर आज से प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान को मिशन मोड में शुरू किया है। इसके तहत सभी गर्भवती महिलाओं के प्रसव पूर्व जांच, वाइटल, पैथोलॉजिकल जांच, चिकित्सा सलाह, परामर्श एवं दवा सेवा दी जायेगी। इस दौरान चिन्हित उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं का स्पेशल केयर किया जायेगा।

मंगलवार को पूसा के चंदौली में उद्घाटन करते सिविल सर्जन व अन्य।

Hindustan 10-12-2025

जिला व प्रखंडस्तरीय पदाधिकारियों व नोडल शिक्षकों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम शुरू

'पोषण कार्यक्रम का संचालन व सामुदायिक भागीदारी जरूरी'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में तीन दिवसीय जिला व प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों एवं नोडल शिक्षकों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलवार को किया गया। यह प्रशिक्षण विद्यालय पोषण कार्यक्रम को सशक्त एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है।

कार्यक्रम का आयोजन बिहार सरकार, शिक्षा विभाग एवं मध्याह्न भोजन योजना के सहयोग से किया गया। जिसमें यूनिसेफ एवं सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा की तकनीकी भागीदारी भी शामिल रही। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में पोषण, स्वच्छता, बच्चों की वृद्धि निगरानी एवं गुणवत्ता आधारित मध्याह्न भोजन प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर अधिकारियों और शिक्षकों को अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराना है। "अंकुरण परियोजना" के तहत आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा की डीन डॉ.ऊषा सिंह ने स्कूल-स्तर पर पोषण कार्यक्रम का प्रभावी संचालन, निगरानी एवं सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। प्रतिभागियों ने इस पहल को विद्यालयों में बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत उपयोगी बताया। मौके पर यूनिसेफ के राज्य सलाहकार श्री प्रकाश, सुश्री सोमिला, पल्लवी कुमारी ने तकनीकी सत्र के माध्यम से कार्यक्रम को सुदृढ़ करने के लिए प्रशिक्षण दिया। मौके पर परियोजना की अन्वेषक डॉ अनुज्ञा भारती, अमित कुमार, सुरेश कुमार, केशव कुणाल, शिवम् सिंह, रौनक कुमार, बपन कुमार दास और अमित कुमार गुप्ता मौजूद रहे।

विवि के सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करतीं डीन।

शोरी मासिक के नौवें अंक का हुआ लोकार्पण

पूसा। हौसले और हिम्मत से लड़कियां किसी भी परिस्थितियों का सामना कर लक्ष्य प्राप्त कर सकती है। यह विचार उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिघरा के किशोरी मंच के सदस्यों ने व्यक्त की। विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं ने अपने मुश्किल दिनों को सुगम बनाने और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए आपसी विचारों का समन्वय किशोरी मंच के तहत विविध कार्यक्रम के माध्यम से किये। छात्राओं ने अपने नोडल शिक्षक मुकेश मृदुल के मार्गदर्शन में नेतृत्वकारी योजनाओं पर खुलकर बातचीत की। कार्यक्रम में जागरूकता के लिए हस्तलिखित 'किशोरी' मासिक के नौवें अंक का लोकार्पण किया गया। किशोरी मंच के संयोजक मुकेश कुमार मृदुल ने कहा कि प्रकाशित होने वाला मासिक अखबार छात्राओं ने हाथ से लिखकर तैयार किया है।

Hindustan 10-12-2025

डिजिटल एग्रीकल्चर को मिलेगी नई दिशा

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि अब आईटी, पटना के साथ मिलकर शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी खासकर डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में कार्य कर कृषि क्षेत्र को एक नई दिशा देगा।

इसको लेकर मंगलवार को विवि एवं आईटी पटना के अधिकारियों के बीच समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया गया। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय के निर्देश पर आयोजित समारोह में विवि की ओर से कुलसचिव डॉ. पीके प्रणव एवं आईटी, पटना के कुलसचिव डॉ. असित नारायण ने समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया। मौके पर कुलसचिव ने कहा कि इस समझौते से दोनों ही संस्थानों के वैज्ञानिक व शिक्षक एक प्लेटफार्म पर नवोन्मेशी अनुसंधान के लिए कार्य करेंगे। मौके पर कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय के डीन डॉ. रामसुरेश, एनआईटी के डॉ. एमपी सिंह, विवि के प्राध्यापक डॉ. एसके पटेल, डॉ. संजय कुमार, डॉ. प्रकाश चन्द्रा, डॉ. प्रभात कुमार व अन्य मौजूद थे।

पूसा कृषि विवि में एक दूसरे को समझौता पत्र देते कुलसचिव।

Hindustan 10-12-2025

आयोजन. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में कार्यक्रम

जैगरी केमेस्ट्री पर कार्य करने की जरूरत : डॉ सिंह

प्रशिक्षण

प्रतिनिधि, पूसा

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सोशल मीडिया व एग्रीकल्चर जर्नलिज्म विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि यह प्रशिक्षण प्रसार के क्षेत्र में कॉलोब्रेटिव कार्यक्रम है. पत्रकारिता को चौथा स्तंभ के रूप में विधायपालिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के साथ पहचान विकसित हो चुका है. अब कृषि कृषि पत्रकारिता को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है. सोशल मीडिया के फेक न्यूज से अपने और अपने संस्थान को बचाने की जरूरत है. एआई की मदद से कृषि स्टोरी या आर्टिकल को संवारकर किसानों तक पहुंचाने की व्यवस्था सुनिश्चित करने का प्रयास होना चाहिए. इससे पहले प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण सह कोर्स कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने आगत अतिथियों का स्वागत किया. कहा कि सोशल मीडिया के उपयोग से प्रसार के क्षेत्र में बेहतर कार्य करना संभव है. बतौर मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान कहा कि गन्ना के क्षेत्र में गुर प्रसंस्करण इकाई को बढ़ावा देते हुए जेगरी केमेस्ट्री पर कार्य करने की जरूरत है. सामान्य जेगरी का रंग साफ नहीं होता है. जबकि खाने वालों साफ जेगरी को ज्यादा पसंद करते हैं. हालांकि बिना साफ की हुई जेगरी ही ज्यादा स्वास्थ्यवर्धक होता है. सोशल मीडिया के बिना मानव का जीवन ही अधूरा है. सिस्टम या मोबाइल से नेट समाप्त होने पर खलबली सा महसूस होने लगता है.

मोबाइल से डाटा खत्म होने पर दुनिया से अलग हो जाते हैं. सोशल मीडिया के बदौलत मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक करीब लाखों किसान के पास मौसम पूर्वानुमान रिपोर्ट को एक क्लिक में पहुंचा देते हैं. बतौर एक्सपर्ट्स विस्तार शिक्षा डॉ अजय कुमार कहा कि प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में वर्ष 1959 में ही शुरुआत हुई थी. यह संस्थान प्रसार कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने का कार्य करती है. ऑन कैंपस एवं ऑफ कैंपस प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित किया गया है. देश के युवा युवतियों को खेती से जोड़ने में सोशल मीडिया और कृषि पत्रकारिता की महती भूमिका है. सफलतम किसानों की सक्सेस स्टोरी को दूसरे किसानों तक पहुंचाने में कृषि पत्रकारिता का सर्वोत्तम स्थान है. एक्सपर्ट्स सह वैज्ञानिक अनिल कुमार रोहिला ने विवि सहित प्रसार शिक्षा के वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि वजन बढ़ जाए तो क्या करें, तन का बढ़े तो व्यायाम, मन का बढ़े तो ध्यान, धन का बढ़े तो दान, एवं दिमाग का बढ़े तो प्रशिक्षण में भाग लेने की जरूरत होती है. संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ सौरभ तिवारी ने किया. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज, बिक्की, रामविलास आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar 10-12-2025

कैंपस अलर्ट

डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर हुआ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर

हस्ताक्षरित एमओयू आदान-प्रदान करते अधिकारी.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पांडेय के विचारों के अनुसार विश्वविद्यालय और एनआईटी पटना के बीच डिजिटल एग्रीकल्चर को लेकर समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया गया. एमओयू के अंतर्गत विश्वविद्यालय एनआइटी पटना के साथ शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में एवं विशेषकर डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में मिलकर महत्वपूर्ण कार्य कर सकेगा. विश्वविद्यालय की ओर से समझौता ज्ञापन पर कुलसचिव डॉ पीके प्रणव व एनआइटी पटना की ओर से कुलसचिव डॉ असित नारयण ने हस्ताक्षर किया. कुलसचिव डॉ प्रणव ने कहा कि इस समझौते से विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं वैज्ञानिक ओर एनआइटी पटना के शिक्षक एवं वैज्ञानिक एक प्लेटफार्म पर विभिन्न नवोन्मेषी अनुसंधान के लिए कार्य कर सकेंगे. समझौता ज्ञापन समारोह में विश्वविद्यालय के अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ रामसुरेश, एनआइटी पटना के डीन एकेडमिक डॉ एमपी सिंह, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ एसके पटेल, एनआइटी के डीन एलुमनाई एवं आउटरीच डा संजय कुमार, डॉ प्रकाश चंद्रा, डॉ प्रभात कुमार मौजूद थे.

Prabhat Khabar 10-12-2025

दैनिक जागरण 11.12.25 पेज 2

पाली हाउस या नेट हाउस में करें शिमला मिर्च की खेती

- कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली की ओर से आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का दूसरा दिन
- ग्रामीण युवक और युवतियों को उद्यानिकी फसलों की खेती के बारे में दी गई विस्तृत जानकारी

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली द्वारा आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन ग्रामीण युवक और युवतियों को उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती पर विस्तृत पूर्वक जानकारी दी गई। केवीके के वरीय विज्ञानी सह प्रधान डा. आरके तिवारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य युवाओं को अधिक लाभ देने वाली उद्यानिकी फसलों को आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़कर उनकी आय बढ़ाना है तथा उन्हें ग्रामीण स्तर पर ही आत्मनिर्भरता के लिए जागरूक करना है। प्रशिक्षण सत्र के दूसरे दिन, विशेषज्ञों ने विशेष रूप से उच्च मूल्य वाली सब्जियों की खेती पर ध्यान केंद्रित किया। केवीके के विशेषज्ञ डा. धीरू कुमार तिवारी और डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के उद्यान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. उदित कुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को शिमला मिर्च की उन्नत किस्में, मिट्टी की तैयारी, बुवाई की तकनीक, सिंचाई प्रबंधन और फसल सुरक्षा के बारे में विस्तार से बताया। डा. तिवारी ने शिमला मिर्च को एक उच्च मूल्य और कम समय वाली फसल बताते हुए कहा कि इसे पाली हाउस या नेट हाउस में उगाकर बेहतर गुणवत्ता और अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

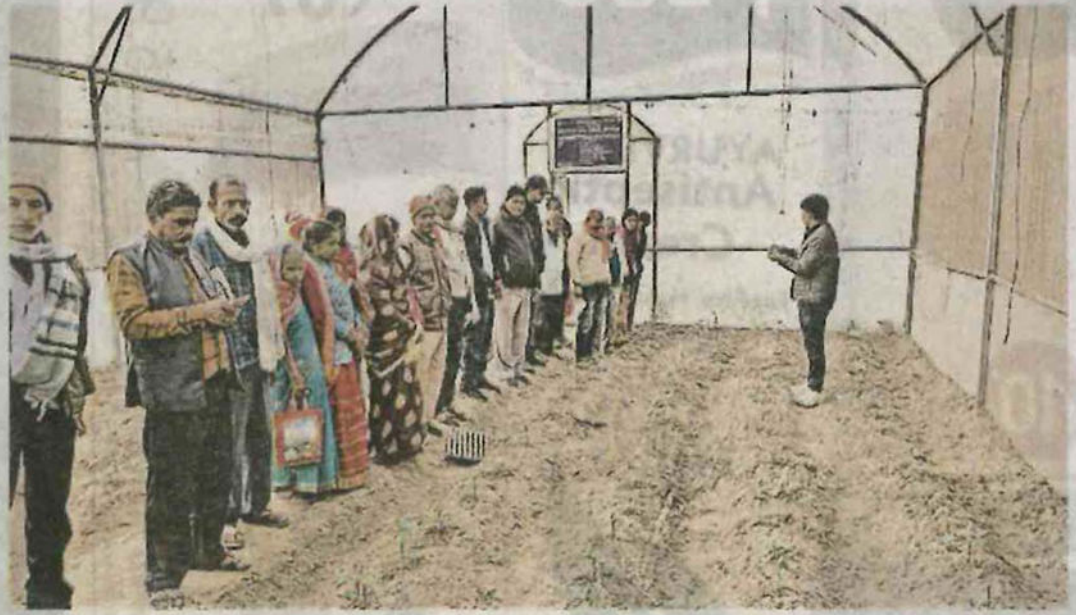

फील्ड पर प्रशिक्षण देते वैज्ञानिक • जागरण

इससे बाजार में किसानों को बेहतर दाम मिलेंगे। डा. उदित कुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को रोग और कीटों से बचाव के जैविक और रासायनिक तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे पारंपरिक खेती के साथ-साथ इस तरह की उच्च मूल्य वाली फसलों को अपनाकर न सिर्फ अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं, बल्कि अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 14 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
11 दिसंबर	24.0	10.0
12 दिसंबर	24.5	10.0
	दरभंगा	
11 दिसंबर	24.5	10.0
12 दिसंबर	24.5	10.3
	पटना	
11 दिसंबर	25.8	11.9
12 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 11.12.25 पेज 3

बदलाव. सड़कों पर वाहनों की रफ्तार पर कोहरे का ब्रेक लगा रहा

मौसम:सुबह में छाया घना कोहरा विजिबिलिटी 50 मीटर से हुई कम

प्रतिनिधि,समस्तीपुर

मौसम का मिजाजं बदल रहा है. ठंड भी बढ़ रही है. सुबह-शाम कोहरा छाने लगा है. बुधवार की सुबह जिला घने कोहरे में सिमटा रहा. गांव से लेकर शहर तक कोहरे के आगोश में रहा. कोहरे के कारण सुबह में सूर्योदय से पहले विजिबिलिटी 50 मीटर से भी कम रही. सड़कों पर वाहनों की रफ्तार पर कोहरे का ब्रेक लगा रहा. आगे सड़क दिखाई नहीं देने के कारण वाहनों की गति बहुत धीमी रही. वाहन चालक ऐलो लाइट व इंडिकेटर का सहारा लेकर वाहन चलाते दिखे. सबसे अधिक परेशानी सुबह में स्कूली वाहनों के चालकों को हुई. वाहन पर बच्चों को जाना ऐसे मौसम में खतरनाक होता है. वाहन चालक बहुत सावधानी और धीमी गति से स्कूली वाहनों को चलाते दिखे. वहीं कोहरे के बीच बस स्टॉप तक बच्चों को छोड़ने आये अभिभावक भी सड़क पर छाये घने कोहरे के कारण

सड़क पर छाया कोहरा.

चिंतित थे. वहीं कामकाजी महिलायें, पुरुष सुबह में ई-रिक्शा और ऑटो रिक्शा के साथ-साथ स्कूटी व बाइक से ड्यूटी पर जा रहे थे. उन्हें भी कोहरे के कारण परेशानी हुई. कोहरे के कारण वाहनों की रफ्तार पर ब्रेक और समय से ड्यूटी पहुंचने का दोहरा तनाव उनके चेहरे पर दिख रहा था. हालांकि धीरे-धीरे धूप निकलता गया और कोहरा कम होता गया. हालांकि शाम होते ही फिर कोहरे का असर दिखने लगा. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र के मुताबिक फिलहाल सुबह में मध्यम कोहरे छाये रहने की संभावना है. इधर कोहरा छाने और ठंड बढ़ने से किसान खुश हैं. इस तरह का मौसम गेहूं की फसलों के लिये फायदेमंद है. मौसम विभाग के मुताबिक पछिया हवा चलने के कारण ठंड में वृद्धि के आसार है. न्यूनतम तापमान के 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है. वहीं अधिकतम तापमान 23 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है.

भास्कर. 12.12.25 पेज 14

कार्यक्रम • ग्रामीण युवा-युवतियों के लिए चलाया जा रहा चार दिवसीय प्रशिक्षण, किया प्रोत्साहित

पूसा में प्रशिक्षणार्थियों को केवीके विशेषज्ञों ने ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए दिया प्रशिक्षण, उन्नत किस्मों की दी जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में ग्रामीण युवा-युवतियों के लिए चलाये जा रहे चार दिवसीय प्रशिक्षण के तीसरे दिन प्रशिक्षणार्थियों को उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती को अपनाने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। केवीके के विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने प्रशिक्षणार्थियों को खासकर ड्रैगन फ्रूट की खेती करने के बारे में बताया। उन्होंने कहा की कम क्षेत्रफल और कम पानी में भी ड्रैगन फ्रूट (कमलम) की खेती कर अच्छा से अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। उन्होंने ड्रैगन फ्रूट की उन्नत किस्में, रोपण की तकनीक (विशेषकर सीमेंट पिलर का उपयोग), खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई की सही विधि, फूल व फलन तथा फल तुड़ाई एवं विपणन (मार्केटिंग) के तरीकों पर विस्तार प्रकाश डाला। केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ड्रैगनफ्रूट के उच्च बाजार मूल्य और औषधीय गुणों के कारण इस फल की खेती को प्रशिक्षणार्थी अपनी आय बढ़ाने का एक बेहतरीन जरिया बना सकते हैं।प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने जिज्ञासा के साथ विशेषज्ञों से कई तरह के सवाल भी पूछे। डॉ. तिवारी ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल स्वरोजगार के लिए युवाओं को प्रेरित करेगा बल्कि इससे क्षेत्र में कृषि के विविधीकरण को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य किसानों विशेषकर युवाओं को पारंपरिक खेती के अलावे लाभप्रद व आधुनिक कृषि तकनीक व फसलों की खेती से उन्हें जोड़ना है। अधिक आय वाली फसलों की खेती से जहाँ युवाओं को अधिक आय प्राप्त होगी। वही वे ग्रामीण स्तर पर आत्मनिर्भर बनकर आत्मनिर्भरता के लिए अन्य युवाओं को जागरूक भी कर सकेंगे। तीसरे दिन के कार्यक्रम से पूर्व प्रशिक्षणार्थियों को उद्यान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. उदित कुमार के द्वारा शिमला मिर्च की खेती करने के अलावे शिमला मिर्च की उन्नत किस्में, मिट्टी की तैयारी, बुआई की तकनीक, सिंचाई प्रबंधन और फसल सुरक्षा के बारे में विस्तार से बताया गया था। शिमला मिर्च को एक उच्च मूल्य और कम समय वाली फसल बताते हुए डॉ. उदित कुमार ने शिमला मिर्च को पॉली हाउस या नेट हाउस में उगाकर बेहतर गुणवत्ता और अधिक उपज प्राप्त करने की बात भी प्रशिक्षणार्थियों को बताई थी।

प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी देते विशेषज्ञ डॉ.धीरू तिवारी।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 14 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
12 दिसंबर	24.0	10.0
13 दिसंबर	24.5	10.0
दरभंगा		
12 दिसंबर	24.5	10.0
13 दिसंबर	24.5	10.3
पटना		
12 दिसंबर	25.8	11.9
13 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 12-12-2025

शिमला मिर्च की खेती से पा सकेंगे बेहतर आय

पूसा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि,पूसा से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में ग्रामीण युवक और युवतियों को उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती पर बुधवार को प्रशिक्षण दिया गया। केन्द्र के प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने कहा कि उद्यानिकी फसलों से आधुनिक तकनीकों की मदद से आय बढ़ाया जा सकता है। इससे युवा पीढ़ी आत्मनिर्भर हो सकते हैं। केवीके के विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार और विवि उद्यान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ .उदित ने प्रशिक्षणार्थियों को शिमला मिर्च की उन्नत किस्में, मिट्टी की तैयारी, बुआई की तकनीक, सिंचाई प्रबंधन और फसल सुरक्षा के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

Hindustan 12-12-2025

कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) बिरौली में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती करने की किसानों को सलाह

आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), बिरौली द्वारा आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन ग्रामीण युवक और युवतियों ने उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की.

प्रशिक्षण में मौजूद प्रशिक्षणार्थी .

इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य किसानों, विशेषकर युवाओं को पारंपरिक खेती के अलावा लाभप्रद और आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ना है. प्रशिक्षण सत्र के तृतीय दिन, विशेषज्ञ द्वारा विशेष रूप से उच्च मूल्य वाली फलों की खेती पर ध्यान केंद्रित किया. केवीके के विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने ड्रैगन फ्रूट की खेती पर विस्तृत रूप से जानकारी दी. उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को बताया कि कम क्षेत्रफल और कम पानी में भी ड्रैगन फ्रूट (कमलम) की खेती से अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है. ड्रैगन फ्रूट की उन्नत किस्में, रोपण की तकनीक (विशेषकर सीमेंट पिलर का उपयोग), खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई की सही विधि, फूल एवं फलन और फल की तुड़ाई एवं विपणन (मार्केटिंग) के तरीकों पर प्रकाश डाला गया.

डॉ. तिवारी ने उच्च बाजार मूल्य और औषधीय गुणों के कारण इस फल की खेती को आय बढ़ाने का एक बेहतरीन माध्यम बताया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में युवाओं ने जिज्ञासा के साथ विशेषज्ञों से सवाल भी पूछे. यह प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल स्वरोजगार के लिए प्रेरित करेगा, बल्कि क्षेत्र में कृषि विविधीकरण को भी बढ़ावा देगा. प्रशिक्षण के दौरान 30 से अधिक किसानों की सहभागिता रही.

Prabhat Khabar 12-12-2025

भास्कर 13.12.25 पेज 14

खेती-किसानी • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के डॉ. संजय कुमार ने दी जानकारी

पोटैशियम की कमी केले की उपज को बुरी तरह प्रभावित करती है, पौधे पीले पड़ जाते हैं और फल भी हो जाता है खराब : डॉ. सिंह

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर/ पूसा

पोटैशियम की कमी केले की उपज को काफी बुरी तरह से प्रभावित करती है। इसकी कमी से केले की उपज काफी घट जाती है जिससे किसानों को प्रत्येक वर्ष व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंचता है। बिहार के केला उत्पादक किसान केले के बागों का वैज्ञानिक तकनीक से प्रबंधन कर पोटेशियम की कमी को दूर करते हुए केले से उच्च स्तरीय उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि केले की सफल खेती में पोटाश एक बहुत ही महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। उन्होंने बताया कि केला की सफल खेती के लिए किसान केले के प्रत्येक पौधे में 300 ग्राम नत्रजन, 50 ग्राम फास्फोरस एवं 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा की दर से जरूर डालें।

पोटेशियम की कमी से ग्रसित केले का पत्ता।

फास्फोरस की पूरी मात्रा को रोपाई के समय देना आवश्यक

नत्रजन एवं पोटाश जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों को किसान सामान्य तरीके से लगाएं गए केले के फसलों में 2 से 3 महीने के अंतर पर जबकि उत्तक संवर्धन से लगाएं केले के पौधों में प्रत्येक महीने 9 वें महीने तक निरंतर डालते रहें। इसके अलावे किसान प्रकंद द्वारा तैयार किये गए केले के फसल में प्रत्येक महीने तथा 12 महीने तक उर्वरकों का प्रयोग करते रहे। उन्होंने बताया कि केले के बागों में फास्फोरस की पूरी मात्रा को रोपाई से पूर्व या रोपाई के समय ही दे देना आवश्यक होता है।

बैंगनी भूरे रंग के पैच दिखाई पड़ने लगते हैं

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि पोटेशियम की कमी से केले की वृद्धि में उल्लेखनीय कमी आती है। इसकी कमी से पौधे पीले पर जाते है और पेटीओल्स यानी (डंठल) के आधार पर बैंगनी भूरे रंग के पैच दिखाई पड़ने लगते हैं। गंभीर मामलों में प्रकंद (कॉर्म) का केंद्र भूरा व पानी से लथपथ विघटित कोशिका संरचनाओं का क्षेत्र जैसा दिखने लगता है। इसकी कमी से फल खराब आकार के निकलने लगते हैं। उन्होंने बताया कि पोटेशियम की कमी से विभाजन द्वितीयक शिराओं के समानांतर विकसित होते हैं और लैमिना नीचे की ओर मुड़ जाती है। इसके अलावे पौधों की मध्य शिरा भी झुक जाती है और टूटकर गिर जाती है जिससे पत्ती का बाहर का आधा भाग नीचे लटक जाता है। उन्होंने बताया कि पोटेशियम की कमी को दूर करने के लिए केला उत्पादक किसान केले की खेती में खाद एवं उर्वरकों के निर्धारित मात्रा का प्रयोग समय समय पर करते रहे। पौधे के पीले पड़ने और पेटीओल्स यानी (डंठल) के आधार पर बैंगनी भूरे रंग के पैच दिखाई पड़ने की स्थिति में किसान साप्ताहिक अंतराल पर केसीएल के 2 प्रतिशत पर्ण का छिड़काव पौधों पर करें।

भास्कर 13-12-25 पेज 16

किसानों को सब्जियों में ग्राफ्टिंग तकनीक के बारे में दी गई जानकारी

आयोजन : कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली परिसर में दिया गया प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रशिक्षणार्थियों के साथ विशेषज्ञ व केवीके हेड।

केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में क्षेत्र के किसानों के लिए उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती के विषय पर चल रहा चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को संपन्न हो गया। चार दिनों तक चले इस प्रशिक्षण के दौरान केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी एवं उद्यान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. उदित कुमार के नेतृत्व में विशेषज्ञ डॉ. धीरू तिवारी, सुमित कुमार सिंह, विनीता कश्यप, निशा रानी आदि ने प्रशिक्षणार्थियों को उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलें जैसे शिमला मिर्च, स्ट्रॉबेरी, ड्रैगन फ्रूट, बेमौसमी सब्जी, मशरूम, विभिन्न तरह के फूल आदि के उत्पादन तकनीक से अवगत कराया। प्रशिक्षण के चौथे दिन केवीके के विशेषज्ञ डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को सब्जियों में ग्राफ्टिंग तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस तकनीक से सब्जियों की फसलें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बन सकती हैं और उत्पादन में भी सुधार हो सकता है। फल विशेषज्ञ डॉ. आशीष पांडा ने किसानों को भविष्य की सबसे लाभकारी फसलों में से एक एवोकैडो की खेती की अपार संभावनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बाजार में एवोकैडो की बढ़ती मांग और उच्च मूल्य को देखते हुए इसकी खेती किसानों के द्वारा शुरू करना एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।

सब्जियों में ग्राफ्टिंग तकनीक काफी लाभकारी

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली द्वारा ग्रामीण युवक और युवतियों के लिए आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती की तकनीकों पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण सत्र के अंतिम दिन, केवीके विशेषज्ञ डा. धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को सब्जियों में ग्राफ्टिंग तकनीक पर विस्तृत रूप से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस तकनीक से सब्जियों की फसलें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बन सकती हैं और उत्पादन में भी सुधार होता है। फल विशेषज्ञ डा. आशीष पांडा ने किसानों को भविष्य की सबसे लाभकारी फसलों में से एक एवोकैडो की खेती की अपार संभावनाओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बाजार में एवोकैडो की बढ़ती मांग और उच्च मूल्य को देखते हुए यह किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।

प्रमाण पत्र प्राप्त करते प्रशिक्षणार्थी साथ में अन्य लोग • जागरण

समापन और प्रमाण पत्र वितरण

समापन सत्र में केवीके के अध्यक्ष एवं प्रधान डा. आरके तिवारी ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। उन्होंने सभी किसानों को खेती में आधुनिक तकनीकों को अपनाने और उच्च मूल्य वाली फसलों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 35 किसानों की सक्रिय सहभागिता रही।

Dainik Jagran 13-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 17 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
13 दिसंबर	24.0	10.0
14 दिसंबर	24.5	10.0
दरभंगा		
13 दिसंबर	24.5	10.0
14 दिसंबर	24.5	10.3
पटना		
13 दिसंबर	25.8	11.9
14 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 13-12-2025

उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती समय की मांग

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली (केवीके) के तत्वाधान में ग्रामीण युवक-युवतियों के लिए आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को संपन्न हो गया।

इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती की तकनीकों पर विस्तृत जानकारी ली। जिससे उनकी आय में वृद्धि की संभावनाएं बढ़ सके। प्रशिक्षण सत्र के अंतिम दिन, केवीके के विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किसानों को सब्जियों में ग्रैफ्टिंग तकनीक पर विस्तृत रूप से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस तकनीक से

■ उच्च मूल्य वाली फसलों पर चार दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

सब्जियों की फसलें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बन सकती हैं। साथ ही उत्पादन में भी सुधार होता है। फल विशेषज्ञ डॉ. आशीष पांडा ने किसानों को भविष्य की सबसे लाभकारी फसलों में से एक एवोकैडो की खेती की संभावनाओं पर विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि बाजार में एवोकैडो की बढ़ती मांग और उच्च मूल्य को देखते हुए यह किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। समापन सत्र में केवीके के प्रमुख डॉ. आरके तिवारी ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देते हुए संबोधित किया। उन्होंने किसानों को खेती में आधुनिक तकनीकों को अपनाने और उच्च मूल्य वाली फसलों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया।

केवीके में प्रशिक्षु को प्रमाण-पत्र देते केन्द्र प्रमुख डॉ .आरके तिवारी।

Hindustan 13-12-2025

कृषि पत्रकारिता विषय पर प्रशिक्षण संपन्न

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के सोशल मिडिया और कृषि पत्रकारिता विषय पर 4 दिवसीय प्रशिक्षण शुक्रवार को संपन्न हो गया। समापन सत्र में विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा, प्रशिक्षण आयोजक डॉ. विनिता शतपति समेत निलोखेरी (कर्नाल विवि) के वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार, डॉ. अनिल कुमार रोहिला, नीलम गौड़ आदि मौजूद थे।

Hindustan 13-12-2025

कृषि पत्रकारिता समाज का आइना : डॉ झा

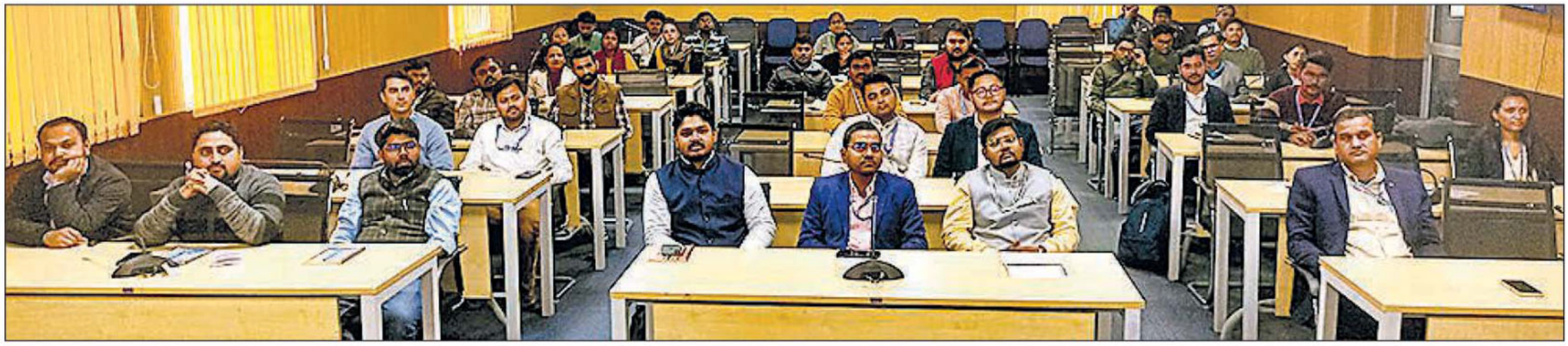

समापन सत्र में मौजूद प्रतिभागी.

प्रतिनिधि, पूसा

समाज में आईना के रूप में सोशल मीडिया एवं कृषि पत्रकारिता अपनी पहचान विकसित कर चुका है. पत्रकारिता बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है. खासकर किसानों की फसलों से संबंधित समस्याओं एवं उसके वैज्ञानिकी निदान को उनके खेतों से उठाने में कृषि पत्रकारिता की महती भूमिका होती है. यह बातें डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सोशल मीडिया और कृषि पत्रकारिता विषय पर चल रहे चार दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र में प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कही.

निदेशक डॉ झा ने प्रतिभागियों से आग्रह करते हुए कहा कि फिलवक्त किसान स्थानीय पत्रकारिता के माध्यम से विवि के तकनीकों एवं उन्नतशील नवीनतम प्रभेद के बीजों से अवगत हो रहे हैं. कृषि पत्रकारिता से तो विशेषरूप से कृषि पर आधारित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे.

निलोखिरी के वैज्ञानिक डा अजय कुमार ने कहा कि आप सभी अगले प्रशिक्षण में नए टॉपिक पर ज्ञानवर्धन करने के उद्देश्य से नीलोखिरी पहुंचकर भाग लें. वैज्ञानिक डॉ अनिल कुमार रोहिला ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान का फीडबैक लिया. संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक सह ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने किया. मौके पर मास मीडिया बामेती नीलम गौर के अलावा प्रतिभागियों में सुरेश, सूरज सहित विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों में पदस्थापित एसएमएस सहित पीजी के छात्र-छात्रा थे.

Prabhat Khbara 13-12-2025

किसानों के लिए एवोकैडो की खेती बेहतर विकल्प : डॉ पांडा

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में ग्रामीण युवक-युवतियों के लिए आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हो गया. इसमें प्रतिभागियों ने उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसलों की खेती की तकनीकों पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की. जिससे उनकी आय में वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेंगी. प्रशिक्षण सत्र के चौथे एवं अंतिम दिन केवीके के

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक .

विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किसानों को सब्जियों में ग्रैफ्टिंग तकनीक पर विस्तृत रूप से जानकारी दी. उन्होंने बताया कि इस तकनीक से सब्जियों की फसलें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी बन सकती हैं. र उत्पादन में भी सुधार होता है. फल विशेषज्ञ डॉ. आशीष पांडा ने किसानों को भविष्य की सबसे लाभकारी फसलों में से एक एवोकैडो की खेती की अपार संभावनाओं के बारे में बताया. उन्होंने कहा कि बाजार में एवोकैडो की बढ़ती मांग और उच्च मूल्य को देखते हुए यह किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है. समापन के मौके पर प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र वितरण किया गया. समापन सत्र में केवीके के अध्यक्ष एवं प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने प्रतिभागियों को संबोधित किया. उन्होंने सभी किसानों को खेती में आधुनिक तकनीकों को अपनाने और उच्च मूल्य वाली फसलों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया. कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को केवीके प्रमुख द्वारा प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने का प्रमाण पत्र वितरित किया गया. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 35 किसानों की सक्रिय सहभागिता रही.

Prabhat Khbara 13-12-2025

भा-कर 14.12.25 पेज 15

खेती : कृषि विवि पूसा के डॉ. एसके सिंह ने दी मिर्च की फसल में लगने वाले विल्ट रोग के प्रबंधन की जानकारी, वैज्ञानिक तकनीक से कम ख़र्च में बचाव संभव

अर्क नीम और लहसुन का तेल भी फ्यूजेरियम विल्ट रोग के प्रबंधन के लिए प्रभावी उपाय

भास्कर न्यूज़ | पूसा

मौजूदा समय में खेतों में मिर्च की फसल लगी है और किसान मिर्च से उत्पादन भी प्राप्त कर रहे हैं। मिर्च की फसल में लगने वाला विल्ट रोग काफी खतरनाक और विनाशकारी रोग होता हैं। इस रोग से ग्रसित मिर्च के पौधे बंझे हो जाते है जिससे उत्पादन बुरी तरह प्रभावित हो जाता हैं। मिर्च उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर ससमय विल्ट रोग का प्रबंधन करते हुए मिर्च से अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि मिर्च सबसे महत्वपूर्ण सब्जी और मसाला फसलों में से एक है। मिर्च सोलेनेसी परिवार और जीनस कैप्सिकम से संबंधित है। मिर्च को हरे व पके दोनों तरह के फल में उगाया जाता है जो एक अनिवार्य मसाला भी है। यह पाचन उत्तेजक के साथ-साथ इसका प्रयोग सॉस, चटनी, अचार व अन्य प्रकार के भोजन में स्वाद और रंग के लिये किया जाता है। भारत दुनिया में मिर्च का अग्रणी उत्पादक और उपभोक्ता दोनों देश है। हालांकि मिर्च कई तरह के रोगों और कीटों के लिए अतिसंवेदनशील भी माना जाता है जो इसके उत्पादन में प्रमुख बाधा बन जाती हैं। इन रोगों में से एक रोग फुसैरियम विल्ट है जो पिछले एक दशक में फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम के कारण मिर्च की खेती में एक गंभीर समस्या बनकर उभरी है। भारत में फुसैरियम ऑक्सीस्पोरम और फुसैरियम सोलेनी फुसैरियम की सबसे प्रचलित प्रजातियां हैं जो मिर्च के मुरझाने की बीमारी से जुड़ी हुई हैं। इस रोग के रोगजनक आमतौर पर शुष्क मौसम की स्थिति और रोग के विकास के लिए अनुकूल मिट्टी की नमी के साथ ही मिट्टी से पैदा होते है। इस रोग के लक्षणों में पत्ती एपिनेस्टी, हरित हीनता, परिगलन, विलगन और मिर्च के पेड़ों का मुरझाना शामिल हैं। यह रोग मिर्च के पौधें के विकास की सभी अवस्थाओं में यथा फूल आने और फल लगने दोनों अवस्था में अधिकतम गंभीरता के साथ प्रकट होता हैं। उन्होंने बताया कि विल्ट एक मृदा जनित रोग है जिसे रसायनों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं किया जा सकता है। यह रोग दूषित मिट्टी के खेतों से बाहर निकलने, हवाओं, सिंचाई के दौरान पानी का इस खेत से उस खेत में हो जाने आदि के द्वारा बीजाणुओं के प्रसार से फैलता है।

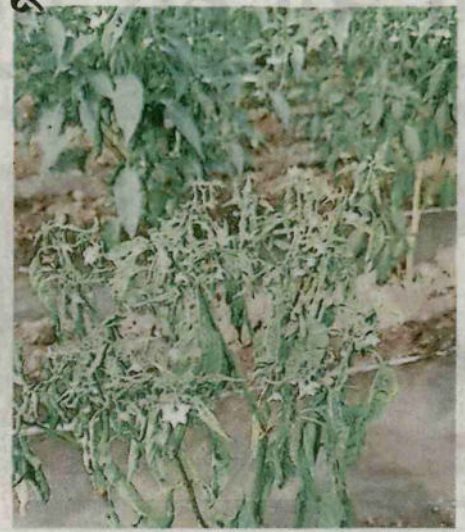

मिर्च के पौधे पर विल्ट रोग का प्रकोप।

समय से प्रबंधन करने से नहीं होगा पौधे को नुकसान

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि दुनिया भर में मिर्च के जर्मप्लाज्म में विल्ट रोगजनक के खिलाफ अभी तक सीमित प्रतिरोधी स्रोत ही उपलब्ध हैं। इसी कारण से इस रोग को शश्य, जैविक और रासायनिक साधनों द्वारा और प्रतिरोध के लिए जर्मप्लाज्म-लाइनों की स्क्रीनिंग द्वारा ही प्रबंधित किया जा सकता है। किसान मिर्च के रोगरोधी किस्में जैसे अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पंत सी-2, जवाहर 218 आदि को लगाकर इस रोग से छुटकारा पा सकते है। उन्होंने बताया कि ट्राइकोडर्मा विरिडे और ट्राइकोडर्मा हर्जियानम को मिर्च में फ्यूजेरियम विल्ट के खिलाफ शक्तिशाली बायोकंट्रोल एजेंट के रूप में पाया गया है। इसके अलावे रोगग्रस्त पौधों पर अर्क नीम और लहसुन का तेल भी फ्यूजेरियम विल्ट रोग के प्रबंधन के लिए एक प्रभावी उपाय हैं।

विल्ट रोग का रासायनिक प्रबंधन व एकीकृत रोग प्रबंधन कर सकते हैं

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि रासायनिक प्रबंधन अक्सर पौधे की बीमारी की समस्या से निपटने का सबसे व्यवहार्य साधन होता है। यह अक्सर किसी भी अन्य उपाय की तुलना में अधिक किफायती और प्रभावी होता है। उन्होंने बताया कि किसान मिर्च की बुआई से पहले कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी या कैप्टान 50 डब्लूपी या थीरम 75 डीएस जैसे कवकनाशी दवाओं के 2.5 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा मिर्च के बीज को उपचारित करने के बाद ही इसकी बुआई करें इसके अलावे कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी (0.1 प्रतिशत) या बेनेट (0.05प्रतिशत) या कैप्टान (0.2 प्रतिशत) जैसी दवाओं के घोल में भी बीज को डुबोकर रोपाई करने से मुरझाने वाले इस बीमारी को प्रबंधित किया जा सकता हैं। एकीकृत रोग प्रबंधन में किसान कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) में सीडलिंग की रूट डिप सहित विभिन्न उपचारों का एकीकरण, वर्मीकम्पोस्ट के अलावा कवकनाशी दवाएं जैसे साफ (कार्बेन्डाजिम और मैनकोजेब) या रोको एम की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पौधों की ड्रेंचिंग कर तथा ट्राइकोडर्मा विरिडे का मिट्टी में प्रयोग कर मिर्च में लगने वाले फ्यूजेरियम विल्ट रोग को काफी हद तक प्रबंधित कर सकते हैं।

भास्कर 14.12.25 पेज 15

दीक्षारंभ कार्यक्रम एक सराहनीय कदम

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में नवनामांकित छात्रों के लिए दीक्षारंभ

भास्कर न्यूज | पूसा

छात्रों को संयुक्त रूप से सर्टिफिकेट देते दोनों विवि के कुलपति।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नव नामांकित छात्रों के लिए एक माह से चल रहा दीक्षारंभ समारोह शनिवार को प्रदक्षिणा कार्यक्रम के साथ ही संपन्न हो गया। इस अवसर पर समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति डॉ.पी के बाजपेयी ने कहा कि कुलपति डॉ. पी एस पांडेय की संकल्पना दीक्षारंभ एक सराहनीय कदम है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों में समग्र और बहुआयामी विकास हो सकेगा। उन्होंने कहा इस कार्यक्रम की विशेषता के कारण ही अब इसे हरेक विश्वविद्यालय में लागू कर दिया गया है। उन्होंने नई शिक्षा नीति की विशेषता के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और कहा कि इस विश्वविद्यालय में छात्र को केंद्र में रखकर नीति बनाई जा रही है। उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों के अनुशासन की भी तारीफ की। छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि दीक्षारंभ की संकल्पना 2018 में इजरायल दौरे के दौरान उनके मन में आई थी। उसी समय से वे इसके विभिन्न विषयों एवं आयामों के बारे में सोचते रहते थे। जब वे इस विश्वविद्यालय के कुलपति बने तो उन्होंने तुरंत उसे लागू कर दिया। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ का एक उद्देश्य देश एवं समाज के प्रति समर्पित भाव एवं ईमानदारी से कार्य करना है। कुलपति ने छात्रों को प्रदक्षिणा कार्यक्रम के विभिन्न आयामों के बारे में भी जानकारी दी और उन्हें बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया। कुलपति ने प्रदक्षिणा कार्यक्रम के दौरान सभी छात्रों को ईमानदार व कर्त्वयनिष्ठ बनने के साथ-साथ देश को 2047 तक विकसित बनाने की शपथ भी दिलाई। कुलपति ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान समर्पित भाव से काम करने के लिए कमिटी के सभी सदस्यों की तारीफ की।

मेडल व सर्टिफिकेट देकर पुरस्कृत किया

कार्यक्रम के दौरान कुलपति ने सभी क्लब, स्पोर्ट्स एवं अन्य विषयों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को मेडल एवं सर्टिफिकेट देकर पुरस्कृत भी किया। डॉ.रितंभरा सिंह ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान किये गये विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त रूप से जानकारी दी।विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि कुलपति के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने देश भर में अपनी अनूठी पहचान बनाई है जिस कारण आज इस विश्वविद्यालय से जुड़े सभी लोगों को गर्व का अहसास होता है। मात्स्यिकी विभाग के प्रोफेसर डॉ. शिवेंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मौके पर डीन फिशरीज डॉ.पी पी श्रीवास्तव आदि थे।

दीक्षारंभ से छात्रों का बहुआयामी विकास

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में शनिवार को दीक्षारंभ का समापन प्रदक्षिणा समारोह के साथ संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति डा. पीके वाजपेयी ने कहा कि विश्वविद्यालय की संकल्पना दीक्षारंभ एक सराहनीय कदम है। इस कार्यक्रम से छात्रों में समग्र एवं बहुआयामी विकास हो सकेगा। डा. वाजपेयी ने कहा इस कार्यक्रम की विशेषता के कारण ही अब इसे हरेक विश्वविद्यालय में लागू कर दिया गया है। उन्होंने नई शिक्षा नीति की विशेषता के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। कहा कि इस विश्वविद्यालय में छात्र को केंद्र में रखकर नीति बनाई जा रही है। उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों के अनुशासन की भी तारीफ की। संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि दीक्षारंभ की संकल्पना 2018 में इजरायल दौरे के दौरान में उनके मन में आई थी। उसी समय से वे इसके विभिन्न विषयों एवं आयामों के बारे में सोचते रहते

कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य अतिथि एवं छात्र वैज्ञानिक • जागरण

थे । जब वे इस विश्वविद्यालय के कुलपति बने तो उन्होंने उसे तुरंत लागू कर दिया। कहा कि दीक्षारंभ का एक उद्देश्य देश एवं समाज के प्रति समर्पित भाव एवं ईमानदारी से कार्य करना है। कुलपति ने छात्रों को प्रदक्षिणा कार्यक्रम के विभिन्न आयामों के बारे में भी जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान सभी क्लब , स्पोर्ट्स एवं अन्य विषयों में श्रेष्ठ छात्र छात्राओं को मेडल एवं सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान डा. ऋतंभरा सिंह ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान किये गये विभिन्न कार्यक्रम के बारे में संक्षिप्त रूप से जानकारी दी। कुलसचिव डॉ पी के प्रणव ने अतिथियों का स्वागत किया। मात्स्यिकी प्रोफेसर डा. शिवेंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान डीन फिशरीज डा. पी पी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक अनुसंधान डा. ए के सिंह, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डा. रामदत्त, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. कुमार राज्यवर्धन आदि उपस्थित थे।

Dainik Jagran 14-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 17 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ़ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
14 दिसंबर	24.0	10.0
15 दिसंबर	24.5	10.0
	दरभंगा	
14 दिसंबर	24.5	10.0
15 दिसंबर	24.5	10.3
	पटना	
14 दिसंबर	25.8	11.9
15 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 14-12-2025

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में 20 दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम संपन्न

छात्रों का चहुंमुखी विकास करने को दीक्षारंभ बेहतर शुरूआत: कुलपति

शनिवार को विवि में प्रदक्षिणा समारोह के दौरान विजेता ट्रॉफी के साथ विद्यार्थी।

कार्यक्रम

विवि में प्रदक्षिणा समारोह को संबोधित करते जयप्रकाश विवि के कुलपति व अन्य।

पूसा, निज संवाददाता। जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के कुलपति डॉ. परमेन्द्र कुमार बाजपेयी ने कहा कि छात्रों के समग्र एवं बहुआयामी विकास में दीक्षारंभ बेहतर शुरुआत है। यह छात्रों में छुपी प्रतिभा को निखारने के साथ देश को समृद्ध बनाने व राष्ट्र प्रथम की भावना को विकसित करने में अहम भूमिका निभायेगा।

शनिवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के नवनामांकित छात्रों के लिए आयोजित 20 दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम के समापन के मौके पर आयोजित प्रदक्षिणा समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने नई शिक्षा नीति की चर्चा करते हुए कहा कि यह ज्ञान बढ़ोतरी के साथ लोगों की सोच में बदलाव लाने वाला है। यह एक अनोखी शिक्षा प्रणाली है। जो अपनी उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था से विश्व में अपनी पहचान बनाने में अहम योगदान देगा। उन्होंने कहा कि नई नीति व्यक्तिगत की भावना को कम करने, सामाजिक उन्मुखीकरण एवं राष्ट्र को सशक्त करने वाला है। उन्होंने बहु विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया। कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि दीक्षारंभ का मूलमंत्र छात्रों में छुपी प्रतिभा में निखार लाना, ईमानदारी, आत्मविश्वास, अनुशासन, देश के प्रति समर्पण भाव विकसित करना है। इस कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने लक्ष्य के अनुरूप कार्य कर गौरवान्वित किया है। उन्होंने कहा कि ऋषि और कृषि के देश में ज्ञान अर्जन के साथ देश के प्रति जागरूकता जरूरी है। उन्होंने कहा कि छात्रों को ली गई शपथ को आत्मसात करने की जरूरत है। इस दौरान चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। मौके पर आयोजन सचिव डॉ. ऋतंम्बरा ने कार्यक्रम की संक्षिप्त विवरणी प्रस्तुत की। स्वागत कुलसचिव डॉ.पीके प्रणव, संचालन डॉ.कुमारी अंजनी, माही व कल्पना एवं धन्यवाद डॉ.शिवेन्द्र कुमार ने दिया। मौके पर डीएसडब्लू डॉ.रमण त्रिवेदी, निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा, डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव, निदेशक डॉ.रामदत्त, डॉ.कुमार राज्यबर्द्धन समेत डीन-डायरेक्टर, वैज्ञानिक व छात्र मौजूद थे।

ओवर ऑल उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए टीसीए ढोली पुरस्कृत

पूसा। इस दौरान ओवर ऑल उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए टीसीए ढ़ोली की स्वेता सिंह प्रथम, बेसिंक साईंस की अंजना कुमारी-द्वितीय एवं टीसीए ढ़ोली की अनुजा सिंह ने तृतीय पुरस्कार पाया। इसके अलावा पुरस्कार पाने वालों में मधुबनी पेंटिंग में प्रिंस राज, स्वीट प्रीती प्रज्ञान, स्वपनिला मिश्रा, योगा में संचिता, रूपम, अंजना, अंशुमान, अंकित, रोशन, पर्थ पाण्डेय, महक, सैकेत मंडल, निशांत, हरीष, अंजली, सव्यता, आकाश ज्योति, समयुक्ता, धनुश्री, निधि, उषा, अनन्नी, कृति, सशांक, सालनी, श्रेसधारी, स्नेहा श्री, स्वेता सिंह, शिवांगी, देवकरण, अंजली, स्नेहा प्रसाद, मनीष, कुलदीप, देवांशु, आदर्श, कृष्णा, बीएल अंशुमान, निशांत, यशवंत, मींग टॉक, मृदूल सिंह, किशलय, आंकाक्षा प्रिया, विजय प्रताप, शिवानी जाट, हरिओम प्रकाश, अनुष्का वी, सुमित कुमार, गिरी के, काजल मांझी, अनुष्का समीर सिंह, कीर्तन कुमार, प्रिंस चौधरी आदि शामिल थे।

Hindustan 16-12-2025

किसानों तक जानकारी पहुंचाने की जरूरत : डॉ सतपथी

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित निदेशालय प्रसार शिक्षा में विस्तार शिक्षा संस्थान नीलोखेड़ी के सहयोग से सोशल मीडिया एवं कृषि पत्रकारिता विषय पर चार दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कृषि संचार को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ने व किसानों तक त्वरित जानकारी पहुंचाने की दिशा में यह प्रशिक्षण अत्यंत सार्थक सिद्ध हुआ.

अंतिम सत्र में कृषि ज्ञान वाहन का अवलोकन करते वैज्ञानिक.

कार्यक्रम के दौरान कृषि ज्ञान वाहन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा. प्रतिभागियों को वाहन के माध्यम से किसानों तक पहुंचाये जाने वाले तकनीकी वीडियो, वैज्ञानिक संदेश, फसल प्रबंधन तकनीक, पशुपालन सुझाव व कृषि योजनाओं के प्रचार-प्रसार के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई. इस प्रशिक्षण में केवीके के विभिन्न विषयों कृषि विज्ञान, उद्यानिकी, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी, सामाजिक विज्ञान एवं प्रसार शिक्षा से जुड़े कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया. सभी प्रतिभागियों ने पूरे कार्यक्रम के दौरान कृषि ज्ञान वाहन के साथ व्यावहारिक सत्र, डिजिटल कंटेंट निर्माण, फील्ड कम्युनिकेशन तकनीक और सोशल मीडिया हैंडलिंग का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया. यह जानकारी प्रसार शिक्षा के विभागाध्यक्ष सह नोडल पदाधिकारी डॉ बिनीता सतपथी ने दी. विभागाध्यक्ष डॉ सतपथी ने कहा कि वाहन की अब तक की उपलब्धियों, बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी पहुंच तथा चतुर्थ कृषि रोडमैप के अंतर्गत महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि डिजिटल एग्री-एक्सटेंशन के इस मॉडल ने किसानों में जागरूकता बढ़ाने व तकनीकी ज्ञान को सुलभ बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है. कार्यक्रम के समापन पर निदेशक, प्रसार शिक्षा ने ईईआई निलोखेड़ी, अधिकारियों, प्रशिक्षण टीम एवं सभी प्रतिभागियों को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया.

Prabhat Khabar 14-12-2025

दीक्षारम्भ और प्रदक्षिणा से सभी छात्रों में समग्र विकास संभव : डॉ पीके बाजपेयी

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह का समापन प्रदक्षिणा समारोह के साथ हुआ. इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति डॉ पीके बाजपेयी ने कहा कि कुलपति डॉ पीएस पांडेय की संकल्पना दीक्षारंभ एक सराहनीय कदम है. उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से छात्रों में समग्र एवं बहुआयामी विकास हो सकेगा. डॉ बाजपेयी ने कहा इस कार्यक्रम की विशेषता के कारण ही अब इसे हरेक विश्वविद्यालय में लागू कर दिया गया है. उन्होंने नई शिक्षा नीति की विशेषता के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी. कहा कि इस विश्वविद्यालय में छात्र को केंद्र में रखकर नीति बनाई जा रही है. उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों के अनुशासन की भी तारीफ की. छात्रों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि दीक्षारंभ की संकल्पना 2018 में इजरायल दौरे के दौरान में उनके मन में आई थी. उसी समय से वे इसके विभिन्न विषयों एवं आयामों के बारे में सोचते रहते थे. जब वे इस विश्वविद्यालय के कुलपति बने तो उन्होंने उसे तुरंत लागू कर दिया. उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ का एक उद्देश्य देश एवं समाज के प्रति समर्पित भाव एवं ईमानदारी से कार्य करना है. कुलपति डॉ पांडेय ने छात्रों को प्रदक्षिणा कार्यक्रम के विभिन्न आयामों के बारे में भी जानकारी दी. उन्हें बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया. कुलपति डॉ पांडेय ने प्रदक्षिणा कार्यक्रम के दौरान सभी छात्रों को ईमानदार, कर्तव्य निष्ठा एवं देश को 2047 तक विकसित बनाने की शपथ भी दिलाई. कुलपति डॉ पांडेय ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के दौरान समर्पित भाव से काम करने के लिए कमेटी के सभी सदस्यों की तारीफ की. कहा कि डा रितंभरा के संयोजन में सभी लोगों ने बहुत अच्छा कार्य किया है. सभी क्लब, स्पोर्ट्स एवं अन्य विषयों में श्रेष्ठ छात्र-छात्राओं को मेडल एवं सर्टिफिकेट से पुरस्कृत किया गया. संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया. मात्स्यिकी के प्रो डॉ शिवेंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया. कार्यक्रम के दौरान डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ रत्नेश कुमार झा, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ रामदत्त, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन थे.

छात्रा को प्रमाण पत्र देते मुख्य अतिथि.

Prabhat Khabar 14-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 17 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
15 दिसंबर	24.0	10.0
16 दिसंबर	24.5	10.0
	दरभंगा	
15 दिसंबर	24.5	10.0
16 दिसंबर	24.5	10.3
	पटना	
15 दिसंबर	25.8	11.9
16 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 15-12-2025

कार्यक्रम • क्लाइमेट रेजिलिएंट इंडेक्स या जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर कार्यशाला आयोजित

भास्कर 16.12.25 पेज 12

जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में वैज्ञानिकों की टीम कर रही बेहतर कार्य : कुलपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में क्लाइमेट रेजिलिएंट इंडेक्स या जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद आईएआरआई नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक प्रसार डॉ.आर एन पदारिया एवं पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि जलवायु लचीलापन सूचकांक यह बताता है कि कोई देश जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति कितना मजबूत या कमजोर है। जलवायु लचीलापन सूचकांक जलवायु परिवर्तन के जोखिम के सूचकांक को मापकर यह बताता हैं की देश और वहां का समुदाय चरम मौसमी घटनाओं (जैसे तूफान, बाढ़, लु, ओलावृष्टि) आदि से कितने प्रभावित हुए और उनसे उबरने में वह देश कितना सक्षम हैं। उन्होंने कहा कि रिलायंस फाउंडेशन के आर्थिक सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह सूचकांक काफी महत्वपूर्ण है। भविष्य के कृषि के लिए जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती है और इससे निपटने के लिए अभी से ही उपाय किये जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार के सहयोग से विश्वविद्यालय जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में वैज्ञानिकों की एक बड़ी टीम से कार्य करा रही है जिसका फायदा आने वाले समय में पूरे देश को होगा।भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद आईएआरआई नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक प्रसार डॉ.आर एन पदारिया ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस प्रविधि से इस सूचकांक को विकसित किया है वह काफी उपयुक्त है। उन्होंने कहा कि कुलपति के नेतृत्व में विकसित किये गये इस सूचकांक से देश भर में जलवायु अनुकुल कृषि को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान कर रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के परिसर में पुसा विश्वविद्यालय में हो रहे विकास कार्यों की काफी चर्चा होती है। उन्होंने कहा कि कुलपति जहाँ भी जाते हैं वहां की पूरी कार्य संस्कृति को बदल देते हैं।

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति।

सूचकांक से नीति निर्माताओं और किसानों को काफी सहूलियत होगी

निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह ने कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिकों को जलवायु लचीलापन सूचकांक के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विकसित किये गये इस सूचकांक से नीति निर्माताओं और किसानों को काफी सहूलियत होंगी। निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा ने कहा कि इस सूचकांक को इस तरह से विकसित किया गया है कि कोई भी किसान जलवायु परिवर्तन के विभिन्न मानकों को आसानी से समझ सकता है। प्रदान नई दिल्ली के विशेषज्ञ मानस सत्पथी ने इस सूचकांक के उपयोग के बारे में जानकारी दी। रिलायंस फाउंडेशन के प्रभात झा ने रिलायंस फाउंडेशन के कारपोरेट रिस्पांसिबिलिटी कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। उन्होंने रिलायंस फाउंडेशन ग्रामीण विकास के लिए क्या क्या कार्य कर रही है इसके बारे में भी सभी लोगों को विस्तार से जानकारी दी। डॉ.एस पी लाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर कालेज आफ फिशरीज के डीन डॉ. पी पी श्रीवास्तव, कालेज आफ बेसिक साइंस के डीन डॉ.अमरेश चंद्रा, स्कूल आफ़ एग्री-बिजनेस के निदेशक डॉ.रामदत्त, डॉ.घनश्याम झा, डॉ.रवीश चंद्रा, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

जागरण 16.12.25 पेज 13

प्रिय अन्नदाता

ड्रोन से कीटनाशक छिड़काव में विशेषज्ञों की सलाह जरूरी

प्रिय अन्नदाता

आज के आधुनिक कृषि में ड्रोन की तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। गन्ना, धान, फलदार वृक्ष और सब्जियों में इसका उपयोग समय और श्रम बचाने के साथ-साथ फसल पर दवा के समान वितरण को सुनिश्चित करता है। सरकार भी ड्रोन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि ड्रोन द्वारा कीटनाशक और फफूंदनाशक छिड़काव करते समय सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि कृषि में ड्रोन का गलत या लापरवाहीपूर्ण प्रयोग किसानों, आमजन और पर्यावरण सभी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। डॉ. सिंह के अनुसार छिड़काव से पहले ऑपरेटर और सहायक कर्मियों को दस्ताने, मास्क और सुरक्षात्मक वस्त्र पहनना चाहिए। दवा के सीधे संपर्क से बचना बेहद आवश्यक है। ड्रोन केवल अनुकूल मौसम में उड़ाएँ। तेज हवा या बारिश की स्थिति में दवा बहकर बेअसर हो जाती है। उन्होंने बताया कि छिड़काव से पहले ड्रोन का परीक्षण अवश्य करें। नोजल से दवा का समान रूप से निकलना, बैटरी और जीपीएस का ठीक से काम करना जरूरी है। जलस्रोतों, घरों और संवेदनशील क्षेत्रों के आसपास 50 से 100 मीटर का बफर जोन बनाएं ताकि रसायन के बहाव से प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम न हो।

डॉ. संजय सिंह पादप रोग विभाग के हेड, पूसा, विवि।

ड्रोन से छिड़काव में सुरक्षा और मौसम पर दें ध्यान

- छिड़काव से पहले ड्रोन का परीक्षण जरूरी।
- ड्रोन से स्प्रे में दवा की सही खुराक और ऊँचाई पर दें विशेष ध्यान।
- प्रशिक्षित ऑपरेटर ही ड्रोन से करें दवा का छिड़काव।
- छिड़काव के बाद ड्रोन और नोजल की जाँच करें ताकि रिसाव की संभावना न रहे।

आप खेती किसानी से जुड़ी किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 94318 83416 पर संपर्क करें।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 17 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। दिन में आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
16 दिसंबर	24.0	10.0
17 दिसंबर	24.5	10.0
	दरभंगा	
16 दिसंबर	24.5	10.0
17 दिसंबर	24.5	10.3
	पटना	
16 दिसंबर	25.8	11.9
17 दिसंबर	25.8	11.9

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 16-12-2025

जलवायु लचीलापन सूचकांक होता सहायक

संस, जागरण ● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर सोमवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि जलवायु लचीलापन सूचकांक यह बताता है कि कोई देश या क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति कितना मजबूत या कमजोर है। जलवायु जोखिम सूचकांक यह मापता है कि देश और समुदाय तूफान, बाढ़, लू जैसी चरम मौसमी घटनाओं से कितने प्रभावित होते हैं और उनसे उबरने की उनकी क्षमता कितनी है। जलवायु परिवर्तन आने वाले समय में कृषि के लिए एक बड़ी चुनौती बनने जा रहा है, ऐसे में इससे निपटने के लिए अभी से ठोस उपाय किए जाने की जरूरत है। कुलपति ने बताया कि बिहार

कार्यशाल को संबोधित करते कुलपति ● जागरण

सरकार के सहयोग से विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों की एक बड़ी टीम के साथ जलवायु परिवर्तन को लेकर लगातार कार्य कर रहा है, जिसका लाभ पूरे देश को मिलेगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक (प्रसार) डा. आर. एन. पदारिया ने कहा कि जिस वैज्ञानिक प्रविधि से विश्वविद्यालय ने इस सूचकांक को विकसित किया है, वह अत्यंत उपयुक्त और उपयोगी है।

कार्यक्रम में निदेशक अनुसंधान डा. ए. के. सिंह ने जलवायु लचीलापन सूचकांक के विभिन्न आयामों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि क्षेत्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विकसित यह सूचकांक नीति निर्माताओं के साथ-साथ किसानों के लिए भी काफी सहायक सिद्ध होगा। वहीं निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा ने कहा कि इस सूचकांक को इस तरह तैयार किया गया है कि किसान जलवायु परिवर्तन से जुड़े विभिन्न मानकों को आसानी से समझ सकें। रिलायंस फाउंडेशन के प्रभात झा ने फाउंडेशन द्वारा किये गए कार्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में डा. एस. पी. लाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

Dainik Jagran 16-12-2025

जलवायु लचीलापन सूचकांक की भूमिका अहम : वीसी

कार्यशाला

विवि में जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर कार्यशाला आयोजित

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि कृषि में जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती है। इससे निपटने के लिए राज्य सरकार के सहयोग से विवि के वैज्ञानिकों की बड़ी टीम कार्य कर रही है। इससे पूरे देश को फायदा होगा। वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का। कुलपति ने कहा कि जलवायु लचीलापन सूचकांक देश के जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति स्थिति से अवगत कराता है। यह देश और समुदाय के तूफान, बाढ़, लू जैसे मौसमीय घटनाओं के जलवायु जोखिम के सूचकांक को मापता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक प्रसार डॉ. आरएन पदारिया ने कहा कि विवि से विकसित सूचकांक काफी उपयुक्त है। निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि क्षेत्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विकसित किये गये इस सूचकांक से नीति निर्माताओं और किसानों को काफी सहुलियत मिलेगी। स्वागत करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि विकसित सूचकांक से किसान जलवायु परिवर्तन के विभिन्न मानकों को आसानी से समझ सकते हैं। प्रदान, नई दिल्ली के विशेषज्ञ मानस सत्पथी ने सूचकांक एवं रिलायंस फाउंडेशन के प्रभात झा ने रिलायंस फाउंडेशन के कारपोरेट रिस्पांसिबिलिटी कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा की। संचालन मृदुल शर्मा एवं धन्यवाद डॉ.सुधानंद प्रसाद लाल ने किया। मौके पर डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ. अमरेश चंद्रा, निदेशक डॉ.रामदत्त, डॉ.शिवेन्द्र कुमार, डॉ.ए.सत्तार, डॉ.ऋतंम्बरा, डॉ.सत्यप्रकाश, डॉ.सुमित कुमार, डॉ.घनश्याम झा, डॉ.रविश चंद्रा, डॉ.कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे।

सोमवार को कृषि विवि में कुलपति को सम्मानित करते निदेशक अनुसंधान व अन्य।

Hindustan 16-12-2025

फाइनल इंडेक्स को भारत के 15 अलग-अलग राज्यों में करेगा इस्तेमाल: लाल

जानकारी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सोमवार को जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर कार्यशाला के दौरान वैज्ञानिक सह प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर डॉ सुधानंद प्रसाद लाल ने बताया कि शोध का अपेक्षित परिणाम आने पर विकसित जलवायु अनुकूल सूचकांक को पूरे भारत वर्ष में कृषि विकास के पैमाने के रूप में किया जा सकेगा.

यह शोध कार्य भारत के नीति निर्धारकों, योजनाकारों एवं कृषि प्रसार कार्यकर्ताओं और विशेषज्ञों के लिए मार्गदर्शी होगा. डॉ लाल ने अपनी टीम के साथ इस सूचकांक को तैयार किया है. रिलायंस फाउंडेशन के कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) का केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के एक बार इंडेक्स फाइनल हो जाने के बाद, इसे रिलायंस फाउंडेशन भारत के 15 अलग-अलग राज्यों में इस्तेमाल करेगा. जहां उनके क्लाइमेट रेज़िलिएंट इंटरवेंशन चल रहे हैं. ताकि उनके इंटरवेंशन एरिया की साल-दर-साल प्रोग्रेस को ट्रैक किया जा सके.

यूजर फ्रेंडली इंडेक्स डेटा को कम से कम 12वीं पास पढ़े-लिखे और ट्रेंड एन्यूमरेटर आसानी से इकट्ठा कर सकते हैं. क्योंकि यह सिंपल है. इसमें फोटोग्राफिक एवं वीडियोग्राफिक सबूत भी होते हैं.

यह डेवलप किया गया इंडेक्स पूरे भारत में समान रूप से मान्य होगा. क्योंकि डेटा इंटरवेंशन और नॉन-इंटरवेंशन दोनों राज्यों से इकट्ठा किया गया है.

Prabhat Khabar 16-12-2025

कृषि विश्वविद्यालय में क्लाइमेट रेजिलिएंट इंडेक्स विषय पर कार्यशाला

कृषि के लिए जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती, इसे समझें : कुलपति

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

कुलपति को सम्मानित करते डीआर डा एके सिंह .

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में क्लाइमेट रेजिलिएंट इंडेक्स या जलवायु लचीलापन सूचकांक विषय पर कार्यशाला हुई. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि जलवायु लचीलापन सूचकांक बताता है कि कोई देश जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति कितना मजबूत या कमजोर है. जलवायु जोखिम सूचकांक मापता है कि देश और समुदाय चरम मौसमी घटनाओं से कितने प्रभावित होते हैं. उनसे उबरने में कितने सक्षम हैं. उन्होंने कहा कि रिलायंस फाउंडेशन के आर्थिक सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह सूचकांक काफी महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि भविष्य के कृषि के लिए जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती है. इससे निपटने के लिए अभी से उपाय करने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि बिहार सरकार के सहयोग से विश्वविद्यालय जलवायु परिवर्तन को लेकर वैज्ञानिकों की एक बड़ी टीम के साथ कार्य कर रही है. इससे पूरे देश को फायदा होगा. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद आईएआरआई नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक प्रसार डॉ आरएन पदारिया ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस प्रविधि से इस सूचकांक को विकसित किया है वह काफी उपयुक्त है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान कर रहा है. दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में विश्वविद्यालय में हो रहे विकास कार्यों की काफी चर्चा होती है. विश्वविद्यालय को निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने जलवायु लचीलापन सूचकांक के विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. कहा कि क्षेत्रीय मानकों को ध्यान में रखकर विकसित किये गये इस सूचकांक से नीति निर्माताओं और किसानों को काफी सहूलियत होगी. निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश झा ने कहा कि इस सूचकांक को इस तरह से विकसित किया गया है कि कोई भी किसान जलवायु परिवर्तन के विभिन्न मानकों को आसानी से समझ सकता है. नई दिल्ली के विशेषज्ञ मानस सतपथी ने इस सूचकांक के उपयोग के बारे में जानकारी दी. रिलायंस फाउंडेशन के प्रभात झा ने रिलायंस फाउंडेशन के कारपोरेट रिस्पांसिबिलिटी कार्यक्रम को बारे में जानकारी दी. संचालन छात्रा मृदुल शर्मा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ सुधानंद प्रसाद लाल ने किया.

Prabhat Khabar 16-12-2025

किसान गेहूं की पिछात किस्मों की बोआई 20 दिसंबर से पहले करें, होगा फायदा

प्रतिनिधि,समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र के द्वारा किसानों के लिये जारी समसमायिक सुझाव में कहा गया कि किसान गेहूं की पिछात किस्मों की बोआइ 20 दिसंबर से पहले संपन्न कर लें. उसके बाद बोआई करने से ऊपज में भारी कमी होती है. गेहूं की पिछात किस्मों के लिये एचयूडब्लू-234, डब्लूआर-544, डीबीडब्लू-39, एचआई-1563, राजेन्द्र गेहूं-1, एचडी- 2967 तथा एचडब्लू- 2045 किस्में इस क्षेत्र के लिये अनुशंसित है. प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से पहले उपचारित करें. पुनः बीज को क्लोरपायरिफॉस 20 ईसी दवा का 8 मिली प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. बोआई के पूर्व खेत की की जुताई में 40 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 20 किलोग्राम पाटोस प्रति हेक्टेयर डालें. जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देती हो वैसे क्षेत्रे के किसान किसान खेत की अन्तिम जुताई में जिंक सल्फेट-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. छिटकबां विधि से बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 150 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बोआई के लिये 125 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें. गेहूं की फसल में पहली सिंचाई के बाद (रोपाई के 20 से 25 दिन में) कई प्रकार के खर पतवार उग आते हैं. जिनका विकास काफी तेजी से होता है और जो गेहूं की बढ़वार को प्रभावित करती है. इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टयर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें. चना की बोआई अतिशीघ्र सम्पन्न करने का पग्रास करें. चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-256, केपीजी-59(उदय), केडब्ल्यू आर-108, पंत जी-186 तथा पूसा-372 अनुशंसित है. बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मिली प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें. पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पांच पैकेट प्रति हेक्टयेर) से उपचारित कर बोआई करें. गत माह रोप की गयी आलू की फसल में निकौनी करें. निकौनी के बाद नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर आलू में मिट्टी चढ़ा दें,साथ ही आवश्यकतानसुार हल्की सिंचाई करें. टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करें. इसके पिल्लू फल में घुसकर अन्दर से खाकर पूरी तरह फल को नष्ट कर देते हैं, जिससे प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है और वे खाने लायक नहीं रहते,पूरी फसल बर्बाद हो जाती है. फल छेदक कीट से बचाव हेतु खेतों में पक्षी बसेरा लगायें कीट का प्रकोप दिखाई देने पर सर्वप्रथम कीट से क्षतिग्रस्त फलों की तुराई कर नष्ट कर दें. एवं उसके बाद स्पीनेसेड 48 ईसी/1 मिली प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें. सब्जियों वाली फसल में निकौनी करें. प्याज के 50-55 दिनों के तैयार पौध की रोपाई करें.इसके लिए खेत को समतल कर छोटी-छोटी क्यारियां बनावें. क्यारियों का आकार, चौड़ाई 1.5 से 2.0 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार 3–5 मीटर रखें. प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकासी के लिए नाल आवश्य बनावें. पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी, पौध से पौध की दूरी 10 सेमी पर रोपाई करें. खेत की तैयारी में 15 से 20 टन गोबर की खाद, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम फॉस्फोरस, 80 किलोग्राम पाटोस तथा 40 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टयेर का व्यवहार करें. पिछात प्याज की पौधशाला से खरपतवार निकाल कर हल्की सिंचाई करें. लहसुन की फसल में निकाई- गुड़ाई करें तथा कम अवधि के अन्तराल में नियमित रुप से सिंचाई करें. लहसुन की फसल में कीट-व्याधि की निगरानी करें.

Prabhat Khabar 16-12-2025

संरक्षित खेती तकनीक पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | जालौ

कृषि विज्ञान केंद्र मे मंगलवार को वरीय वैज्ञानिक सह केवीके अध्यक्ष डॉ दिव्यांशु शेखर की अध्यक्षता में मृदा एवं जल अभियंत्रण विशेषज्ञ ई. निधि कुमारी ने संरक्षित खेती तकनीक पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत की। कार्यक्रम समन्वयक ई. निधि ने बताया कि आने वाले पांच दिनों में किसानों को संरक्षित खेती तकनीक के महत्व एवं लाभ तथा खुले खेत बनाम संरक्षित खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। साथ ही संरक्षित खेती तकनीक में प्रयोग होने वाली संरचनाएं जैसे कि पॉलीहाउस,नेट हाउस,लो टनल,हाई टनल,शेड नेट हाउस एवं इसमें लगने वाली लागत, सब्सिडी एवं सरकारी योजनाएं के बारे में जानकारी दी जाएगी। ई निधि ने बताया कि इस तकनीक से सब्जियों की खेती से फायदा होगा।

Dainik Bhaskar 17-12-25

उपलब्धि • राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शिक्षकेत्तर गतिविधियों के लिए मिला पुरस्कार

देशभक्ति में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए पूसा विवि को मिला सम्मान

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा को विजय दिवस के अवसर पर वेटरन्स इंडिया संस्थान भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड, एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शिक्षकेत्तर गतिविधियों के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए नई दिल्ली में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया हैं। इस पुरस्कार के चयन टीम में देश के कई प्रख्यात न्यायाधीश, सेना के वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षाविद एवं प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। पुरस्कार समारोह के दौरान राष्ट्रीय मुल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एवं राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड के अध्यक्ष डॉ.अनिल सहस्त्रबुद्धि ने कहा कि केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने देश भर के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखाई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का दीक्षारंभ कार्यक्रम एक अनूठा कार्यक्रम है। इससे छात्रों में समग्र व्यक्तित्व का विकास होने के साथ-साथ उनमें देश भक्ति की भावना और राष्ट्र निर्माण में उन्हें समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा आदि मिलती है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ को अब सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया गया है लेकिन आवश्यक यह है कि विश्वविद्यालय इसके मूल भावना को समझें और सिर्फ खानापूर्ति के लिए दीक्षारंभ का आयोजन न करें। डॉ. सहस्त्रबुद्धि ने कहा कि डॉ. पीएस पांडेय का नाम दीक्षारंभ के साथ जुड़ गया है और जब भी इसका नाम लिया जायेगा डा. पांडेय का नाम भी आयेगा। उन्होंने कहा कि डॉ. पांडेय को देश दीक्षारंभ की संकल्पना देने के लिए हमेशा याद रखेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने डिजिटल एग्रीकल्चर सहित अन्य क्षेत्रों में भी देश को नई राह दिखाई है लेकिन दीक्षारंभ इन सबसे उपर है और अनूठा है। दिल्ली में यह सम्मान स्वयं कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने ग्रहण किया। संबोधन में कहा कि इजरायल यात्रा के दौरान उन्होंने दीक्षारंभ के बारे में विचार किया था। उस समय से वे लगातार इस बारे में सोचते रहे और जब उन्हें कुलपति बनने का मौका मिला तो उसे तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को इस तरह का सम्मान मिलना गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि विवि को यह सम्मान विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों के कारण ही मिल सका हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी लोग जिस टीम भावना से कार्य करते हैं उससे उन्हें और भी अधिक श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इधर कुलसचिव डॉ.पी के प्रणव, निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह, डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा समेत विभिन्न पदाधिकारियों ने भी कुलपति के साथ साथ एक दूसरे को बधाई दी। कुलसचिव डॉ.पी के प्रणव ने कहा कि आने वाले समय में विश्वविद्यालय कुलपति के नेतृत्व में और नई ऊंचाईयों को छूयेगा और ख्याति अर्जित करेगा। बता दें कि नई दिल्ली में विजय दिवस के अवसर पर इस सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था। इसमें भारत सरकार के रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ, देश के कई न्यायाधीश, सेना के वरिष्ठ अधिकारी, प्रख्यात शिक्षाविद् एवं वरिष्ठ प्रशासनिक पदाधिकारी मौजूद थे। बताया जाता हैं कि वर्ष 1971 में पाकिस्तान पर भारत की विजय मिलने के याद में हरेक साल विजय दिवस मनाया जाता है।

नई दिल्ली में अवार्ड व सम्मान प्राप्त करते कुलपति।

Dainik Bhaskar 17-12-25

शैक्षणिक गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए कुलपति को किया गया सम्मानित

- चयन टीम में प्रख्यात न्यायाधीश, शिक्षाविद, सेना व प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी शामिल
- टीम भावना से कार्य करने से और भी अधिक श्रेष्ठ कार्य करने की मिलती है प्रेरणा

नई दिल्ली में सम्मान ग्रहण करते विश्वविद्यालय के कुलपति● जागरण

संस. जागरण● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति को विजय दिवस पर सम्मानित किया गया। वेटरन्स इंडिया संस्थान, भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीयता, देश भक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए सम्मान दिया गया। पुरस्कार के लिए चयन टीम में देश के प्रख्यात न्यायाधीश, सेना के वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षाविद एवं प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। पुरस्कार समारोह के दौरान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एवं राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड के अध्यक्ष डा. अनिल सहस्त्रबुद्धि ने कहा कि कुलपति डा. पीएस पांडेय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने देश भर के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखाई है। विश्वविद्यालय का दीक्षारंभ कार्यक्रम एक अनूठा कार्यक्रम है जिसमें छात्रों में समग्र व्यक्तित्व विकास के साथ साथ उनमें देश भक्ति की भावना और राष्ट्र निर्माण में उन्हें समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा देता है। दीक्षारंभ को अब सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया गया है लेकिन आवश्यक है कि विश्वविद्यालय इसके मूल भावना को समझें और सिर्फ खानापूर्ति के लिए दीक्षारंभ का आयोजन न करें। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि इजरायल यात्रा के दौरान दीक्षारंभ के बारे में विचार किया था। कुलपति बनने का मौका मिलने पर तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को इस तरह का सम्मान मिलना गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों के कारण ही संभव हो सका है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी लोग जिस टीम भावना से कार्य करते हैं उससे उन्हें और भी अधिक श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। कुलसचिव डा. पीके प्रणव, निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा ने बधाई दी।

Dainik Jagran 17-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 21 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा . ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
17 दिसंबर	24.5	10.0
18 दिसंबर	24.5	10.5
	दरभंगा	
17 दिसंबर	24.5	10.5
18 दिसंबर	25.0	10.5
	पटना	
17 दिसंबर	25.8	11.5
18 दिसंबर	25.8	11.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 17-12-2025

मंगलवार को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में अवार्ड लेते वीसी।

कृषि विवि को मिला प्राईड ऑफ नेशन अवार्ड-2025

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा को प्राईड ऑफ नेशन अवार्ड-2025 से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान विवि को राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से बढ़ावा देने के लिए दिया गया है। मंगलवार को नई दिल्ली में विजय दिवस के अवसर पर वेटरन्स इंडिया, भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय प्रत्ययन बोड एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह के दौरान अतिथियों ने विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय को अवार्ड देकर सम्मानित किया। विवि से मिली जानकारी के अनुसार इस पुरस्कार का चयन देश के कई न्यायाधीश, सेना के वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षाविद एवं प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों की टीम ने किया है। मौके पर राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एवं राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड के अध्यक्ष डॉ.अनिल सहस्त्रबुद्धि ने कहा कि कुलपति के नेतृत्व में विवि देश भर के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखा रहा है। कुलपति ने इसे विवि के सामुहिक प्रयास का नतीजा बताते हुए विवि की उपलब्धियां गिनाये।

Hindustan 17-12-2025

प्रभात खबर 17.12.25 पेज 4

स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने की जरूरत : डॉ सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

सभागार में मौजूद प्रतिभागी.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सब्जियों में एकीकृत कीट प्रबंधन में नई प्रगति विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में नई-नई तरह का बीमारियां फसलों को प्रभावित करता है.

सब्जियों में डालने वाले कैमिकल मानवीय जीवन के लिए खतरा बना हुआ है. ऑफ सीजन सब्जियों की खेती ज्यादा लाभकारी होता है. कीट को बिना मारे हुए सब्जियों का बेहतर उत्पादन लेने का तकनीक को प्रशिक्षण में शामिल किया गया है. प्रशिक्षण सत्र में बतौर मुख्य अतिथि निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि वातावरण एवं स्वास्थ्य को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने की जरूरत है. कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ यू. मुखर्जी ने कहा कि समेकित कीट प्रबंधन सदियों पूर्व से आ रहा है. रासायनिक खाद एवं कीटनाशी का अंधाधुंध प्रयोग से भूमि की उर्वरकता क्षीण होती जा रही है. नियंत्रक डा पीके झा ने कहा कि लोगों के तरह कीट-व्याधियों को भी सब्जी अच्छा लगता है. भौतिक रासायनिक एवं जैविक विधि से समानांतर रूप से प्रयोग करने पर बेहतर उत्पादन संभव है. मौके आत्मा पटना से जुड़े 60 किसान एवं एटीएम सहित संबंधित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी मौजूद थे.

प्रभात खबर

17.12.25
पेज 4

कैंपस अलर्ट

सर्वश्रेष्ठ केंद्रीय कृषि विवि अवार्ड से सम्मानित हुआ आरएयू

सम्मान ग्रहण करते कुलपति डॉ पीएस पांडेय.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा को विजय दिवस पर वेटरन्स इंडिया संस्थान भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शिक्षकेत्तर गतिविधियों के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ योगदान के लिए नई दिल्ली में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया. मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद एवं राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड के अध्यक्ष डॉ अनिल सहस्त्रबुद्धि ने कहा कि कुलपति डॉ पीएस पांडेय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने देश भर के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखाई है. कुलसचिव डॉ पीके प्रणव, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, डीन पीजीसीए डा मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश कुमार झा ने एक-दूसरे को बधाई दी. कुलसचिव ने कहा कि आने वाले समय में विवि कुलपति डॉ पांडेय को नेतृत्व में नई ऊंचाइयों को छूयेगा.

RPCAU awarded for its patriotic initiatives

B K Mishra | TNN

Patna: Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa, has been conferred with the award for "best contribution in nationality, patriotism, and nation-building through co-curricular activities" by Veterans India, in collaboration with All India Council for Technical Education (AICET), National Board of Accreditation (NBA), and Association of Indian Universities (AIU).

The award was presented to the university's vice-chancellor P S Pandey at a ceremony held in New Delhi on Tuesday in recognition of the university's outstanding efforts in promoting national integration and patriotism among its students. The selection committee comprised eminent judges, senior military officers, educationists, and administrative officials.

Giving away the ward, Anil Sahasrabudhe, chairman of the National Assessment and Accreditation Council (NAAC) and National Board of Accreditation (NBA), praised the VC's initiative of launching the "Deekshārambh" programme, an initiative that instils patriotism among students.

The Times of India 17-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 21 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
18 दिसंबर	23.0	10.0
19 दिसंबर	23.5	10.0
	दरभंगा	
18 दिसंबर	23.5	10.0
19 दिसंबर	23.5	10.5
	पटना	
18 दिसंबर	24.8	11.5
19 दिसंबर	24.8	11.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 18-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 21 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ और शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में कुहासा छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 24-25 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 9 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
19 दिसंबर	23.0	10.0
20 दिसंबर	23.5	10.0
	दरभंगा	
19 दिसंबर	23.5	10.0
20 दिसंबर	23.5	10.5
	पटना	
19 दिसंबर	24.8	11.5
20 दिसंबर	24.8	11.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 19-12-2025

सब्जियों में डालने वाले कैमिकल जीवन के लिए खतरा

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी.

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में सब्जियों में एकीकृत कीट प्रबंधन विषय पर चल रहे तीन दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र प्रमाण पत्र वितरण के साथ हुआ. अध्यक्षता करते हुए वैज्ञानिक डॉ संजीव कुमार ने कहा कि सब्जियों में डालने वाले कैमिकल मानवीय जीवन के लिए खतरा बना हुआ है. ऑफ सीजन सब्जियों की खेती ज्यादा लाभकारी होता है. कीट को बिना मारे हुए सब्जियों का बेहतर उत्पादन लेने का तकनीक को प्रशिक्षण में शामिल किया गया है. समेकित कीट प्रबंधन सदियों पूर्व से आ रहा है. रासायनिक खाद एवं कीटनाशी का अंधाधुंध प्रयोग से भूमि की उर्वरता क्षीण होती जा रही है. नियंत्रक डा पीके झा ने कहा कि लोगों के तरह कीट व्याधियों को भी सब्जी अच्छा लगता है. भौतिक रासायनिक एवं जैविक विधि से समानांतर रूप से प्रयोग करने पर बेहतर उत्पादन संभव है. मौके टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की सहित आत्मा पटना से जुड़े 60 किसान एवं एटीएम सहित संबंधित वैज्ञानिक एवं कर्मचारी मौजूद थे.

Prabhat Khabar 19-12-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 24 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते है। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में कुहासा छा सकता है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है। ठंड में बढ़ोतरी की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
20 दिसंबर	21.0	11.0
21 दिसंबर	21.5	11.0
	दरभंगा	
20 दिसंबर	21.5	11.0
21 दिसंबर	21.5	11.5
	पटना	
20 दिसंबर	23.8	12.6
21 दिसंबर	23.8	12.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 20-12-2025

रक्तदान सर्वश्रेष्ठ दान : कुलपति

पूसा, निज संवाददाता । डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के डस्पिेंसरी में शुक्रवार को स्वैचिछक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 40 रक्तवीरो ने रक्तदान किया। रक्तदान केन्द्र सदर अस्पताल, विवि डस्पिेंस्त्री, अनुमंडलीय अस्पताल एवं पीएचसी, पूसा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित समारोह का उदघाटन कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने दीप प्रज्जवलित कर की।

बाद में उन्होंनें रक्तदान कर रहे लोगों को उनके सहयोग के लिए सराहना की। कुलपति ने कहा कि रक्तदान मानवता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने वाला नेक और नस्विार्थ कार्य है। जरूरतमंदों के लिए एक बूंद खून भी जीवन रक्षक बन सकता है। चिकत्सिको ने कहा कि रक्तदान महाकल्याण का कार्य है। लोगों को समय-समय पर रक्तदान करना चाहिए। डीएस ने बताया कि इस दौरान विवि के नवनामांकित छात्रो का उत्साह व जागरूकता अन्य लोगों को प्रेरित करने वाला रहा। इस दौरान रक्तवीरो को प्रमाण-पत्र भी दिये गये। मौके पर डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ.अमरेश चन्द्रा, डॉ.मयंक राय, अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ.राकेश कुमार सिंह, डस्पिेंसरी के सीएमओ डॉ.बच्चा बाबू आदि मौजूद थे।

विवि के डस्पिेंसरी में रक्तदान शिविर का दीप प्रज्जवलित कर उदघाटन करते वीसी,।

Hindustan 20-12-2025

स्वच्छता को लेकर केविके के वैज्ञानिकों ने लिया संकल्प

शपथ लेते वैज्ञानिक.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में प्रधानमंत्री के स्वच्छता मिशन के संचालन को लेकर वैज्ञानिक एवं कर्मियों ने शपथ लिया. इस कड़ी में वरिष्ठ वैज्ञानिक सह केवीके प्रमुख डा आरके तिवारी ने बताया कि संस्थान के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न गांवों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है. इस दौरान लोगों से कचरा रखने के लिए निर्धारित डस्टबिन का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया. मौके पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक एवं कर्मी मौजूद थे.

Prabhat Khabar 20-12-2025

भास्कर 21.12.25 पेज/5

कार्यक्रम • आलू एवं मक्के की अंतरवर्ती खेती के विषय पर एक दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण

बढ़ती जनसंख्या और घटती जोत के बीच आज अंतरवर्ती खेती बनी समय की मांग : डॉ. तिवारी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए आलू एवं मक्के की अंतर्वर्ती खेती के विषय पर एक दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रसार कार्यकर्ताओं के माध्यम से किसानों को जागरूक कर कृषि के क्षेत्र में विविधीकरण और कम लागत में किसानों को अधिक मुनाफा हासिल कराना हैं। आलू एवं मक्का की अंतरवर्ती खेती विषय पर केंद्रित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. रेड्डी फाउंडेशन से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं में भाग लिया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आर.के. तिवारी ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या और घटती जोत के बीच अंतरवर्ती खेती आज समय की मांग बन चुकी है। उन्होंने जोर देते हुए कहा की आलू और मक्का का संयोजन एक लाभप्रद प्रणाली है। इससे न केवल प्रति इकाई क्षेत्र में उत्पादन बढ़ता है बल्कि यह किसानों के लिए एक बीमा की तरह काम करता हैं। यदि किसी कारणवश एक फसल प्रभावित होती है तो दूसरी फसल से लागत की भरपाई हो जाती है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक डॉ. कौशल किशोर ने मक्का की खेती पर तकनीकी जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि मक्का की बुआई के समय कतारों के बीच की दूरी का प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है ताकि आलू की फसल को पर्याप्त धूप और स्थान मिल सके। उन्होंने उत्तम प्रभेदों के बीजों के चयन और खरपतवार नियंत्रण के वैज्ञानिक तरीकों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला। उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने आलू की खेती के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि आलू के साथ मक्का उगाने से मिट्टी की नमी बनी रहती है। उन्होंने आलू में लगने वाले रोगों, विशेषकर झुलसा रोग से बचाव और कंदों के विकास के लिए आवश्यक उर्वरकों के संतुलित प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आलू और मक्का दोनों फसलें कम पानी चाहती हैं। इसलिए एक बार में अधिक पानी देने की जगह पर हल्की सिंचाई को नियमित अंतराल पर करना ठीक रहता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया कि वे किसानों को उन्नत किस्मों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें। प्रशिक्षण सत्र के दौरान डॉ. रेड्डी फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने वैज्ञानिकों के साथ सीधा संवाद भी किया। संवाद के दौरान फील्ड में आने वाली समस्याओं जैसे कि सिंचाई प्रबंधन और कीट नियंत्रण पर विशेषज्ञों ने प्रसार कार्यकर्ताओं के सभी शंकाओं का समाधान किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. तिवारी व अन्य।

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

लीची बाग का शुरू करें वैज्ञानिक प्रबंधन

21.12.25 पेज 15

भास्कर न्यूज | पूसा

लीची उत्पादक किसान लीची से अच्छी फलन और गुणवत्तापूर्ण फल प्राप्त करने के लिए दिसंबर माह से ही लीची के बागों का प्रबंधन शुरू कर दें। लीची के बागों का वैज्ञानिक प्रबंधन लीची के फलन के लिए काफी महत्वपूर्ण होता है। लीची के फलों के लौंग आकार के होने तक बागों में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इसकी जानकारी लीची उत्पादक किसानों हर हाल में होनी चाहिए। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि भारत में 92 हजार हेक्टेयर में लीची की खेती हो रही है जिससे कुल 686 हजार मिट्रिक टन उत्पादन प्राप्त होता है। बिहार में इस आंकड़े पर गौर करें तो बिहार में लीची की खेती 32 हजार हेक्टेयर में होती है जिससे 300 मिट्रिक टन लीची फल का उत्पादन प्राप्त होता है। बिहार में लीची की उत्पादकता 8 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि राष्ट्रीय उत्पादकता 7.4टन प्रति हेक्टेयर है। उन्होंने कहा कि लीची को फलों की रानी कहा जाता है। इसे प्राइड ऑफ बिहार भी कहते है। कुल लीची उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा बिहार का है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि दिसंबर का महीना लगभग समाप्ति की तरफ है तथा जनवरी माह की शुरुआत होने वाली है। इस समय हमारे लीची उत्पादक किसान यह जानने के लिए उत्सुक होंगे की उन्हें जनवरी माह में लीची के बागों में क्या करना चाहिए क्या नही करना चाहिए। किसानों के इस उत्सुकता को ध्यान में रखते हुए कृषि वैज्ञानिक उन्हें सलाह देते है की लीची उत्पादक किसान लीची के बागों की बहुत हल्की गुड़ाई खासकर साफ सफाई के दृष्टिकोण से कर सकते है। इस समय बागों में सिंचाई बिल्कुल न करें अन्यथा नुकसान हो सकता है। उन्होंने बताया कि लीची के बाग में माइट से ग्रसित शाखाओं को काटकर किसान एक जगह एकत्र कर लें तथा उसे जला दे। लीची के बगीचे में अच्छी फलन एवं उत्तम गुणवत्ता के लिये मंजर आने के सम्भावित समय से तीन माह पहले तक लीची के बाग में सिंचाई न करें तथा बाग में कोई भी अंतर फसल न लगाएं।

ठंड का आलू, टमाटर, मटर, मसूर, सरसों, धनिया, सौंफ के पौधों पर अधिक असर

लीची के पत्तो पर लगी माइट बीमारी

जरूरत के अनुसार करें छिड़काव

उन्होंने बताया कि लीची में (प्रजाति के अनुसार) मंजर आने के 30 दिन पहले पेड़ पर जिंक सल्फेट की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर पहला छिड़काव करें। इसके 15 से 20 दिन बाद इसी दवाई से दूसरा छिड़काव भी करें इससे मंजर एवं फूल अच्छे आते है। फूल आते समय पेड़ पर किसी भी प्रकार के कीटनाशी दवा का छिड़काव न करें। फूल आते समय लीची के बगीचे में 15 से 20 मधुमक्खी के बक्शे को प्रति हेक्टेयर की दर से रखें जिससे परागण बहुत अच्छा होगा। अच्छे परागण से फल कम झड़ते है तथा फल की गुणवक्ता भी अच्छी होती है। इस वजह से किसानों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती है। उन्होंने बताया कि लीची में फल लगने के एक सप्ताह बाद प्लैनोफिक्स दवाई के 1 एमएल मात्रा को प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोलकर पेड़ों पर एक छिड़काव करें। इससे फलों को झड़ने से बचाया जा सकता है। किसान फल लगने के 15 दिन बाद बोरेक्स की 5 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी की दर से दवा का छिड़काव करें।

ओस, पाला व कोहरे से सतर्क रहें किसान रबी फसलों को बचाने के अपनाएं उपाय

नरकटियागंज | मौसम में लगातार हो रहे बदलाव का सीधा असर खेती पर पड़ रहा है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक।

इन दिनों ओस, पाला (तुषार), कोहरा और धुंध का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, जिससे रबी फसलों को भारी नुकसान की आशंका बनी हुई है। नरकटियागंज कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. आरपी सिंह ने किसानों को सतर्क रहने की सलाह दी है। बताया कि रात में जब धरातल ठंडा होता है तो वायुमंडल में मौजूद जलवाष्प संघनित होकर बूंदों के रूप में जम जाती है, जिसे ओस कहते हैं। वहीं जब तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस या उससे नीचे पहुंच जाता है तो जलवाष्प सीधे हिमकणों में बदल जाती है, इसे ही पाला कहा जाता है। दिसंबर से जनवरी के बीच पाले की संभावना अधिक रहती है, विशेषकर तब जब रात में आकाश साफ, हवा शांत और नमी अधिक हो। पाला दो प्रकार का होता है। एडवेक्टिव (ठंडी हवाओं से) और रेडिएटिव (विकिरण से)। पाले से पौधों की कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, पत्तियां झुलस जाती हैं, फूल झड़ जाते हैं और दाने छोटे रह जाते हैं। आलू, टमाटर, मटर, मसूर, सरसों, धनिया, सौंफ, सब्जियां और नवरोपित फलदार पौधों को सबसे अधिक नुकसान होता है। कई फसलों में 30 से 60 प्रतिशत तक क्षति देखी जाती है। कोहरा वास्तव में निचले स्तर का बादल होता है, जिसमें दृश्यता काफी कम हो जाती है। धुंध की स्थिति में सूर्य की किरणें देर से धरातल तक पहुंचती हैं, जिससे पौधों की वृद्धि प्रभावित होती है और रोग-कीट का प्रकोप बढ़ जाता है।

पाले से बचाव के उपाय

डॉ. सिंह ने किसानों को सलाह दी कि पाले की आशंका होने पर खेतों में हल्की सिंचाई करें, मेड़ों पर घास-फूस जलाकर धुआं करें और सुबह के समय रस्सी से फसलों को हिलाकर ओस गिराएं। नर्सरी को घास या प्लास्टिक से ढकें और दक्षिण-पूर्व दिशा खुली रखें। दीर्घकालिक बचाव के लिए शीशम, बबूल, आम जैसे वायु रोधक पेड़ लगाएं। इसके अलावा यूरिया, थायो यूरिया, घुलनशील सल्फर, म्यूरेट ऑफ पोटाश, ग्लूकोज या एनपीके घोल का अनुशंसित मात्रा में छिड़काव करने से भी फसलों को पाले से बचाया जा सकता है। सावधानी अपनाने से किसान अपनी रबी फसलों को सुरक्षित रखकर बेहतर उत्पादन और अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 24 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में कुहासा छा सकता है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है। ठंड में बढ़ोतरी की संभावना है।

Dainik Jagran 21-12-2025

आलू व मक्का के संयोजन से बढ़ेगी किसानों की आय

मंच पर उपस्थित वैज्ञानिक व अन्य.

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए एक दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. कृषि के क्षेत्र में विविधीकरण और कम लागत में अधिक मुनाफे को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित प्रशिक्षण आलू एवं मक्का की अंतरवर्ती खेती विषय पर केंद्रित रहा. संबोधित करते हुए केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या व घटती जोत के बीच अंतरवर्ती खेती समय की मांग है. उन्होंने जोर देते हुए कहा आलू और मक्का का संयोजन एक लाभप्रद प्रणाली है. इससे प्रति इकाई क्षेत्र में उत्पादन बढ़ता है. बल्कि यह किसानों के लिए एक बीमा की तरह काम करता है. यदि किसी कारणवश एक फसल प्रभावित होती है तो दूसरी फसल से लागत की भरपाई हो जाती है. केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक डॉ. कौशल किशोर ने मक्का की खेती पर तकनीकी जानकारी साझा की. उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के समय कतारों के बीच की दूरी का प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है. ताकि आलू की फसल को पर्याप्त धूप और स्थान मिल सके. उन्होंने उत्तम प्रभेदों के बीजों के चयन और खरपतवार नियंत्रण के वैज्ञानिक तरीकों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला. उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने आलू की खेती के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा की.

कहा कि आलू के साथ मक्का उगाने से मिट्टी की नमी बनी रहती है. उन्होंने आलू में लगने वाले रोगों, विशेषकर झुलसा रोग से बचाव और कंदों के विकास के लिए आवश्यक उर्वरकों के संतुलित प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया. उन्होंने कहा कि आलू और मक्का दोनों फसल कम पानी चाहता है. इसलिए एक बार में अधिक पानी देने की जगह पर हल्की सिंचाई को नियमित अंतराल पर करना ठीक रहता है. उन्होंने कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया कि किसानों को उन्नत किस्मों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें. प्रशिक्षण सत्र के दौरान डॉ. रेड्डी फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं ने वैज्ञानिकों के साथ सीधा संवाद किया. फील्ड में आने वाली समस्याओं सिंचाई प्रबंधन और कीट नियंत्रण पर विशेषज्ञों ने उनकी शंकाओं का समाधान किया.

Prabhat Khabar 21-12-2025

रक्तदान मानवता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने वाला नेक और निस्वार्थ कार्य : कुलपति

आयोजन

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के डिस्पेंसरी में को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें करीब 40 रक्तवीरो ने रक्तदान किया. रक्तदान केन्द्र सदर अस्पताल, विवि डिस्पेंस्री, अनुमंडलीय अस्पताल एवं पीएचसी, पूसा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित समारोह का उदघाटन कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने दीप प्रज्जवलित कर की. बाद में उन्होंनें रक्तदान कर रहे लोगों को उनके सहयोग के लिए सराहना की. कुलपति ने कहा कि रक्तदान मानवता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने वाला नेक और निस्वार्थ कार्य है. जरूरतमंदों

दीप जलाकर रक्तदान शिविर का उदघाटन करते कुलपति डॉ पीएस पांडेय.

के लिए एक बूंद खून भी जीवन रक्षक बन सकता है. चिकित्सकों ने कहा कि रक्तदान महाकल्याण का कार्य है. लोगों को समय-समय पर रक्तदान करना चाहिए. यह लोगों की जीवन रक्षा में अमूल्य योगदान है. डीएस ने बताया कि इस दौरान विवि के नवनामांकित छात्रो का उत्साह व जागरूकता अन्य लोगों को प्रेरित करने वाला रहा. इस दौरान रक्तवीरो को प्रमाण-पत्र भी दिये गये. मौके पर डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ.अमरेश चन्द्रा, डॉ.मयंक राय, अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ.राकेश कुमार सिंह, डिस्पेंसरी के सीएमओ डॉ.बच्चा बाबू, डॉ.अरविन्द कुमार, डॉ.अविनाश कुमार, डॉ.राजेश कुमार, डॉ.प्रशांत कुमार, उपकुलसचिव डॉ.सतीश कुमार सिंह, बीएचएम फजले रब, प्रबंधक राजपाल कुमार, प्रवीण कुमार व अन्य मौजूद थे.

Prabhat Khabar 22-12-2025

भास्कर 22.12.25 पेज 16

कृषि • ठंड में मटर, टमाटर, मिर्च, बैंगन, चना, सरसों, आलू आदि कई तरह की फसलों पर पाले का असर

नई तकनीकों को अपना कर फसलों को शीतलहर और पाले के प्रकोप से बचाएं

भास्कर न्यूज | पूसा

ठंड में मटर, टमाटर, मिर्च, बैगन, चना, सरसो, आलू आदि कई तरह के फसलों पर पाले का बुरा प्रभाव पड़ता है। पाले के प्रकोप से सभी फसलें गंभीर रूप से प्रभावित होती है। इससे प्रतिवर्ष किसानों को भारी नुकसान भी उठाना पड़ता है। बिहार के किसान वैज्ञानिकों द्वारा सुझाएं नवीनतम तकनीकों को अपनाकर अपने फसलों को शीतलहर व पाले के प्रकोप से बचा सकते हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि ठंड का मौसम चल रहा है और आने वाले समय में ठंडक का प्रकोप और बढ़ने वाला है। विशेषकर उत्तर भारत में अत्यधिक ठंड पड़ती हैं और पाला गिरने से फसल अचानक जलकर नष्ट हो जाती है। फसलों को शीतलहर एवं पाले से बचाने के लिए ससमय क्या-क्या किया जाना चाहिए यह जानना किसानों के लिए अतिआवश्यक है।

पाले से ग्रसित आलू की फसल ।

पाले की वजह से कम होता है उपज

वैज्ञानिक ने बताया कि पाला से प्रभावित पौधों में फूलों के गिर जाने से पैदावार में काफी कमी आ जाती है। इतना ही नहीं पाले के असर को अगर ससमय नहीं रोका गया तो फसल की पत्तियां, टहनियां और तने सभी बुरी तरह से नष्ट हो सकते हैं। पाला खासकर विभिन्न तरह के सब्जियों, पपीता, आम, अमरूद आदि पर बुरा और अधिक प्रभाव डालता है। टमाटर, मिर्च, बैंगन, पपीता, मटर, चना, अलसी, सरसों, जीरा, धनिया, सौंफ आदि फसलों पर पाला पड़ने से ज्यादा नुकसान पहुंचता है।

शीतलहर व पाले से फसल की सुरक्षा ऐसे करें किसान

वैज्ञानिक ने बताया कि किसान नर्सरी के पौधों एवं सब्जी वाली फसलों को संभव हो तो लो कास्ट वाले पॉली टनल में उगाएं। अगर बाहर में भी उगाते है तो उसे पॉलिथीन अथवा पुवाल से ढक दें। इसके अलावे किसान संभव होने पर वायुरोधी बोर वाले टाटी को हवा आने वाली दिशा की तरफ से बांधकर क्यारियों के किनारों पर लगाते हुए अपने फसलों को पाले और शीतलहर से बचा सकते हैं। किसान पाला पड़ने की संभावना को देखते हुए जरूरत के हिसाब से खेत में हल्की-हल्की सिंचाई करते रहें। इससे मिट्टी का तापमान कम नहीं होता है। सरसों, गेहूं, चावल, आलू, मटर की खेती करने वाले किसान फसलों को पाले से बचाने के लिए समय समय पर सल्फर (गंधक) का छिड़काव करते रहें। सल्फर के छिड़काव से रासायनिक सक्रियता बढ़ जाती है और पाले से बचाव के अलावा पौधों को सल्फर तत्व भी मिल जाता है। दीर्घकालीन उपाय के रूप में फसलों को पाले से बचाने के लिए किसान खेत के मेड़ों पर वायु अवरोधक पेड़ लगाएं।

समय पर करें दवा छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि जब वायुमंडल का तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस या फिर इससे भी नीचे चला जाता है तो हवा का प्रवाह बंद हो जाता है। इस वजह से पौधों की कोशिकाओं के अंदर और ऊपर मौजूद पानी जम जाता है तथा पौधों के ऊपरी और भीतरी हिस्से पर ठोस बर्फ की पतली परत बन जाती है। इसी परत को पाला पड़ना कहते हैं। उन्होंने बताया कि पाला पड़ने से पौधों की कोशिकाओं की दीवारें क्षतिग्रस्त हो जाती है और कोशिका छिद्र (स्टोमेटा) नष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं पाला पड़ने की वजह से कार्बन डाइऑक्साइड, ऑक्सीजन और वाष्प की विनियम प्रक्रिया भी बाधित होने लगती है। खासकर फसलों में जब फूल और फल आने या उनके विकसित होने का समय होता है तभी पाला पड़ने की संभावना भी अधिक रहती है। वैसे फसल जिनमें पाले का प्रभाव हो जाता है।

भास्कर 22.12.25 पेज 13

मंडे पॉजिटिव

कार्यक्रम से राष्ट्र के प्रति समर्पण और ईमानदारी की भावना को भी विकसित किया गया

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के दीक्षारंभ मॉडल को सभी विश्वविद्यालय में लागू करने का हुआ निर्णय

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडे के नेतृत्व में छात्रों के लिए शुरू किया गया दीक्षारंभ कार्यक्रम एक ऐसी अनूठी पहल साबित हुई जिसने देश के सभी विश्वविद्यालयों को इसे अपनाने का निर्णय लिया गया है। पूसा विवि में दीक्षारंभ कार्यक्रम शुरू होने और पूर्णतः सफल रहने के बाद इसे आईसीएआर ने सबसे पहले देश के सभी कृषि विवि में लागू कर दिया और बाद में इसे यूजीसी ने भी देश के सभी विश्वविद्यालयों के लिए अनिवार्य कर दिया। बताया जाता हैं कि दीक्षारम्भ कार्यक्रम विश्वविद्यालय में दाखिला लेने वाले नए छात्रों के लिए केवल एक ओरिएंटेशन प्रोग्राम नहीं बल्कि यह छात्रों में देश के प्रति समर्पण, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की भावना जगाने का एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से छात्र राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकें। यह कार्यक्रम छात्रों में राष्ट्र के प्रति समर्पण और ईमानदारी की भावना को भी विकसित करता है। दीक्षारम्भ कार्यक्रम के जरिये छात्रों के समग्र विकास के लिए इस कार्यक्रम के अधीन योग, स्वास्थ्य, टेबल मैनर्स, संगीत, कला, देशभक्ति, पेंटिंग, एक छात्र, एक पेड़ आदि जैसे गतिविधियां चलाई जाती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में विकसित भारत के लक्ष्य में अपना योगदान देने की जागृति विकसित होती हैं।

इस आयोजन के लिए पूसा विवि के कुलपति को पुरस्कृत किया गया

बताया जाता हैं कि इस दीक्षारम्भ कार्यक्रम के जरिये छात्रों को बड़े सपने देखने, राष्ट्र निर्माण में योगदान देने और खासकर 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने अपने क्षेत्र में ईमानदार प्रयास करने को लेकर उन्हें शपथ भी दिलाई जाती हैं। दीक्षारम्भ की सफलता को लेकर अभी हाल ही में नई दिल्ली में विजय दिवस के अवसर पर वेटरन्स इंडिया संस्थान, भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय प्रत्ययन बोर्ड एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के द्वारा संयुक्त रूप से राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं राष्ट्र निर्माण में शिक्षकेत्तर गतिविधियों के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए पूसा विवि के कुलपति को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 24 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि सुबह में कुहासा छा सकता है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है। ठंड में बढ़ोतरी की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
22 दिसंबर	19.0	11.0
23 दिसंबर	19.5	11.0
	दरभंगा	
22 दिसंबर	19.5	11.0
23 दिसंबर	19.5	11.5
	पटना	
22 दिसंबर	21.8	12.6
23 दिसंबर	21.8	12.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 22-12-2025

'आलू व मक्का के संयोजन से बढ़ेगी आमदनी'

पूसा । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में आलू एवं मक्का की अंतरवर्ती खेती विषय पर एक दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मौके पर केन्द्र प्रमुख डॉ. आरके तिवारी ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में विविधिकरण और कम लागत में अधिक मुनाफे को बढ़ावा देना समय की मांग है। उन्होंने डॉ. रेड्डी फाउंडेशन से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं से कहा कि बढ़ती जनसंख्या व खेती योग्य भूमि में लगातार हो रही कमी में अंतरवर्ती खेती को बढ़ावा समय की मांग है।

Hindustan 22-12-2025

कार्यक्रम • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली का आयोजन

उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी ज्ञान देकर उन्हें सक्षम बनाना ही समेकित पोषक तत्व प्रबंधन प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य : डॉ. झा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के द्वारा उर्वरक विक्रेता एवं उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने वाले इच्छुक किसानों के लिए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ मुख्य अतिथि सह पुसा विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.आर के झा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. झा ने कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी ज्ञान देकर उन्हें सक्षम बनाना है ताकि वे किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और संतुलित खाद के प्रयोग के प्रति सही सलाह दे सकें। उन्होंने कहा आज के दौर में ज्यादातर किसान अपने खेतों में काफी मात्रा में खल्ली, डीएपी, पोटाश, एसएसपी, यूरिया जैसे उर्वरकों के अलावे कीटनाशकों का भी प्रयोग अंधाधुंध तरीके से कर रहे हैं। किसानों को यह समझना होगा की आखिर उनके खेतों की मिट्टी में किस चीज की कमी हैं जिसे पूरा करने की आवश्यकता हैं। इसके लिए उन्हें समय समय पर मिट्टी जांच कराने की जरूरत हैं। किसान मिट्टी जांच के उपरांत केवल खेत की मांग के अनुरूप ही संतुलित मात्रा में उर्वरक का प्रयोग करें। इससे उनकी खेती की लागत घटेगी और किसानों को लाभ भी अधिक मिलेगा। उन्होंने कहा कि फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के समेकित प्रबंधन तकनीक का उपयोग करना अति आवश्यक है।

फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का समेकित प्रबंधन जरूरी

कार्यक्रम के दौरान मौजूद उर्वरक विक्रेता।

केवीके के हेड सह वरीय वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका और समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की बारीकियों पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस 15 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान होगा। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के विभिन्न प्रखंडों से आएं कुल 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। मौके पर निशा रानी के अलावे केंद्र के अन्य कर्मी मौजूद थे।

Dainik Bhaskar 23-12-2025

खेती-किसानी • केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने दी जानकारी

आम में लगने वाले कीट मिली बग के प्रबंधन के लिए दिसंबर माह उपयुक्त

भास्कर न्यूज | पूसा

दिसंबर का महीना आम में लगने वाले सबसे खतरनाक कीट मिली बग के प्रबंधन के लिए काफी उपयुक्त होता हैं। आम उत्पादक किसान इस समय अगर मिली बग कीट का प्रबंधन नहीं कर पाएंगे तो आम में मंजर आने के बाद उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ सकता हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि लगातार कई वर्षों से यह देखा जा रहा है की मिली बग कीट आम में मंजर आते ही उस पर आक्रमण कर देती है। इस कीट के लगने और इसके संक्रमण से मंजर में ठीक से टिकोले नहीं लग पाते हैं। बिहार के कृषि जलवायु में यह कीट आम की सबसे बड़ी समस्या के तौर पर उभर रही हैं। उन्होंने कहा कि आम उत्पादक किसान चाहें तो इस कीट को आसानी से प्रबंधित कर सकते हैं। ज्यादातर आम उत्पादक किसान इस कीट से निजात पाने की दिशा में समय पर ध्यान नहीं देते है जिससे यह कीट आम के पेड़ों पर पहले से ही चढ़कर बैठ जाता है और आम के फसल में टिकोला लगने के बाद उसे बहुत अधिक नुकसान पहुंचाने लगता है। उन्होंने बताया कि मिली बग कीट आम की फसल को पचास प्रतिशत से लेकर सौ प्रतिशत तक नुकसान पहुंचा सकते है। इस कीट को दिसम्बर महीने से लेकर मई महीने तक आम के फसल में देखा जाता है। इस कीट के निम्फ और वयस्क मादा दोनों ही फसलों को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। ये कीट फल वृंतो, फूल, फल और मुलायम टहनियों के रस को चूसकर आम के फसल को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि टिकोले के समय इस कीट का प्रबंधन कर पाना किसानों के लिए काफी मुश्किल होता है। किसान अगर चाहते है की मंजर आने के बाद इस कीट से आम के फसल को कम से कम नुकसान पहुंचे तो वे दिसंबर के महीने में इस कीट का प्रबंधन जरूर से जरूर करें।

मिली बग कीट के प्रबंधन को लेकर किये जाने वाले महत्वपूर्ण उपाय

आम के पेड़ पर लगा मिली बग कीट।

कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि आम उत्पादक किसान मिली बग कीट के नियंत्रण हेतु फिलहाल दो एमएल डाई मिथाइल 20 ईसी दवाई को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर आम के टहनियों पर छिड़काव कर दें। इस छिड़काव से अगर कुछ कीट पेड़ पर चढ़ भी गए होंगे तो उसकी संख्या में कमी आ जायेगी। बताया कि किसानों को बागों में रसायनिक छिड़काव करते समय कुछ बातों का ध्यान भी रखना चाहिए ताकि बाग के मित्र कीटों को नुकसान न पहुंचे। सुबह के समय मित्र कीट ज्यादा सक्रिय रहते हैं। इसलिए किसानों को शाम के समय ही कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस कीट से आम के फसल को बचाने के लिए अभी से ही किसान बाग-बगीचों की सफाई भी करना शुरू कर दे। संभव हो तो हमेशा बाग को साफ ही रखें। इस समय आम के पेड़ के मुख्य तने पर जमीन से एक से लेकर डेढ़ फिट की ऊंचाई तक 30 सेमी चौड़ी पॉलिथीन की पन्नी को पेड़ के चारों तरफ लपेटकर सुतली से बांध दें। लपेटे गए पॉलीथिन पन्नी पर अच्छे से चारो तरफ ग्रीस लगा दे। इस विधि से मिली बग कीट का निम्फ मिट्टी से निकलकर पेड़ पर नहीं चढ़ पाएगा। इसके अलावे मिली बग कीट के रोकथाम के लिए पेड़ के चारों तरफ मिट्टी की गुड़ाई करके इसमें 250 ग्राम क्लोरोपाइरीफॉस का धूल प्रति पेड़ मिला दें।

Dainik Bhaskar 23-12-2025

कीटों पर नियंत्रण के लिए स्टिकी ट्रैप एक प्रभावी उपाय

प्रिय अन्नदाता, रसायन-मुक्त, प्राकृतिक खेती

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष।

जैविक एवं में कीटों की निगरानी और नियंत्रण के लिए स्टिकी ट्रैप एक सरल, सस्ता और प्रभावी उपाय है।

नरकटियागंज केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. आरपी सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि सरसों, टमाटर, मिर्च, भिंडी, फूलगोभी, मूली, बैंगन, प्याज व खीरा जैसी फसलों में स्टिकी ट्रैप का प्रयोग अवश्य करें। डॉ. सिंह के अनुसार, बदलते मौसम कभी कुहासा, कभी बदली, तो कभी हल्की फुहार और अधिक नमी व कम तापक्रम के कारण विभिन्न फसलों में कीटों का प्रकोप बढ़ रहा है। सरसों में माहू, प्याज में मक्खी, पत्तागोभी में कैवेज बटरफ्लाई, मिर्च-टमाटर-भिंडी व कद्दूवर्गीय सब्जियों में थ्रिप्स, मूली-बैंगन-ब्रोकली में फिलया बीटल तथा टमाटर में अमेरिकन पिनवर्म से भारी नुकसान हो रहा है। ये कीट कोमल पत्तियों, फूलों और फलों का रस चूसकर उत्पादन घटाते हैं। रासायनिक कीटनाशकों से खर्च बढ़ता है और स्वास्थ्य व पर्यावरण पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है।

रंग के अनुसार उपयोग

पीला ट्रैप: माहू, सफेद मक्खी, प्याज मक्खी, कैवेज बटरफ्लाई

नीला ट्रैप: थ्रिप्स

सफेद ट्रैप: फिलया बीटल, बग

काला ट्रैप: अमेरिकन पिनवर्म

प्रयोग विधि व सावधानियां

फसल की ऊंचाई से 1–2 फीट ऊपर प्रति एकड़ 10–15 ट्रैप लगाएं। 4–5 दिन में ट्रैप बदलें, लगाने से पहले हाथ साबुन से धोएं और ऐसी जगह लगाएं जहां अधिक कीट आकर्षित हों। इस विधि से कम खर्च में सुरक्षित और अधिक उत्पादन संभव है।

आप खेती किसानी से जुड़ी किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 9532460717 पर संपर्क करें।

Dainik jagran 23-12-2025

स्मार्ट खेती को साकार करने में जुटा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, फसल उत्पादन में होगी वृद्धि

संस जागरण● पूसा : खेती-बाड़ी में आधुनिक तकनीक (एआइ, आइओटी, बिग डेटा, ड्रोन, जीपीएस) का उपयोग कर डेटा आधारित निर्णय लेने की दिशा में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा आगे बढ़ रहा है। इससे फसल उत्पादन में वृद्धि होगी। संसाधनों का बेहतर प्रबंधन होगा। इसमें खेत से लेकर बाजार तक की पूरी मूल्य शृंखला शामिल की गई है।

सटीक कृषि और स्मार्ट फार्मिंग तरीके अपनाकर विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस दिशा में विश्वविद्यालय ने एनआइटी पटना के साथ डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के लिए एमओयू साइन किया है। इसका उद्देश्य कृषि में नवाचार लाना है। कृषि उत्पादों की पैकेजिंग और मार्केटिंग के लिए एग्री वेंचर फ्रामं एंड आर्गेनिक लिमिटेड के साथ तथा शिक्षक और छात्र आदान-प्रदान के लिए जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश के साथ एमओयू साइन किया गया है। आने वाले समय में किसान और छात्रों के लिए डिजिटल एग्रीकल्चर की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

- आधुनिक तकनीक के सहारे डेटा आधारित निर्णय लेने की दिशा में आगे बढ़ रहा डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि
- एनआइटी पटना के साथ डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के लिए एमओयू साइन किया

किसान दिवस विशेष

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा ● जागरण

डिजिटल कृषि को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय पूरी तरह सक्रिय है। इनका प्रयोग सटीक खेती, ड्रोन आधारित फसल निगरानी, सेंसर आधारित सिंचाई, जलवायु-स्मार्ट ग्रीनहाउस, और एआइ-आधारित कीट प्रबंधन को सर्वसाधारण किसानों को उपलब्ध कराने की दिशा में कोशिश जारी है।

डा. पीएस पांडेय कुलपति, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा।

खाद और पानी पहुंचाएगा खेतों में : विवि के इंजीनियरिंग विभाग के विज्ञानियों ने एक ऐसा आटोमेटिक यंत्र विकसित किया जो पौधों को आवश्यकतानुसार यूरिया खुद-ब-खुद जड़ तक पहुंचा देता है। यह यंत्र पूरी तरह सेंसर आधारित है, जो पौधों की जरूरत का पता लगाकर उसी के अनुसार खाद की आपूर्ति करता है। यह यंत्र खेत में घूमते हुए यह पता लगाता है कि किन पौधों को यूरिया की जरूरत है और कितनी मात्रा में। इसके बाद वह खुद ही उचित मात्रा में पौधे की जड़ तक यूरिया पहुंचा देता है। इस यंत्र द्वारा किसान अब घंटों का काम मिनटों में निपटा सकेंगे। इस यंत्र में एक आटोमेटिक और दूसरा रिमोट-कंट्रोल सिस्टम है। विज्ञानी कहते हैं, यह यंत्र सेंसर आधारित स्मार्ट डिवाइस है। इसके पेटेंट की प्रक्रिया जारी है। इसके बाद यह यंत्र आम किसानों के लिए भी उपलब्ध होगा।

कुलपति डा. पीएस पांडेय बताते हैं कि कृषि में अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) और इंटरनेट आफ थिंग्स (आइओटी) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है। इनका प्रयोग सटीक खेती, ड्रोन आधारित फसल निगरानी, सेंसर आधारित सिंचाई, जलवायु-स्मार्ट ग्रीनहाउस और एआइ-आधारित कीट प्रबंधन में किया जा रहा है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के राष्ट्रीय अंतर विषयी साइबर-भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम-आइसीपीएस) के तहत कृषि में नवाचार के लिए कई प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र (टीआइएच) स्थापित किए गए हैं।

आएआएटी खड़गपुर का एआइ4आइसीपीएस केंद्र फसल पूर्वानुमान और उत्पादकता विश्लेषण में एआइ समाधान विकसित कर रहा है। इसके अलावा गतिशील फसल-मौसम कैलेंडर के लिए साफ्टवेयर विकसित किया गया है। डिजिटल तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है।

Dainik Jagran 23-12-2025

जमीन की उर्वरता बनाए रखने के लिए संतुलित खाद का उपयोग करने की उचित सलाह दें विक्रेता

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने के लिए 'समेकित पोषक तत्व प्रबंधन' विषय पर आधारित 15 दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत सोमवार से हुयी। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. आरके झा ने इसका उदघाटन किया। अपने संबोधन में कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना है ताकि वे किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और संतुलित खाद के प्रयोग के प्रति सही सलाह दे सकें। इससे किसानों को अधिक लाभ मिले। उन्होंने कहा कि फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के समेकित प्रबंधन तकनीक का उपयोग करना अति आवश्यक है। केन्द्र के वरीय विज्ञानी सह प्रधान डा. आर.के. तिवारी ने कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका और समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की बारीकियों पर चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि 15 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान होगा। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डा. धीरु कुमार तिवारी ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के विभिन्न प्रखंडों से कुल 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान निशा रानी एवं केंद्र के अन्य कर्मी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण को संबोधित करते प्रसार शिक्षा निदेशक वैज्ञानिक • जागरण

किसान गोष्ठी में मौजूद किसान एवं • जागरण

जलवायु अनुकूल खेती करने से होगा ज्यादा मुनाफा

संवाद सहयोगी, जागरण • खानपुर : प्रखंड मुख्यालय स्थित ई किसान भवन परिसर में प्रखंड स्तरीय किसान गोष्ठी का आयोजन हुआ। उद्घाटन बीस सूत्री अध्यक्ष सह सासंद प्रतिनिधि रामनारायण सिंह, प्रखंड किसान सलाहकार समिति के अध्यक्ष संजीव चौधरी जिला पार्षद स्वर्णिमा सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष अजय कुशवाहा ने संयुक्त रूप से किया। अध्यक्षता संजीव कुमार चौधरी ने की। संचालन सुशील कुशवाहा ने किया। बिरौली के कृषि विज्ञानी सुमित कुमार ने किसानों को जैविक विधि से जलवायु अनुकूल खेती करने की सलाह दी। कहा कि किसानों को कम लागत में अधिक मुनाफा होगा तभी किसानों की माली हालत में सुधार होगा। उन्होंने कीटनाशक, बीज उपचार, रवि मौसम में सभी फसलों के बारे में जानकारी दी। तकनीकी सहायक सूरज सहनी, कृषि समन्वयक अजय मिश्रा, राम प्रभेश महतो, किसान सलाहकार कन्हैया चौधरी, ललित सहनी, निरंजन कुमार, उमेश मांझी, रामबाबू राम, एटीएम शशि भूषण कुमार सुशील कुशवाहा पंकज कुमार राय, श्रवण कुमार सिंह, रामश्रेष्ठ सिंह, ब्रह्मदेव राय, सुनील महतो, पांचू राम भी थे।

Dainik Jagran 23-12-2025

जमीन की उर्वरता बनाए रखने के लिए संतुलित खाद का उपयोग करने की उचित सलाह दें विक्रेता

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने के लिए 'समेकित पोषक तत्व प्रबंधन' विषय पर आधारित 15 दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत सोमवार से हुयी। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. आरके झा ने इसका उदघाटन किया। अपने संबोधन में कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना है ताकि वे किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और संतुलित खाद के प्रयोग के प्रति सही सलाह दे सकें। इससे किसानों को अधिक लाभ मिले। उन्होंने कहा कि फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के समेकित प्रबंधन तकनीक का उपयोग करना अति आवश्यक है। केन्द्र के वरीय विज्ञानी सह प्रधान डा. आर.के. तिवारी ने कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका और समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की बारीकियों पर चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि 15 दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों का अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान होगा। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डा. धीरु कुमार तिवारी ने किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले के विभिन्न प्रखंडों से कुल 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान निशा रानी एवं केंद्र के अन्य कर्मी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण को संबोधित करते प्रसार शिक्षा निदेशक वैज्ञानिक • जागरण

किसान गोष्ठी में मौजूद किसान एवं • जागरण

जलवायु अनुकूल खेती करने से होगा ज्यादा मुनाफा

संवाद सहयोगी, जागरण • खानपुर : प्रखंड मुख्यालय स्थित ई किसान भवन परिसर में प्रखंड स्तरीय किसान गोष्ठी का आयोजन हुआ। उद्घाटन बीस सूत्री अध्यक्ष सह सासंद प्रतिनिधि रामनारायण सिंह, प्रखंड किसान सलाहकार समिति के अध्यक्ष संजीव चौधरी जिला पार्षद स्वर्णिमा सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष अजय कुशवाहा ने संयुक्त रूप से किया। अध्यक्षता संजीव कुमार चौधरी ने की। संचालन सुशील कुशवाहा ने किया। बिरौली के कृषि विज्ञानी सुमित कुमार ने किसानों को जैविक विधि से जलवायु अनुकूल खेती करने की सलाह दी। कहा कि किसानों को कम लागत में अधिक मुनाफा होगा तभी किसानों की माली हालत में सुधार होगा। उन्होंने कीटनाशक, बीज उपचार, रवि मौसम में सभी फसलों के बारे में जानकारी दी। तकनीकी सहायक सूरज सहनी, कृषि समन्वयक अजय मिश्रा, राम प्रभेश महतो, किसान सलाहकार कन्हैया चौधरी, ललित सहनी, निरंजन कुमार, उमेश मांझी, रामबाबू राम, एटीएम शशि भूषण कुमार सुशील कुशवाहा पंकज कुमार राय, श्रवण कुमार सिंह, रामश्रेष्ठ सिंह, ब्रह्मदेव राय, सुनील महतो, पांचू राम भी थे।

Dainik Jagran 23-12-2025

पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण शुरू

पूसा। डॉ .राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ .रत्नेश कुमार झा ने कहा कि फसल उत्पादन में गुणवत्तायुक्त बीज व उर्वरक की भूमिका अहम है। संतुलित मात्रा में उर्वरको का उपयोग समय की मांग है। यह खेती की लागत को कम करने के साथ मृदा संतुलन बनाये रखता है। इसमें उर्वरक बिक्रेताओं की भूमिका अहम है। वे किसानों को मिटटी की जांच कराकर वैज्ञानिक सुझाव के अनुरूप उर्वरको के इस्तेमाल के लिए प्रेरित करे। साथ ही तकनीकी रूप से सझम होकर किसानों को सही सलाह दे, जिससे खेती लाभकारी बनाने में किसानों को सहयोग मिले।

Hindustan 23-12-2025

डिब्बा बंद व सूखे मशरूम का व्यापार बड़ा बाजार

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र में मशरूम उत्पादन, संवर्धन और विपणन विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. इस दौरान आय बढ़ाने, रोजगार पैदा करने, पोषण सुरक्षा प्रदान करने और कृषि-अपशिष्ट प्रबंधन में मदद करने में है. यह कम जगह में जल्दी उगता है. उच्च पोषक तत्वों से भरपूर होता है. इसकी मांग लगातार बढ़ रही है. जिससे किसानों को अच्छा मुनाफा मिलता है. ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलता है. खासकर तकनीकी सहायता और प्रभावी मार्केटिंग के साथ सफल होता है. मशरूम की खेती कम समय (3-4 सप्ताह) में तैयार हो जाता है. यह शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करता है. किसान सीधे किसान बाजार, खुदरा विक्रेताओं, थोक विक्रेताओं और रेस्तरां को बेच सकते हैं. एक मजबूत ब्रांड पहचान और लोगों बनाने से उत्पाद प्रतिस्पर्धियों से अलग दिखता है. डिब्बा बंद और सूखे मशरूम उत्पादों का व्यापार बड़ा और संगठित है.

Prabhat Khabar 23-12-2025

उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने की जरूरत : डॉ झा

संबोधित करते प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा .

पूसा .डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के सभागार में उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने के लिए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर आधारित 15 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के निदेशक प्रसार शिक्षा, डॉ. आरके झा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया. अपने संबोधन में डॉ. झा ने कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उर्वरक विक्रेताओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना है. ताकि वे किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और संतुलित खाद के प्रयोग के प्रति सही सलाह दे सकें. जिससे कि किसानों को अधिक लाभ मिले. उन्होंने कहा कि फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के समेकित प्रबंधन तकनीक का उपयोग करना अति आवश्यक है. केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका और समेकित पोषक तत्व प्रबंधन की बारीकियों पर चर्चा की. संचालन केन्द्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किया. मौके पर निशा रानी आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar 23-12-2025

भास्कर 24.12.25 पेज 16

वर्चुअल कार्यक्रम • शिवराज सिंह चौहान ने किसानों को किसान दिवस के बारे में विस्तार से बताया

जी राम जी योजना सौ दिनों के बदले 125 दिनों के रोजगार की देती है गारंटी : वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में किसान दिवस एवं मशरूम दिवस के अवसर पर समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों के अलावे प्रखंड क्षेत्र के किसानों ने हिस्सा लिया। समारोह का शुभारंभ कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम कुलपति ने सभी लोगों को किसान दिवस और मशरूम दिवस की शुभकामनाएं दी और भारत सरकार के द्वारा विकसित भारत- जी राम जी विधेयक के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि भारत- जी राम जी योजना किसानों को सौ दिनों के बदले 125 दिन के रोजगार की गारंटी देती है। उन्होंने कहा कि पहले की योजना में मजदूरों को मजदूरी मिलने में अक्सर देर हो जाती थी। लेकिन अब जी राम जी योजना के जरिये मजदूरी सात से पंद्रह दिन के अंदर सीधे आधार से जुड़े बैंक खाते में पहुंच जाएगी। उन्होंने भीषण ठंड में भी बड़ी संख्या में किसानों की उपस्थिति देखकर कहा कि यदि लोगों का उत्साह इसी तरह रहा तो देश 2047 से पहले ही विकसित हो जायेगा। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए सम्मान का विषय है कि इस अवसर पर देश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी भी ऑनलाइन माध्यम से किसानों को संबोधित कर रहे हैं। मशरूम वैज्ञानिक डॉ.दयाराम ने मशरूम दिवस को लेकर विस्तार से बताया। प्राध्यापक डॉ.रितंभरा सिंह ने जी राम जी योजना की विस्तृत जानकारी दी और कहा कि इस योजना के माध्यम से अब योजनाबद्ध तरीके से गांवों में विकास हो सकेगा। मंच संचालन सौरभ तिवारी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापक डॉ.देवेश पंत ने किया। मौके पर डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, डीन कम्युनिटी साइंस डा. उषा सिंह, डीन इंजीनियरिंग डॉ.राम सुरेश वर्मा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ.राकेश मणि शर्मा, डॉ.रामबाबू प्रसाद, डॉ.संजीव कुमार, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक किसान मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद किसान।

ऑनलाइन माध्यम से कृषि मंत्री ने किया किसानों को संबोधित

ऑनलाइन माध्यम से कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश भर के किसानों को किसान दिवस के बारे में विस्तार से जानकारी दी और चौधरी चरण सिंह के जीवन वृत्त के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत जी राम जी योजना से देश भर के किसान और मजदूरों को काफी फायदा होगा। उन्होंने कहा कि इस योजना से अब गांव स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य हो सकेगा जिससे गांव की आर्थिक समृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत फसल बुआई और कटाई के समय राज्य सरकार के सहयोग से गैप रखा जायेगा ताकि खेती किसानी के कार्यों के लिए मजदूरों की कमी नहीं हो। मजदूरों को समयबद्ध तरीके से ऑनलाइन माध्यम से भुगतान करने की भी व्यवस्था इस योजना के जरिये की गई है। कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि कार्यक्रम में किसी तरह की धांधली न हो इसलिए इसके मानीटरिंग को भी सख्त किया गया है। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा डा.रत्नेश झा ने किसान दिवस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में किसानों को बताया।

भास्कर 24.12.25 पेज 15

कार्यक्रम • कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने के लिए प्रेरित भी किया

आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ करने के लिए किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने की हैं जरूरत, तभी होगा विकास : डॉ. तिवारी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में किसान दिवस के उपलक्ष्य में किसान गोष्ठी सह किसान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीक और कृषि निर्यात की संभावनाओं से अवगत कराना था। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर डॉ. आरके तिवारी ने किसानों के श्रम की सराहना करते हुए किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने के लिए प्रेरित किया ताकि उनकी आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ किया जा सकें। उन्होंने कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने के लिए प्रेरित भी किया। इस मौके पर एपीडा के सहयोग से कृषि निर्यात विषय पर क्षमता विकास के लिए एक विशेष गोष्ठी भी आयोजित की गई। एपीडा से जुड़े सौरभ कुमार ने बिहार से कृषि उत्पादों के निर्यात एवं इसमें अपार संभावनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को बताया की वे कैसे अपने विशिष्ट कृषि उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचा सकते हैं। उन्होंने कृषि निर्यात की प्रक्रियाओं के बारे में विस्तृत चर्चा की। समथू एफपीओ के सीईओ अमरदीप कुमार ने फल एवं सब्जियों के निर्यात की बारीकियों और इसमें आने वाली चुनौतियों एवं लाभ पर अपने विचार साझा किए।विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. एआर श्रावंती ने कृषि में उद्यमशीलता व कृषि स्टार्टअप द्वारा युवा किसानों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया। कीट विज्ञान के सहायक प्राध्यापक डॉ. ध्रुव कुमार ने कृषि निर्यात की गुणवत्ता को बनाए रखने में कीट नियंत्रण की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। गोष्ठी के दौरान केवीके के विशेषज्ञों ने किसानों के विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। समारोह के समापन सत्र में खेती के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील किसानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। सम्मानित होने वाले किसानों में मुख्य रूप से अनोज कुमार राय, विजय पोद्दार, अमरनाथ कुमार, दिवाकर कुमार, रमाशंकर चौरसिया, सुधांशु कुमार, रणधीर कुमार, रामनरेश प्रसाद सिंह, संजीव सिंह, विनय पाण्डेय आदि शामिल हैं। कार्यक्रम का सफल संचालन केंद्र के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किया। इस कार्यक्रम में केवीके की इंजीनियर विनिता कश्यप, विषय वस्तु विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह, निशा रानी आदि थे।

प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते केवीके हेड।

जीरामजी से 125 दिन रोजगार की गारंटी

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किसान एवं मशरूम दिवस पर कार्यक्रम

- केंद्रीय कृषि कल्याण मंत्री और राज्यमंत्री ने भी कार्यक्रम को आनलाइन किया संबोधित
- विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में दी गई जानकारी

संबोधित करते कुलपति • जागरण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में मंगलवार को विद्यापति सभागार में किसान दिवस पर एक समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडेय ने भारत सरकार के विकसित भारत जी राम जी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। कहा कि जीरामजी योजना किसानों को सौ दिनों के बदले 125 दिन के रोजगार की गारंटी देती है। पहले की योजना में मजदूरी मिलने में भी अक्सर देर हो जाती थी लेकिन जी राम जी योजना में मजदूरी सात से 15 दिन के अंदर सीधे आधार से जुड़े बैंक खाते में मजदूरी का पैसा जमा हो जाएगा। कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए सम्मान का विषय है कि इस अवसर पर देश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं कृषि राज्यमंत्री भगीरथ चौधरी भी आनलाइन माध्यम से किसानों को संबोधित कर रहे हैं। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश भर के किसानों को किसान दिवस के बारे में जानकारी दी और चौधरी चरण सिंह के जीवन वृत्त के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत जी राम जी योजना से देश भर के किसानों और मजदूरों को फायदा होगा। निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश झा ने किसान दिवस के बारे में जानकारी दी।

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कार्यक्रम में मौजूद किसान • जागरण

निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं की जानकारी दी। मशरूम विज्ञानी डा. दयाराम ने मशरूम दिवस के बारे में बताया। प्राध्यापक डा. ऋतंभरा सिंह ने जीरामजी योजना की जानकारी दी और कहा कि इस कार्यक्रम से अब योजनाबद्ध तरीके से गांवों में विकास हो सकेगा। मंच संचालन सौरभ तिवारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापक डा. देवेश पंत ने किया। इसे डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन कम्युनिटी साइंस डा उषा सिंह, डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, पुस्तकालय अध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा, डा. रामबाबू प्रसाद, डा. संजीव कुमार, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

Dainik Jagran 24-12-2025

किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने का मिला सुझाव

संस, जागरण • पूसा : कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में मंगलवार को किसान गोष्ठी सह किसान सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीक और कृषि निर्यात की संभावनाओं से अवगत कराना था। केंद्र के वरीय विज्ञानी सह प्रधान डा. आरके तिवारी ने वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने पर जोर दिया। उन्होंने कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने के लिए प्रेरित भी किया।

एपिडा के सहयोग से कृषि निर्यात विषय पर क्षमता विकास के लिए विशेष गोष्ठी का भी आयोजन हुआ। एपिडा के सौरभ कुमार ने बिहार से कृषि उत्पादों के निर्यात की अपार संभावनाओं पर बल दिया। कहा कि कैसे स्थानीय किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच सकते हैं। उन्होंने कृषि निर्यात की प्रक्रियाओं के बारे में विस्तृत चर्चा की। एफपीओ के सीईओ अमरदीप कुमार ने फल एवं सब्जियों के निर्यात की बारीकियों और इसमें आने वाली चुनौतियों व लाभ पर

किसान सम्मान समारोह में किसानों को कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने के लिए किया गया प्रेरित

विचार साझा किए। सहायक प्राध्यापक डा. एआर श्रावंती ने कृषि में उद्यमशीलता, कृषि स्टार्टअप के द्वारा युवाओं को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया। कीट विज्ञान के सहायक प्राध्यापक डा. ध्रुव कुमार ने कृषि निर्यात की गुणवत्ता बनाए रखने में कीट नियंत्रण की भूमिका पर प्रकाश डाला। समारोह के समापन सत्र में खेती के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील किसानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले किसानों में मुख्य रूप से अनोज कुमार राय, विजय पोद्दार, अमरनाथ कुमार, दिवाकर कुमार, रमाशंकर चौरसिया, सुधांशु कुमार, रणधीर कुमार, रामनरेश प्रसाद सिंह, संजीव सिंह, विनय पाण्डेय शामिल रहे।

Dainik Jagran 24-12-2025

विकसित भारत में किसान की भूमिका अहम : वीसी

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि सर्दी के बावजूद किसानों की सहभागिता उनकी जागरूकता को दर्शाता है। देश के विकसित भारत के सपने को साकार करने में अन्नदाता किसानों की अहम भूमिका है। वो दूसरों का पेट भरने के लिए दिन रात मेहनत करते हैं। उन्होंने कहा कि किसानों के मसीहा कहे जाने वाले चौधरी चरण सिंह का जन्मदिन पर किसान दिवस रूप में मनाया जाता है।

कहा कि बदलते समय में पौष्टिक आहार का सेवन समय की मांग है। इसमें मशरूम एक बेहतर विकल्प है। यह शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में अहम भूमिका निभाता है। वे मंगलवार को विवि के विाापति सभागार में आयोजित किसान दिवस सह मशरूम दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि देश को आत्मनिर्भर बनाने, पलायन रोकने व रोजगार श्रृजन को बढ़ावा देने की दिशा में सरकार लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में मनरेगा के बदले विकसित भारत रोजगार आजीविका की गारंटी मिशन ग्रामीण की शुरूआत की गई है। निदशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने विवि की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ.ऋतंबरा सिंह ने विकसित भारत जीरामजी अधिनियम पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि अब 125 दिनों तक ग्रामीण रोजगार की गारंटी है। इसें रोजगार व आजीविका से जोड़ा गया है। मशरूम वैज्ञानिक डॉ.दयाराम ने कहा कि मशरूम फंक्शनल फूड है। यह रोजगार के साथ पौष्टिक आहार उपलब्ध कराता है। स्वागत निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा, संचालन डॉ.सौरभ तिवारी, धन्यवाद डॉ.देवेश कुमार पंत ने किया। मौके पर डीन डॉ.उषा सिंह, डॉ.राम सुरेश, डॉ.अमरेश चन्द्रा, डॉ.आरपी प्रसाद, डॉ.कुमार राज्यबर्द्धन, एटीएम मारूति नंदन शुक्ला आदि मौजूद थे इस दौरान केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं कृषि राज्यमंत्री भगीरथ चौधरी ने वर्चुअल मोड से संबोधित किया।

मंगलवार को विवि के विद्यापति सभागार में संबोधित करते कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय।

Hindustan 24-12-2025

कार्यक्रम | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को किया सम्मानित

'बिहार से कृषि उत्पादों के निर्यात की संभावनाएं'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में मंगलवार को किसान दिवस के अवसर पर किसान गोष्ठी सह किसान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान चयनित प्रगतिशील कृषक अनोज कुमार राय, विजय पोद्दार, अमरनाथ कुमार, दिवाकर कुमार, रमाशंकर चौरसिया, सुधांशु कुमार, रणधीर कुमार, रामनरेश प्रसाद सिंह, संजीव सिंह, विनय पाण्डेय को सम्मानित किया गया। इससे पूर्व अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। मौके पर केन्द्र के प्रधान डॉ.आरके तिवारी ने किसानों के श्रम की सराहना करते हुए वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने पर जोर दिया। उन्होंने कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने की अपील की। इस दौरान कृषि निर्यात विषय पर आयोजित क्षमता विकास गोष्ठी में एपीडा के सौरभ कुमार ने कहा कि बिहार से कृषि उत्पादों के निर्यात की अपार संभावनाएं है। उन्होंने किसानो को अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचने के तौर तरीकों से अवगत कराया। समथू एफपीओ के सीईओ अमरदीप कुमार ने फल एवं सब्जियों के निर्यात की बारिकियों, आने वाली चुनौतियों व लाभ पर जानकारी दी। विवि की सहायक प्राध्यापक डॉ.एआर श्रावंती ने कृषि में उद्यमशीलता, कृषि स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया। कीट विज्ञान के सहायक प्राध्यापक डॉ. ध्रुव कुमार ने कहा कि कृषि निर्यात की गुणवत्ता बनाए रखने में कीट नियंत्रण की भूमिका अहम है। संचालन डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किया। मौके पर ई.विनिता कश्यप, सुमित कुमार सिंह, निशा रानी आदि मौजूद थे।

मंगलवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में संबोधित करते अधिकारी।

Hindustan 24-12-2025

राष्ट्रीय मशरूम दिवस एवं किसान सम्मान दिवस पर समारोह हुआ

मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की जरूरत

आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्यापति सभागार में राष्ट्रीय मशरूम दिवस एवं किसान सम्मान दिवस के अवसर पर समारोह हुआ. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने की जरूरत है. महज चंद वर्षों में ही देश विकसित भारत 2047 की रूपरेखा तैयार कर समृद्ध होने की स्थिति में है. चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर किसान सम्मान दिवस मनाया जाता है. विवि केंद्र सरकार के नीतियों पर आधारित तकनीक विकसित कर किसानों को दे रही है. अन्न का भंडारण भी सरकार के ही नीति निर्धारण के अनुसार हो रहा है.

संबोधित करते कुलपति डॉ पीएस पांडेय .

वहीं बदलते परिवेश में पोषक अनाज की जरूरत है.

मशरूम के क्षेत्र में बिहार को नंबर वन बनाने में विवि की महती भूमिका है. मनरेगा का नाम बदलकर विकसित भारत जी राम जी का विधेयक किसान और मजदूरों के हित में लाया गया है. कृषि में आने वाले कमियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है. इस विधेयक से मजदूरों का पलायन को रोककर राज्यों को समृद्ध बनाने का प्रयास है. देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गांव को बदलना जरूरी है. स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने किया.

राष्ट्रीय मशरूम दिवस का विषय प्रवेश कराते हुए मशरुम विशेषज्ञ डॉ दयाराम ने कहा कि मशरूम एक कार्यात्मक आहार के रूप में विख्यात हो चुका है. मशरूम के बाजारीकरण से निजात के लिए विवि में 54 प्रकार के उत्पाद निर्माण किया गया है. जबकि मशरूम के 12 प्रभेदों की खेती सालों भर करने की तकनीक भी विकसित किया जा चुका है. मशरूम का उत्पादन डोमेस्टिक एवं कमर्शियल दोनों ही आधार पर की जाती है. वैज्ञानिक डॉ रितंभरा ने किसानों को मनरेगा का बदले हुए नाम व उसके पारित अधिनियम पर विस्तार से प्रकाश डाला. निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि किसानों की समस्या को कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से हल किया जा रहा है. संचालन डॉ सौरभ तिवारी एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक देवेश कुमार पंत ने किया. मौके पर डीन डॉ उषा सिंह, डॉ रामसुरेश, डॉ अमरेश चंद्रा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar 26-12-2026

किसानों को वैज्ञानिक पद्धति अपनाने की जरूरत

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में मंगलवार को किसान दिवस पर किसान गोष्ठी सह किसान सम्मान समारोह का आयोजन हुआ. इसका उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीक व कृषि निर्यात की संभावनाओं से अवगत कराना था. शुभारंभ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया. डॉ. तिवारी ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने की जरुरत है. ताकि किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके.

उन्होंने कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए किसानों को आगे आने के लिए प्रेरित किया. एपीडा के सहयोग से कृषि निर्यात विषय पर क्षमता विकास के लिए एक विशेष गोष्ठी हुई. एपीडा के सौरभ कुमार ने बिहार से कृषि उत्पादों के निर्यात की अपार संभावनाओं पर प्रकाश डाला. बताया कि कैसे स्थानीय किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच सकते हैं. उन्होंने कृषि निर्यात की प्रक्रियाओं के बारे में विस्तृत चर्चा की. समथू एफपीओ के सीईओ अमरदीप कुमार ने फल एवं सब्जियों के निर्यात की बारीकियों और इसमें आने वाली चुनौतियों व लाभ पर अपने विचार साझा किये. सहायक प्राध्यापक डॉ. एआर श्रावंती ने कृषि में उद्यमशीलता, कृषि स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया.

कीट विज्ञान के सहायक प्राध्यापक डॉ. ध्रुव कुमार ने बताया कि कृषि निर्यात की गुणवत्ता बनाये रखने में कीट नियंत्रण की क्या भूमिका है. समारोह के समापन सत्र में खेती के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील किसानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया. इसमें अनोज कुमार राय, विजय पोद्दार, अमरनाथ कुमार, दिवाकर कुमार, रमाशंकर चौरसिया, सुधांशु कुमार, रणधीर कुमार, रामनरेश प्रसाद सिंह, संजीव सिंह, विनय पाण्डेय आदि शामिल रहे. संचालन उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी ने किया. मौके पर ईं. विनिता कश्यप, सुमित कुमार सिंह, निशा रानी आदि ने सक्रिय भागीदारी निभाई. गोष्ठी के दौरान विशेषज्ञों ने किसानों के विभिन्न सवालों के जवाब भी दिये.

किसानों को संबोधित करते विशेषज्ञ .

Prabhat Khabar 24-12-2026

केवीके के वैज्ञानिकों ने आलू मक्का की मिश्रित खेती को लेकर दी सलाह

आम के बागों का किया निरीक्षण, किसानों को दिए कई महत्वपूर्ण सुझाव

भास्कर न्यूज | पूसा

आलू मक्के के फसल का निरीक्षण करते दोनो विशेषज्ञ।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े वैज्ञानिक डॉ. धीरू कुमार तिवारी व विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से पूसा के मोरसंड व कैंजिया बिष्णुपुर गांव से जुड़े किसानों के आलू मक्का की मिश्रित खेती व आम के बागों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को आलू व मक्का की मिश्रित फसल में समय समय पर हल्की हल्की सिंचाई करते रहने, प्रिकॉशन के रूप में आलू की फसल पर 10 दिनों के अंतराल पर फंगीसाईड का स्प्रे करते रहने आदि की सलाह दी। उन्होंने कहा कि मौजूदा मौसम पाला के प्रकोप के लिए काफी अनुकूल हैं। ऐसी स्थिति में इस समय आलू उत्पादक किसानों को अपने फसल की विशेष निगरानी करने की जरूरत हैं। दोनों वैज्ञानिकों ने बताया कि आलू व मक्का की मिश्रित खेती किसानों के आय को बढ़ाने में सहायक है। मिश्रित खेती की यह तकनीक मिट्टी में नमी बनाए रखने के साथ-साथ फसल में कीटों के प्रकोप को भी कम करती है। आलू मक्के के मिश्रित खेती से किसानों को कम पानी और सीमित भूमि में अधिक उपज मिलती है। उन्होंने आलू के पोषण प्रबंधन पर चर्चा करते हुए कहा की कैल्शियम, फॉस्फेट और पोटाश जैसे पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग और पर्णीय छिड़काव से आलू के कंदों के आकार और गुणवत्ता में दोनों में सुधार होती है।

Dainik Bhaskar 25-12-25

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 28 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में लगातार पछुआ हवाएं चलने के कारण कोल्ड डे की स्थिति बनी रह सकती है। इन जिलों में 28 दिसंबर तक ठंड का प्रकोप बने रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाया रह सकता है। आसमान में कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
26 दिसंबर	20.0	11.0
27 दिसंबर	20.5	11.0
	दरभंगा	
26 दिसंबर	20.5	11.0
27 दिसंबर	20.5	11.5
	पटना	
26 दिसंबर	22.8	12.6
27 दिसंबर	22.8	12.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 25-12-2025

ग्रामीण रोजगार सृजन व टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना जरूरी

सरैया,(मुजफ्फरपुर). कृषि विज्ञान केंद्र, सरैया में किसान दिवस पर वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ. रामकृष्ण राय की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया. शुभारम्भ मुख्य अतिथि नगर पंचायत सरैया मुख्य पार्षद कुमारी अर्चना, विशिष्ट अतिथि किसान मृत्युंजय दास सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया.मौके पर ऑनलाइन माध्यम से केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने संबोधन में कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसानों की आय बढ़ाना, ग्रामीण रोजगार सृजन और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है. उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में जी राम जी की जानकारी भी दी, जिसके तहत 125 दिनों के रोजगार की गारंटी प्रदान की जाएगी.

Prabhat Khabar 24-12-2025

आयोजन • समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का तीसरा दिन संपन्न

रासायनिक खादों के निरंतर और असंतुलित प्रयोग से मिट्टी की उपजाऊ शक्ति लगातार क्षीण होती जा रही है : डॉ. अजित कुमार

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने के लिए समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर चल रहे 15 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण के तीसरे दिन विशेषज्ञों ने प्रशिक्षार्थियों को आधुनिक खेती और मृदा स्वास्थ्य से जुड़ी महत्वपूर्ण वैज्ञानिक जानकारी दी। कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वरीय मृदा वैज्ञानिक डॉ. अजित कुमार ने अपने व्याख्यान में फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग व उसके महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को आगाह करते हुए कहा कि रासायनिक खादों के निरंतर और असंतुलित प्रयोग से मिट्टी की उपजाऊ शक्ति लगातार क्षीण होती जा रही है। मिट्टी के इस गिरावट को जैव उर्वरकों के एकीकृत प्रयोग से सुधारा जा सकता है। किसानों को इस दिशा में अधिक से अधिक जागरूक कर उनसे जैव उर्वरकों का इस्तेमाल कराने की जरूरत हैं। उन्होंने बीजों को उपचारित करने और मिट्टी के साथ जैव उर्वरकों के सही मिश्रण की सटीक जानकारी भी प्रशिक्षणार्थियों के साथ साझा की। उन्होंने स्पष्ट किया कि जैव उर्वरकों के प्रयोग से न केवल खेती की लागत में कमी आती है बल्कि पैदावार की गुणवत्ता भी उत्कृष्ट होती जाती है। जैव उर्वरक पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ टिकाऊ खेती का मुख्य आधार भी हैं।

प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

बिना मिट्टी जांच किए रासायनिक उर्वरकों का उपयोग खतरनाक : दूसरे वक्ता विश्वविद्यालय के वरीय वैज्ञानिक डॉ. शिवनाथ सुमन ने मिट्टी जांच आधारित उर्वरक के अनुशंसा विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बिना मिट्टी जांच किए रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से फसलों के अलावे मिट्टी पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे उत्पादन में कमी आती है। केवीके के वरीय वैज्ञानिक सह हेड डॉ.आरके तिवारी, उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरु कुमार तिवारी सहित अन्य वैज्ञानिक ने भी प्रशिक्षणार्थियों को तमाम तरह की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए दर्जनों उर्वरक विक्रेता एवं उर्वरक अनुज्ञप्ति प्राप्त करने वाले इक्छुक नए किसान हिस्सा ले रहे हैं। ये सभी भविष्य में उर्वरक विक्रेता के रूप में किसानों को सही सलाह देंगे इसलिए वैज्ञानिक इन्हें प्रशिक्षित कर रहे हैं।

Dainik Bhaskar 25-12-25

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 28 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में लगातार पछुआ हवाएं चलने के कारण कोल्ड डे की स्थिति बनी रह सकती है। इन जिलों में 28 दिसंबर तक ठंड का प्रकोप बने रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाया रह सकता है। आसमान में कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
26 दिसंबर	20.0	11.0
27 दिसंबर	20.5	11.0
दरभंगा		
26 दिसंबर	20.5	11.0
27 दिसंबर	20.5	11.5
पटना		
26 दिसंबर	22.8	12.6
27 दिसंबर	22.8	12.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 26-12-25

प्रभात खबर 26.12.25 पेज 2

आलू व मक्का की मिश्रित खेती करने की जरूरत

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े वैज्ञानिक डॉ. धीरू कुमार तिवारी व विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से पूसा के मोरसंड व कैजिया बिष्णुपुर गांव से जुड़े किसानों के आलू मक्का की मिश्रित खेती व आम के बागों का निरीक्षण किया. इस दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को आलू व मक्का की मिश्रित फसल में समय-समय पर हल्की हल्की सिंचाई करते रहने, प्रिकॉशन के रूप में आलू की फसल पर 10 दिनों के अंतराल पर फंगीसाइड का स्प्रे करते रहने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि मौजूदा मौसम पाला के प्रकोप के लिए काफी अनुकूल हैं. ऐसी स्थिति में इस समय आलू उत्पादक किसानों को अपने फसल की विशेष निगरानी करने की जरूरत है. दोनों वैज्ञानिकों बताया कि आलू व मक्का की मिश्रित खेती किसानों के आय को बढ़ाने में सहायक है. मिश्रित खेती की यह तकनीक मिट्टी में नमी बनाये रखने के साथ-साथ फसल में कीटों के प्रकोप को भी कम करती है. आलू मक्के के मिश्रित खेती से किसानों को कम पानी और सीमित भूमि में अधिक उपज मिलती है. उन्होंने आलू के पोषण प्रबंधन पर चर्चा करते हुए कहा कि कैल्शियम, फॉस्फेट व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग और पर्णीय छिड़काव से आलू के कंदों के आकार और गुणवत्ता में दोनों में सुधार होता है. बाद में दोनों वैज्ञानिकों ने कैजिया बिष्णुपुर गांव स्थित कई आम उत्पादक किसानों के बागों का निरीक्षण किया. उन्हें जरूरी सलाह भी दी.

आलू की खेती का निरीक्षण करते वैज्ञानिक .

भास्कर 27.12.25 पेज 15

आयोजन • केंद्रीय कृषि विवि पूसा में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक, वीसी डॉ. पांडेय ने कहा-

कृषि में भविष्य की चुनौतियों के हिसाब से वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने की जरूरत

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक का शुक्रवार को शुभारंभ किया गया। इस बैठक में बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ विश्वविद्यालय गुजरात के पूर्व कुलपति डॉ.ए आर पाठक, कृषि विश्वविद्यालय कोटा राजस्थान के पूर्व कुलपति डॉ.ए के व्यास, कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व कुलपति डॉ.जे पी शर्मा एवं एन आर सी लीची के निदेशक डॉ. विकास दास सम्मिलित हुए। सभी अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम पुसा विवि के कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि पुसा विश्वविद्यालय में अनुसंधान के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई है लेकिन हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर से भी बेहतर बनने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि देश को विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की अहम भूमिका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प देश भर का संकल्प है। उन्होंने कहा कि कृषि में भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने राज्य सरकार के साथ मिलकर अच्छा कार्य किया है।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति व मंचासीन अतिथि।

रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग पर भी काम करना होगा

उन्होंने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को अब रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग और इंटरनेट आफ थिंग्स पर भी काम करना होगा। पूर्व कुलपति डॉ.ए आर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय डॉ.पांडेय के नेतृत्व में पूरे देश को नई राह दिखा रहा है। उन्होंने कहा कि नेचुरल फार्मिंग के क्षेत्र में कोर्स और अनुसंधान शुरू करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि अब सभी विश्वविद्यालयों में नेचुरल फार्मिंग पर कोर्स शुरू करने का निर्णय सरकार ने ले लिया है। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय का दीक्षारंभ भी सभी विश्वविद्यालयों में लागू हो गया है।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की यह परियोजना आने वाले समय में देश और दुनिया को नई राह दिखायेगी। पूर्व कुलपति डॉ. जे पी शर्मा ने कहा कि भारत में जोत का आकार घटकर एक हेक्टेयर से भी कम हो गया है। पानी की उपलब्धता पहले की तुलना में काफी तेजी से कम हो रही है और किसानों का खेती से मोहभंग हो रहा है।

133 नई अनुसंधान परियोजनाओं पर बैठक में मंथन किया जाएगा

उन्होंने कहा कि पूरी प्रकृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कृषि वैज्ञानिकों को भी अपने अनुसंधान में यह ध्यान रखना चाहिए और ऐसी परियोजनाओं को विकसित करना चाहिए जो प्रकृति को, मिट्टी को, फसलों को और मनुष्य को फायदा पहुंचा सके। एनआरसी लीची के निदेशक डॉ.विकास दास ने कहा कि भारत में अन्न की कमी नहीं है। अब हमें पोषण सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए ताकि लोगों को संपूर्ण पोषण मिल सके। निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया और कहा कि इस बैठक में 133 नये अनुसंधान परियोजनाओं पर मंथन किया जाएगा। अनुसंधान परिषद की यह बैठक तीन दिन 26, 27 और 29 दिसंबर को चलेगी। समारोह के दौरान मंच संचालन डा.प्रियंका त्रिपाठी ने जबकि धन्यवाद ज्ञापन सह निदेशक अनुसंधान डॉ.एस के ठाकुर ने किया। मौके पर निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, डीन पीजीसीए डा.मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ. पी पी श्रीवास्तव, निदेशक कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन डॉ. रामदत्त, डॉ.घनश्याम झा, डॉ.महेश कुमार, डॉ.शिवपूजन सिंह, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत अन्य थे।

भास्कर 27.12.25 पेज 16

तीन पॉलिसी पेपर समेत 4 पुस्तकों का विमोचन

पुस्तकों का विमोचन करते कुलपति व अन्य अतिथि।

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित हुए तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक में शुक्रवार को तीन पॉलिसी पेपर समेत कुल चार पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। इसमें बिहार में गोल्डन स्पाइस हल्दी की क्षमता के बेहतर उपयोग पर जारी पालिसी पेपर को डॉ.ऋतंभरा सिंह, डॉ.रश्मि सिन्हा, डॉ.अशीम कुमार मिश्रा और डॉ.पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने लिखा है। इस पालिसी पेपर में बिहार में हल्दी फसल को बढ़ावा देने के लिए एक समग्र नीति एवं ढांचा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। यह स्थायी मूल्य श्रृंखला स्थापित करने के साथ आय और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने में बल देगा। इसके अलावे बैठक में उत्तर बिहार में जलवायु अनुकूल कृषि पर केंद्रित दो महत्वपूर्ण नीति दस्तावेज भी जारी किये गए। जारी किए गए नीति दस्तावेजों में उत्तर बिहार में जलवायु अनुकूल कृषि का पोषण, प्रभाव आकलन और नीति सिफारिशें व संक्षिप्त विवरण शामिल है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 31 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि पछुआ हवाएं चलने और हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने के कारण उत्तर बिहार के जिलों में ठंड बढ़ सकती है। जेट हवाओं के प्रभाव से कोल्ड डे की स्थिति बनी रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाए रहने की संभावना है। कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
27 दिसंबर	15.4	11.0
28 दिसंबर	15.4	12.0
	दरभंगा	
27 दिसंबर	15.4	12.0
28 दिसंबर	17.5	12.0
	पटना	
27 दिसंबर	19.8	13.6
28 दिसंबर	19.8	13.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-12-2025

भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखकर अनुसंधान करें विज्ञानी : कुलपति

अनुसंधान परिषद की बैठक में पहुंचे तीन कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक शुक्रवार से शुरू हुई। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई है लेकिन हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बेहतर बनने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि देश को विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की भूमिका अहम है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प देश भर का संकल्प है। उन्होंने कहा कि कृषि की भविष्य में चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने की आवश्यकता है। जलवायु अनुकूल कृषि के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने राज्य सरकार के साथ मिलकर अच्छा कार्य किया है। चतुर्थ कृषि रोड मैप के तहत राज्य के कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है। बिहार में छोटे जोत के किसान अधिक है। इसलिए ऐसे यंत्रों को विकसित करने की जरूरत है जो स्वचालित तरीके से काम कर सके और उसका दाम भी कम हो। उन्होंने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को अब रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग और इंटरनेट आफ थिंग्स पर भी काम करना होगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने समेकित कृषि का माडल विकसित किया है लेकिन अब छोटे किसानों और मध्यम जोत वाले किसानों को ध्यान में रखकर कई नये माडल विकसित करने होंगे।

संबोधित करते कुलपति व मंचस्थ अतिथि • जागरण

अनुसंधान परिषद की बैठक में पहुंचे ब्रह्म विशेषज्ञ नवसारी एवं जूनागढ़ विश्वविद्यालय गुजरात के पूर्व कुलपति डा. एआर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय डा. पांडेय के नेतृत्व में पूरे देश को नई राह दिखा रहा है। डा. पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय का जलवायु अनुकूल अनुसंधान परियोजना राज्य के तेरह जिलों में पचहत्तर हजार से अधिक किसानों की आमदनी में बीस प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व कुलपति डा. जेपी शर्मा ने कहा कि भारत में जोत का आकार घटकर एक हेक्टेयर से भी कम हो गया है। पानी की उपलब्धता पहले की तुलना में काफी तेजी से कम हो रही है और किसानों का खेती से मोहभंग हो रहा है। कृषि विश्वविद्यालय राजस्थान कोटा के पूर्व कुलपति डा. एके व्यास ने कहा कि मनुष्य और प्रकृति का स्वास्थ्य कृषि से जुड़ा हुआ है। मिट्टी का स्वास्थ्य खराब होगा तो पौधों और फसलों का स्वास्थ्य खराब होगा और फिर मनुष्य का स्वास्थ्य खराब होगा। एनआरसी लीची के निदेशक डा. विकास दास ने कहा कि भारत में अन्न की कमी नहीं है अब हमें पोषण सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए ताकि लोगों को संपूर्ण पोषण मिल सके।

निदेशक अनुसंधान डा. ए के सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया और कहा कि इस बैठक में 133 नये अनुसंधान परियोजनाओं पर मंथन किया जाएगा।

तीन पालिसी पेपर और चार पुस्तक का हुआ लोकार्पण

संस, जागरण • पूसा : केन्द्रीय कृषि वि में आयोजित तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक में चार पुस्तक एवं तीन पालिसी पेपर का विमोचन किया गया। इसमें बिहार में गोल्डन स्पाइस हल्दी की क्षमता के बेहतर उपयोग को विश्वविद्यालय के विज्ञानी डा. ऋतंभरा सिंह, डा.रश्मि सिन्हा, डा.असीम कुमार मिश्रा और कुलपति डा.पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने लिखा है। इस पालिसी पेपर में बिहार में हल्दी फसल को बढ़ावा देने के लिए एक समग्र नीति एवं ढांचा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। यह स्थायी मूल्य श्रृंखला स्थापित करने के साथ आय और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने में बल देगा। इसके अलावा उत्तर बिहार में जलवायु अनुकूल कृषि पर केंद्रित दो महत्वपूर्ण नीतिगत दस्तावेज भी जारी किये गए। नीति दस्तावेजों में उत्तर बिहार में जलवायु अनुकूल कृषि का पोषण, प्रभाव, आकलन और नीति की सिफारिशों का संक्षिप्त विवरण शामिल है। ये दस्तावेज बिहार सरकार से वित्त पोषित 80 करोड़ की एक परियोजना का परिणाम हैं। जिसमें विवि के अधिकार क्षेत्र में आने वाले 11 जिलों पर कार्य किया गया है।

Dainik Jagran 27-12-2025

रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग पर कार्य करें वैज्ञानिक: वीसी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि कृषि के बदलते दौर में वैज्ञानिकों को रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर कार्य करने की जरूरत है। इसके अलावा छोटे व मध्यम जोत के किसानों को ध्यान में रखकर कृषि यंत्रों का विकास करना समय की मांग है।

वे शुक्रवार को विवि के विद्यापति सभागार में वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था विवि के 3 दिवसीय 20वीं अनुसंधान परिषद (रबी) के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए शोध व तकनीकों का विकास करें। कार्यक्रम में जूनागढ़ विवि के पूर्व कुलपति डॉ एआर पाठक, कृषि विवि कोटा, राजस्थान के पूर्व कुलपति डॉ.एके व्यास, जम्मू-कश्मीर विवि के पूर्व कुलपति डॉ.जेपी शर्मा, एनआरसी लीची के निदेशक डॉ.विकास दास आदि ने भी अपने अनुभवों को साझा किया। स्वागत निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह, संचालन डॉ. प्रियंका त्रिपाठी व धन्यवाद डॉ.संतोष कुमार ठाकुर ने दिया। मौके पर डीन-डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे।

03 दिनों तक अनुसंधान परियोजनाओं पर मंथन

Hindustan 27-12-2025

जलवायु अनुकूल परियोजना दुनिया को दिखायेगी नयी राह : डॉ पाठक

प्रतिनिधि,पूसा

दीप जलाकर बैठक का शुभारंभ करते अतिथि.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की 20वीं बैठक शुरु हुई. अध्यक्षता कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने की. बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ विश्वविद्यालय गुजरात के पूर्व कुलपति डॉ एआर पाठक, कृषि विश्वविद्यालय कोटा राजस्थान के पूर्व कुलपति डॉ एके व्यास, कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व कुलपति डॉ जेपी शर्मा एवं एनआरसी लीची मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ विकास दास सम्मिलित हुए. पूर्व कुलपति डॉ पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय डॉ पांडेय के नेतृत्व में पूरे देश को नई राह दिखा रहा है. उन्होंने कहा कि नेचुरल फार्मिंग के क्षेत्र में कोर्स और अनुसंधान शुरू करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है. उन्होंने कहा कि अब सभी विश्वविद्यालयों में नेचुरल फार्मिंग पर कोर्स शुरू करने का निर्णय सरकार ने ले लिया है. डॉ पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय का जलवायु अनुकूल अनुसंधान परियोजना से राज्य के तेरह जिलों में पचहत्तर हजार से अधिक किसानों की आमदनी में बीस प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है. तीस प्रतिशत से अधिक पानी की बचत हुई है. किसानों ने पैंतीस प्रतिशत कम खाद का प्रयोग किया है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की यह परियोजना आने वाले समय में देश और दुनिया को नई राह दिखायेगा. पूर्व कुलपति डॉ जे पी शर्मा ने कहा कि भारत मे जोत का आकार घटकर एक हेक्टेयर से भी कम हो गया है. पानी की उपलब्धता पहले की तुलना में काफी तेजी से कम हो रही है और किसानों का खेती से मोहभंग हो रहा है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को इन तीनों पर ही काम करने की आवश्यकता है. पूर्व कुलपति डॉ व्यास ने कहा कि मनुष्य और प्रकृति का स्वास्थ्य कृषि से जुड़ा हुआ है. मिट्टी का स्वास्थ्य खराब होगा तो पौधों और फसलों का स्वास्थ्य खराब होगा. फिर मनुष्य का स्वास्थ्य खराब होगा. उन्होंने कहा कि पूरी प्रकृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. कृषि वैज्ञानिकों को भी अपने अनुसंधान में यह ध्यान रखना चाहिए. ऐसी परियोजनाओं को विकसित करना चाहिए जो प्रकृति, मिट्टी, फसलों और मनुष्य को फायदा पहुंचा सके. एनआरसी लीची के निदेशक डॉ दास ने कहा कि भारत में अन्न की कमी नहीं है. अब हमें पोषण सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए.

133 अनुसंधान पर होगा मंथनः निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बताया. कहा कि इस बैठक में 133 नये अनुसंधान परियोजनाओं पर मंथन किया जायेगा. इसके साथ ही विश्वविद्यालय में चल रहे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं सहित अन्य परियोजनाओं की समीक्षा की जायेगी. अनुसंधान परिषद की बैठक 26 , 27 व 29 दिसंबर तक चलेगी. संचालन डा प्रियंका त्रिपाठी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन सह निदेशक अनुसंधान डॉ एसके ठाकुर ने किया. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डीन पीजीसीए डा मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, निदेशक कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन डॉ रामदत्त, डॉ घनश्याम झा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन थे.

भविष्य की चुनौतियों को लेकर बेहतर अनुसंधान करने की जरूरत : कुलपति

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्यापति सभागार में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की 20वीं बैठक को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई है. लेकिन हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर से भी बेहतर बनने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि देश को विकसित बनाने में वैज्ञानिकों की अहम भूमिका है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प देश भर का संकल्प है. उन्होंने कहा कि कृषि की भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने राज्य सरकार के साथ मिलकर अच्छा कार्य किया है. चौथे कृषि रोड मैप के तहत राज्य के कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है. उन्होंने कहा कि बिहार में छोटे जोत के किसान अधिक है. इसलिए ऐसे यंत्रों को विकसित करने की जरूरत है जो स्वचालित तरीके से काम कर सके. उसका दाम भी कम हो. कुलपति ने कहा कि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को अब रोबोटिक्स, प्रेसीजन फार्मिंग व इंटरनेट आफ थिंग्स पर भी काम करना होगा. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने समेकित कृषि का माडल विकसित किया है. लेकिन अब छोटे किसानों और मध्यम जोत वाले किसानों को ध्यान में रखकर कई नये मॉडल विकसित करने होंगे.

Prabhat Khabar 27-12-2025

विवि में चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा हुई

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | पूसा

बैठक में मौजूद कुलपति व विशेषज्ञ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे अनुसंधान परिषद की बैठक के दूसरे दिन अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना समेत विश्वविद्यालय में चल रहे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई। अनुसंधान परियोजना से जुड़े वैज्ञानिकों ने अनुसंधान की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट को प्रस्तुत किया। प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के दौरान रिपोर्ट से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में बाह्य विशेषज्ञों ने संबंधित वैज्ञानिको से सवाल भी पूछे और संबंधित वैज्ञानिको को महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. ए आर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अच्छा कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वार्षिक समीक्षा से अनुसंधान के प्रगति को गति मिलती है। कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने सभी परियोजनाओं से संबंधित वैज्ञानिकों के प्रगति प्रतिवेदन की गहन समीक्षा की। निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह ने कहा कि अनुसंधान परिषद की बैठक तीन दिन चलेगी। इसमें साठ से अधिक नये अनुसंधान परियोजनाओं को प्रस्तुत किया।

Dainik Bhaskar 29-12-2025

मशरूम रिसर्च, जैव विविधता पार्क, गन्ना अनुसंधान केंद्र का जीएम ने किया भ्रमण

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा पहुंचे जीएम

- वैज्ञानिकों ने दी मशरूम उत्पादन की तकनीक की जानकारी
- विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट कार्यों को लेकर वीसी की सराहना की

संस, जागरण ● पूसारोड : पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह अपने परिवार के सदस्यों के साथ शनिवार को डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा पहुंचे। यहां पहुंचकर उन्होंने के एडवांस सेंटर आफ मशरूम रिसर्च, जैव विविधता पार्क, गन्ना अनुसंधान केंद्र में स्थापित संग्रहालय का भ्रमण किया। विश्वविद्यालय के विज्ञानी डा. दिव्यांशु शेखर व डा. कुमार राज्यवर्धन ने जीएम व उनके परिवार के सदस्यों को विश्वविद्यालय में दी जा रही शिक्षा, विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न कृषि अनुसंधान कार्य और प्रसार के बारे में जानकारी दी।

पूसा में मशरूम केंद्र में रेल महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ● जागरण

इधर, एडवास सेंटर आफ मशरूम रिसर्च के भ्रमण के दौरान मशरूम के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. दयाराम व डा. आरपी प्रसाद ने जीएम व उनके परिवार के सदस्यों को मशरूम उत्पादन की तकनीक, मशरूम से बनाए जा रहे तमाम तरह के उत्पाद आदि के बारे में जानकारी दी। जीएम ने सपरिवार मशरूम से बने व्यंजनों का आनंद भी लिया। जीएम ने गेस्ट हाउस में कुलपति डा. पीएस पांडेय से मुलाकात की। विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को लेकर कुलपति की सराहना भी की। पूर्व जीएम अपने विशेष सैलून ट्रेन से खुदीराम बोस पूसा स्टेशन पहुंचे थे। पूसा विश्वविद्यालय जाने के लिएगाड़ियों की व्यवस्था की गई थी। जीएम के भ्रमण यात्रा के दौरान समस्तीपुर मंडल रेल प्रबंधक ज्योति प्रकाश मिश्रा, मंडल सुरक्षा आयुक्त आशीष कुमार, ट्रैफिक इंस्पेक्टर मनोज कुमार, पूसा स्टेशन अधीक्षक मंजय कुमार आदि भी मौजूद रहे। बाद में जीएम रेलमंडल मुख्यालय पहुंचे और सभी प्रशासनिक पदाधिकारी मौजूद रहे।

डाउन प्लेटफार्म पर कार्यों का लिया जायजा

संवाद सहयोगी, जागरण ● पूसारोड : पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने शनिवार को खुदीराम बोस पूसा स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन के डाउन प्लेटफार्म पर चल रहे उन्नयन कार्यों का जायजा लिया। रेल अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिया। खुदीराम बोस पूसा स्टेशन के समस्तीपुर रेल मंडल में स्थानांतरित होने के बाद महाप्रबंधक का यह पहला निरीक्षण था। उन्होंने समस्तीपुर रेल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक ज्योति प्रकाश मिश्रा सहित अन्य अधिकारियों के साथ करीब आधे घंटे तक स्टेशन विकास समेत विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया। महाप्रबंधक दिन में करीब 12.25 बजे विशेष निरीक्षण ट्रेन से पूसा स्टेशन पहुंचे। उनके आगमन को लेकर स्टेशन परिसर में रेल सुरक्षा बल द्वारा सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की गई थी। स्टेशन का निरीक्षण पूरा करने के बाद महाप्रबंधक का काफिला सड़क मार्ग से पूसा की ओर प्रस्थान कर गया, जबकि उनकी विशेष निरीक्षण ट्रेन समस्तीपुर के लिए रवाना हो गई।

वार्षिक समीक्षा से अनुसंधान कार्यों से मिलती नई गति : पूर्व कुलपति

अनुसंधान परिषद की बैठक में मौजूद कुलपति व अन्य ● जागरण

संस, जागरण ● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में अनुसंधान परिषद की बैठक दूसरे दिन शनिवार को भी जारी रही। इसमें अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं सहित विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई। अनुसंधान परियोजनाओं से जुड़े वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

रिपोर्टों के विभिन्न पहलुओं पर बाह्य विशेषज्ञों ने प्रश्न पूछे तथा महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित नवसारी एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एआर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक सराहनीय कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की वार्षिक समीक्षा से अनुसंधान कार्यों को नई गति मिलती है। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने सभी अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित वैज्ञानिकों की प्रगति रिपोर्ट की गहन समीक्षा की। वहीं निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह ने बताया कि अनुसंधान परिषद की यह बैठक तीन दिनों तक चलेगी। इस दौरान 60 से अधिक नई अनुसंधान परियोजनाओं को भी प्रस्तुत किया जाएगा, जिनकी उपयोगिता के आधार पर गहन समीक्षा कर संस्तुति की जाएगी।

बैठक में निदेशक पीजीसीए डा. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डा. पीपी श्रीवास्तव, निदेशक एग्री-बिजनेस डा. रामदत्त, डा. शिवपूजन सिंह, डा. महेश कुमार, डा. कुमार राज्यवर्धन सहित अन्य लोग भी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 28-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 31 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि पछुआ हवाएं चलने और हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने के कारण उत्तर बिहार के जिलों में ठंड बढ़ सकती है। जेट हवाओं के प्रभाव से कोल्ड डे की स्थिति बनी रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाए रहने की संभावना है। कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
28 दिसंबर	15.4	11.0
29 दिसंबर	15.4	12.0
	दरभंगा	
28 दिसंबर	15.4	12.0
29 दिसंबर	17.5	12.0
	पटना	
28 दिसंबर	19.8	13.6
28 दिसंबर	19.8	13.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 28-12-2025

60 से अधिक अनुसंधान के बारे में बताया

बैठक

शनिवार को विवि के विद्यापति सभागार में अनुसंधान की बैठक में वीसी व अन्य।

- अनुसंधान परिषद की बैठक आयोजित
- परियोजनाओं की दूसरे दिन हुई समीक्षा

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में जारी 3 दिवसीय 20वीं अनुसंधान परिषद की बैठक शनिवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना समेत विवि में चल रही राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई।

अनुसंधान परियोजना से जुड़े वैज्ञानिकों ने अनुसंधान की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में बाह्य विशेषज्ञों ने सवाल पूछे और सुझाव दिये। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ.एआर पाठक ने कहा कि वैज्ञानिक अच्छा कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वार्षिक समीक्षा से अनुसंधान की प्रगति को गति मिलती है।

कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने सभी परियोजनाओं से संबंधित वैज्ञानिकों के प्रगति प्रतिवेदन की गहन समीक्षा की। निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने कहा कि अनुसंधान परिषद की बैठक 60 से अधिक नये अनुसंधान परियोजनाओं को भी प्रस्तुत किया जायेगा। जिसकी गहन समीक्षा के बाद उपयोगी होने पर उसकी संस्तुति की जायेगी। मौके पर डीन- डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे।

Hindustan 28-12-2025

पूमरे के महाप्रबंधक ने पूसा का किया भ्रमण

कार्यक्रम

समस्तीपुर/पूसा, हिटी। पूर्व मध्य रेलवे (हाजीपुर) के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने शनिवार को पूसा स्टेशन पहुंचे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने यहां की गतिविधियों को जाना। बाद में वे विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय से मुलाकात की।

शनिवार को पूसा के मशरूम विभाग का भ्रमण करते रेलवे के महाप्रबंधक।

मिली जानकारी के अनुसार महाप्रबंधक अपने विशेष सैलून से खुदीराम बोस, पूसा स्टेशन पहुंचे। इस दौरान वहां पूर्व से लगी वाहन से वे पूसा पहुंचे। यहां विवि के ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा परिसर में बने म्यूजियम का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान विवि के ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत हुए। बाद में विवि के जैव विविधता पार्क गये। जहां भ्रमण के बाद विवि के मशरूम विभाग पहुंचे। इस दौरान मशरूम उत्पादन, उसके उत्पाद व व्यंजनों के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। बाद में कुलपति से मिलकर विवि की गतिविधियों को जाना। मिली जानकारी के अनुसार कार्यक्रम निजी होने के कारण कोई भी कुछ बोलने से परहेज करते रहे।

उधर, पूर्व मध्य रेलवे के जीएम छत्रसाल सिंह शनिवार को पाटलिपुत्र. समस्तीपुर रेल खंड का विंडो ट्रोलिंग निरीक्षण किए। इस दौरान रेलखंड पर परिचालन की स्थिति का जायजा लिया। बाद में जीएम खुदीराम बोस पूसा स्टेशन भी पहुंचे। देर शाम समस्तीपुर रेल मंडल स्थित ललित कला केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। बताते चले कि रविवार को जीएम समस्तीपुर जयनगर रेल खंड का निरीक्षण भी करेंगे।

वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत की शोध की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट

कृषि स्मारिका विमोचित करते अतिथि .

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 20वीं अनुसंधान परिषद की बैठक के दूसरे दिन अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना समेत विश्वविद्यालय में चल रहे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई. अनुसंधान परियोजना से जुड़े वैज्ञानिकों ने शोध की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किये. रिपोर्ट से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में बाह्य विशेषज्ञों ने सवाल पूछे और सुझाव दिये. बाह्य विशेषज्ञ के रूप में नवसारी एवं जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ एआर पाठक ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अच्छा कार्य कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि वार्षिक समीक्षा से अनुसंधान के प्रगति को गति मिलती है. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने सभी परियोजनाओं से संबंधित वैज्ञानिकों के प्रगति प्रतिवेदन की गहन समीक्षा की. निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि अनुसंधान परिषद की बैठक तीन दिन तक चलेगी. इसमें साठ से अधिक नये अनुसंधान परियोजनाओं को भी प्रस्तुत किया जायेगा. जिसकी गहन समीक्षा के बाद उपयोगी होने पर उसकी संस्तुति की जायेगी. अनुसंधान परियोजना की बैठक में निदेशक पीजीसीए डा मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, निदेशक एग्री-बिजनेस डॉ रामदत्त, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ महेश कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन मौजूद थे.

Prabhat Khabar 29-12-2025

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में हुआ कार्यक्रम

मशरूम का उत्पादन स्वरोजगार का साधन : डॉ रत्नेश

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मशरूम उत्पादन व संवर्द्धन उत्पाद तथा विपणन विषय पर चल रहे पांच दिवसीय प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही संपन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मशरूम उत्पादन, संवर्धन और विपणन का महत्व पोषण, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बहुत अधिक है. यह कम लागत, सीमित स्थान में स्वरोजगार, कृषि अपशिष्टों का उपयोग और प्रोटीन व विटामिन से भरपूर भोजन प्रदान करता है. जिससे कुपोषण कम होता है. वहीं विपणन और मूल्य संवर्धन किसानों की आय बढ़ाते हैं. बाजार की मांग पूरी करते हैं. उद्योग को टिकाऊ बनाते हैं. उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन, विटामिन बी, डी व खनिज आयरन, जिंक, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर जो कुपोषण और बीमारियों मधुमेह, मोटापा को दूर करने में मदद करता है. कम पूंजी, कम समय और कम जगह में अधिक आय का स्रोत, जो युवाओं और महिलाओं के लिए स्वरोजगार का शानदार अवसर है. इससे प्रदूषण कम होता है और अपशिष्ट खाद में बदल जाता है. साथ ही निदेशक डॉ झा ने कहा कि मशरूम को सुखाकर, पाउडर बनाकर या उससे स्नैक्स व अन्य खाद्य उत्पाद बनाकर उसकी शेल्फ लाइफ और बाजार मूल्य बढ़ाया जा सकता है. संगठित विपणन से अतिरिक्त उत्पादन की समस्या खत्म होती है. जिससे आर्थिक लाभ बढ़ता है. जागरूकता अभियान, विज्ञापन व लोगों को मशरूम के स्वास्थ्य लाभों के बारे में शिक्षित करके इसकी खपत बढ़ाई जा सकती है. धन्यवाद ज्ञापन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने किया. जिला कृषि पदाधिकारी डॉ सुमित सौरभ सह परियोजना निदेशक के मार्गदर्शन में विभिन्न प्रखंडों के 30 कृषकों के दल को आवासीय प्रशिक्षण दिया गया. मौके एटीएम मारुतनंदन शुक्ला, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, बिक्की कुमार मौजूद थे.

प्रमाण पत्र वितरण के उपरांत वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी.

Prabhat Khabar 29-12-2025

भास्कर 29.12.25 पेज 15

ठंड में मवेशियों का रखें ध्यान • बिहार के पशुपालक पशु वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार पशुओं की देखभाल करें, पशु के शरीर के तापमान का रखें ध्यान

जाड़े के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल अत्यंत ही जरूरी : डॉ. रंजन

भास्कर न्यूज | पूसा

पिछले एक सप्ताह के मौसम पर गौर करें तो मौसमीय तापमान में आई भारी गिरावट के कारण फसलों के साथ-साथ मवेशियों खासकर दुधारू पशुओं पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा है। ऐसी स्थिति में पशुपालकों के लिए पशुओं का उचित देखभाल अत्यंत ही जरूरी हैं अन्यथा ठंड की चपेट में आकर पशु जहां गंभीर रूप से बीमार पर सकते हैं। वही पशुओं की जान भी जा सकती हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ राष्ट्रीय गोकुल मिशन पश्चिम चंपारण के वरीय पशु वैज्ञानिक सह प्राध्यापक डॉ. रंजन कुमार ने दी है। उन्होंने पशुपालकों को अपने-अपने पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए कई जरूरी व महत्वपूर्ण टिप्स बताएं। उन्होंने कहा कि जाड़े के मौसम में गाय व भैंस के अलावे अन्य पशु

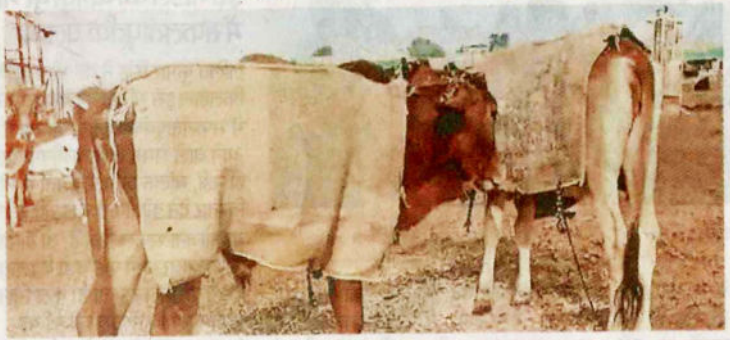

ठंड से बचाव के लिए पशुओं को ओढ़ाया गया जुट का बोरा।

अपने शरीर में तापमान को बनाएं रखने के लिए जहां ज्यादा ऊर्जा की खपत करते है। वही ठंड की वजह से पशुओं का दुग्ध उत्पादन भी बुरी तरह से प्रभावित होता है। अतः ऐसी स्थिति में पशुपालक पशुओं के शरीर का तापमान एवं दुग्ध उत्पादन के क्षमता को बनाएं रखने के लिए सामान्य दिनों की अपेक्षा से पशुओं को करीब 20 प्रतिशत अतिरिक्त आहार जरूर खिलाएं। उन्होंने पशुओं के आवास प्रबंधन को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि पशुपालक जाड़े के दिनों में पशुओं के घर को गर्म रखने के लिए खिड़कियों पर जुट का बोरा लगाने के साथ-साथ छत पर भूसा व पुआल अवश्य डाले। यदि संभव हो तो अत्यधिक ठंड के समय अलाव या हीटर का भी उपयोग करें। पशुओं के घर के अंदर पशुओं को बैठने या आराम करने के लिए जमीन पर पुआल डाले। पशु के शरीर को ढकने के लिए जुट के बोरे का उपयोग करें। हालांकि उन्होंने बताया कि पशु गृह में हवा का आदान प्रदान अच्छी तरह से जरूर होना चाहिए। चूंकि जाड़े के मौसम में यह प्रायः देखने को मिलता है कि पशु गृह में अंधेरे तथा आद्रता के वजन से पशुओं में निमोनिया की समस्या काफी बढ़ जाती है।

पशुओं में होने वाले थनैला रोग का उचित प्रबंधन करें

इस मौसम में थनैला रोग की भी संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में पशुपालक पशुओं को दुहने से पूर्व अपने हाथों को बढ़िया से साबुन से धो लें। इसके अलावे दोनो टाईम पशु के थन को भी हल्के गर्म पानी से धोएं। पशु के बांधने के स्थल पर दोनों टाइम साफ-सफाई करें। उन्होंने बताया कि पशुओं को ठंड में खासकर उचित मात्रा में मिनरल मिक्चर जरूर खिलाएं। पशुपालक अपने पशुओं को 50 ग्राम मिनरल मिक्चर 24 घंटे में एक बार दे सकते हैं। इसके अलावे तोड़ी, मूंगफली, सूर्यमुखी, बिनोला आदि की खल्ली 500 ग्राम रोजाना अपने पशुओं को खिलाएं। उन्होंने बताया कि मच्छर के काटने से पशुओं को सर्रा नाम की बीमारी भी हो जाती है। ऐसे में पशुपालक मवेशियों के स्थल पर शाम में धुंआ भी जरूर करें।

ठंड के दिनों में पशुओं को अवश्य दें कीड़े की दवा, पाचन रहेगा ठीक

पशु वैज्ञानिक डॉ. रंजन ने बताया कि जारे के मौसम में पशुओं में कृमि (परजीवी) का प्रकोप ज्यादा हो जाता है। अतः पशुपालक अपने अपने पशुओं के पेट के कीड़े को मारने के लिए दवाओं का प्रयोग जरूर करें। इसके अलावे अगर पशुओं का टीकाकरण नहीं करवाया गया है तो पशुओं को निश्चित रूप से टीका लगवाएं। टीकों के प्रयोग से पशुपालक अपने पशुओं को मुंहपका, गलाघोटू एवं लंगड़ी आदि जैसी बीमारियों से बचा सकते हैं।

कार्यक्रम • प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय प्रयागराज में कृषि शिक्षा की पढ़ाई कर रहे छात्र पहुंचे

भास्कर 29.12.25 पेज 15

मशरूम उत्पादन तकनीकों की ली जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय प्रयागराज में कृषि शिक्षा की पढ़ाई कर रहे छात्र-छात्राओं का एक दल डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा पहुंचा है। सात दिवसीय दौरे पर आएं ये छात्र खासकर मशरूम उत्पादन व प्रसंस्करण से जुड़ी तकनीकों को जानने व समझने पहुंचे हैं। विवि के मशरूम विभाग के पूर्व प्राध्यापक एवं मशरूम सलाहकार डॉ. दयाराम के नेतृत्व में ये सभी छात्र रविवार को पूसा के कैंजिया विष्णुपुर गांव निवासी एवं मशरूम के बड़े उत्पादक किसान लालबाबू सिंह के रिमझिम मशरूम फार्म का विजिट किया। विजिट के दौरान किसान लालबाबू सिंह ने छात्रों को बताया कि वे साल 2010 से मशरूम उत्पादन का कार्य कर रहे हैं। आज उनके फार्म में बटन, भूरा बटन और पोर्टोबेला मशरूम का उत्पादन किया जा रहा हैं। कभी किलो में उत्पादन देने वाले आज इस फार्म से प्रतिदिन दो क्विंटल से अधिक मशरूम उत्पादन कर बिहार के कई जिलों में बेचा जा रहा हैं। उन्होंने छात्रों को मशरूम उत्पादन की तकनीक, इसमें आने वाली समस्या, मशरूम की पैकेजिंग और मार्केटिंग के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. दयाराम ने बताया कि मशरूम के बड़े उत्पादक किसान लालबाबू सिंह आज के दौर में मशरूम का व्यवसाय शुरू करने वाले खासकर युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। इसके बाद छात्रों ने कैंजिया गांव से निकलकर पुसारोड स्थित संतोष गुप्ता व राधेश्याम गुप्ता के नियंत्रित कक्ष में चल रहे मशरूम उत्पादन इकाई का भ्रमण भी किया। यहां छात्रों को नियंत्रित कक्ष में सालों भर मशरूम उत्पादन करने की तकनीक से रूबरू कराया गया। मौके पर मुकेश कुमार, रानी देवी थे।

छात्रों को मशरूम पैकिंग कर दिखाते मशरूम उत्पादक किसान।

भास्कर 29.12.25 पेज 14

अनुसंधान परिषद की बैठक में नई अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा

अनुसंधान परिषद की बैठक में हाइब्रिड धान के उत्पादन की तकनीक

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में रविवार को भी अनुसंधान परिषद के बैठक की कार्यवाही जारी रही। इससे पहले शनिवार को अनुसंधान परिषद की बैठक रात दस बजे तक चली थी। लेकिन अधिक संख्या में अनुसंधान परियोजनाओं और उनपर चल रहे गहन समीक्षा में लगने वाले समय को देखते हुए कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने सभी संकाय सदस्यों की सहमति से इसे रविवार को भी जारी रखने का निर्णय लिया था। रविवार को हुई बैठक में नये अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई जिसमें से कई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई जबकि कई परियोजनाओं को फिर से विभिन्न आयामों को जोड़कर और बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा दिये गये सुझावों के अनुसार फिर से अगली बैठक में प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया। इसके अलावे अनुसंधान परिषद की बैठक में हाइब्रिड धान के उत्पादन की तकनीक सहित कई अन्य कई तकनीकों को भी प्रस्तुत किया गया। परिषद के सदस्यों के द्वारा इन तकनीकों की सराहना की गई और कुछ सुझाव के साथ अगले बैठक में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। अनुसंधान परिषद का सोमवार को समापन समारोह आयोजित किया जाएगा।

बैठक को संबोधित करते कुलपति व मौजूद वैज्ञानिक।

बैठक को संबोधित करते कुलपति व मौजूद वैज्ञानिक।

दैनिक जागरण 29.12.25 पेज.6

अनुसंधान परिषद में हुई नई अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा

संस, जागरण ● पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में रविवार को भी अनुसंधान परिषद की बैठक चलती रही। शनिवार को अनुसंधान परिषद की बैठक रात दस बजे तक चली । लेकिन अधिक संख्या में अनुसंधान परियोजनाओं और उनपर चल रहे गहन समीक्षा में लगने वाले समय को देखते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने सभी संकाय सदस्यों की सहमति से इसे रविवार को भी जारी रखने का निर्णय लिया। रविवार को हुइ बैठक में नए

बैठक में कुलपति, विशेषज्ञ एवं संबंधित वैज्ञानिक ● जागरण

अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई। इसमें से कई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई ज़बकि कई परियोजनाओं को फिर से विभिन्न आयामों को जोडकर और बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा दिये गये सुझावों के अनुसार फिर से अगली बैठक में प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया। अनुसंधान परिषद की रविवार की बैठक में कुछ हाइब्रिड धान से उत्पादन तकनीक एवं अन्य कई तकनीकों को भी प्रस्तुत किया गया। इसकी सराहना की गई और कुछ सुझाव के साथ अगली बैठक में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। अनुसंधान परिषद का समापन सोमवार को होगा। इसमें किसानों से विभिन्न तकनीक एवं रबी फसलों के उन्नत प्रभेदों की बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा गहन समीक्षा के बाद रिलीज करने का निर्णय लिया जा सकता है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 31 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि पछुआ हवाएं चलने और हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने के कारण उत्तर बिहार के जिलों में ठंड बढ़ सकती है। जेट हवाओं के प्रभाव से कोल्ड डे की स्थिति बनी रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाए रहने की संभावना है। कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
29 दिसंबर	15.4	11.0
30 दिसंबर	15.4	12.0
	दरभंगा	
29 दिसंबर	15.4	12.0
30 दिसंबर	17.5	12.0
	पटना	
29 दिसंबर	19.8	13.6
30 दिसंबर	19.8	13.6

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 29.12.25 पेज 6

कृषि छात्रों ने मशरूम उत्पादन की आधुनिक तकनीक को समझा

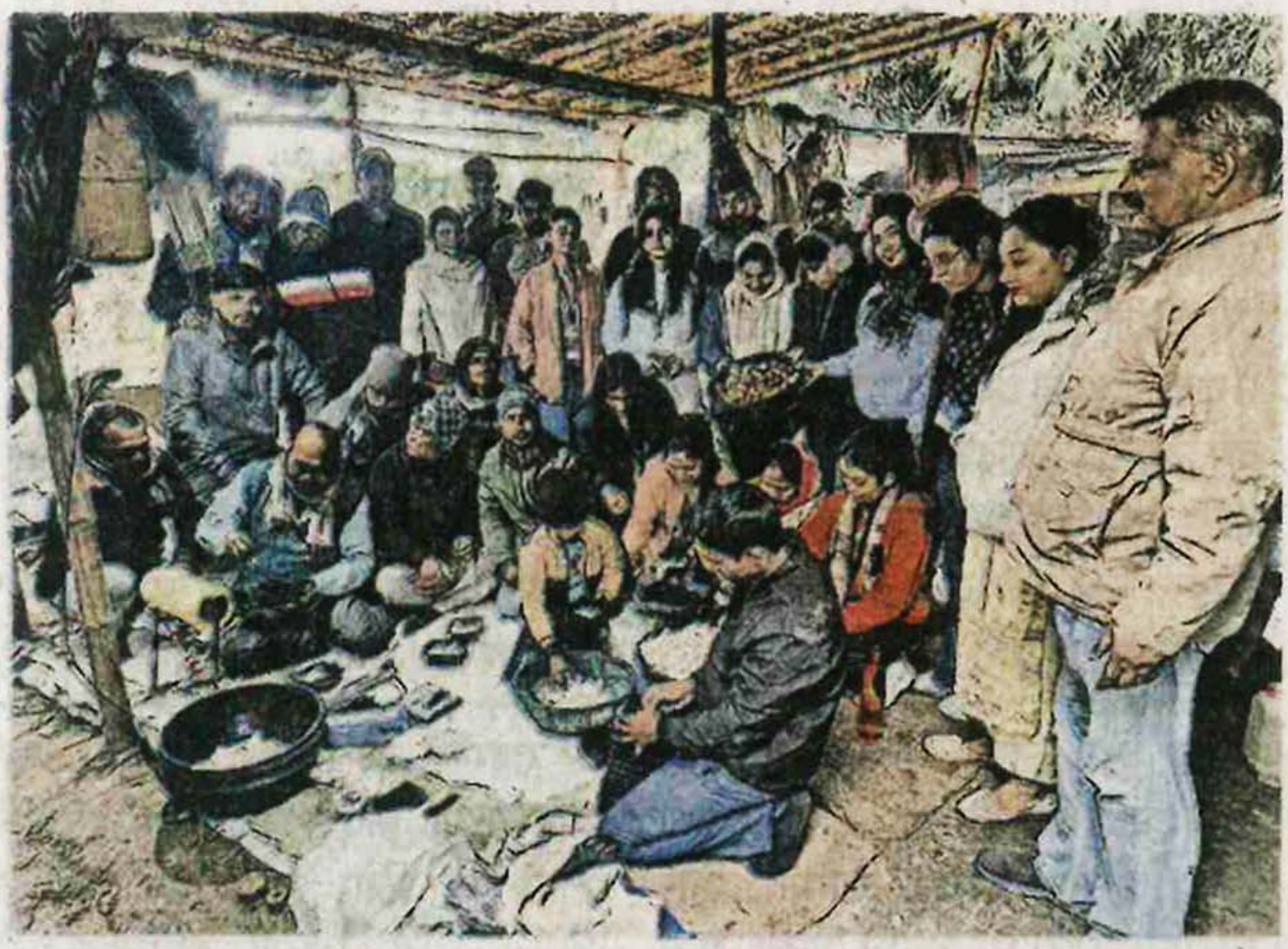

मशरूम केंद्र में जानकारी लेते प्रयागराज विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं ● जागरण

संस, जागरण, पूसारोड : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में सैम हिगिनबाटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कृषि शिक्षा के छात्र-छात्राओं का एक दल रविवार को पहुंचा। सात दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण पर आए इन छात्रों का मुख्य उद्देश्य मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण से जुड़ी आधुनिक तकनीकों को समझना है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. दयाराम के नेतृत्व में छात्रों ने पूसा प्रखंड के कैजिया बिष्णुपुर गांव निवासी एवं मशरूम के बड़े उत्पादक किसान लालबाबू सिंह के रिमझिम मशरूम फार्म का भ्रमण किया। इस दौरान किसान लालबाबू सिंह ने छात्रों को बताया कि वे वर्ष 2010 से मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में उनके फार्म पर बटन, भूरा बटन एवं पोर्टोबेलो मशरूम का उत्पादन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कभी सीमित मात्रा में उत्पादन करने वाला उनका फार्म आज प्रतिदिन दो क्विंटल से अधिक मशरूम का उत्पादन कर रहा है, जिसे बिहार के कई जिलों में बाजार उपलब्ध कराया जाता हैं। छात्रों को मशरूम उत्पादन की तकनीक, उत्पादन के दौरान आने वाली समस्याएं, पैकेजिंग एवं विपणन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डा. दयाराम नें कहा कि किसान लालबाबू सिंह आज मशरूम व्यवसाय में युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन चुके हैं।

इसके उपरांत छात्रों ने पूसा रोड स्थित संतोष गुप्ता एवं राधेश्याम गुप्ता के नियंत्रित कक्ष में संचालित मशरूम उत्पादन इकाई का भी भ्रमण किया। यहां उन्हें नियंत्रित वातावरण में वर्षभर मशरूम उत्पादन की तकनीक से अवगत कराया गया। मौके पर मुकेश कुमार, रानी देवी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

विवि के प्रशिक्षुओं को मिला प्रशिक्षण

पूसा। डॉ .राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में प्रशिक्षण ले मशरूम के प्रशिक्षुओं ने रविवार को फिल्ड विजिट किया। इस दौरान गंगापुर स्थित मां गौरी गणेश इंटरप्राईजेज व कैजिया विष्णुपुर स्थित मशरूम उत्पादन केन्द्रो का भ्रमण किया। मशरूम वैज्ञानिक डॉ .दयाराम के नेतृत्व में भ्रमण को पहुंची टीम ने मशरूम उत्पादन के प्रायोगिक तौर–तरीको के अलावा उसमें लगने वाले सामानों की खरीदारी, बाजारो में बिक्री, पैकेजिंग व प्रोडक्ट निर्माण के बारे में विस्तार से जानकारी ली। मौके पर डॉ .राधे श्याम, ज्योति कुमारी समेत बड़ी संख्या में प्रशिक्षु मौजूद थे।

अनुसंधान परिषद की बैठक तीसरे दिन भी जारी

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में अनुसंधान परिषद की 3 दिवसीय बैठक रविवार को भी जारी रही। इस दौरान नये अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई। जिसमें कई परियोजनाओं की स्वीकृति दी गई। इस दौरान कई परियोजनाओं में अन्य आयाम को जोड़कर कार्य करने व अगली बैठक में दुबारा प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा हाइब्रीड धान के उत्पादन तकनीकों से जुड़ी जानकारियों को प्रस्तुत किया गया। सोमवार को बैठक का समापन होगा।

Hindustan 29-12-2025

प्रभात खबर 29.12.25 पेज 4

बैठक. 20वीं अनुसंधान परिषद की कार्यवाही जारी

आरसीएम में हाइब्रिड धान का उत्पादन तकनीक प्रस्तुत

प्रतिनिधि, पूसा

आरसीएम की बैठक को संबोधित करते कुलपति.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में रविवार को भी 20वीं अनुसंधान परिषद की कार्यवाही जारी रही. इससे पहले शनिवार को अनुसंधान परिषद की बैठक देर रात तक चली. वहीं अधिक संख्या में अनुसंधान परियोजनाओं और उनपर चल रहे गहन समीक्षा में लगने वाले समय को देखते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने सभी संकाय सदस्यों की सहमति से इसे रबिवार को भी जारी रखने का निर्णय लिया. रविवार को हुए बैठक में नये अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा की गई. जिसमें से कई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई. जबकि कई परियोजनाओं को फिर से विभिन्न आयामों को जोड़कर और बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा दिये गये सुझावों के अनुसार फिर से अगली बैठक में प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया. अनुसंधान परिषद की रविवार की बैठक में कुछ हाइब्रिड धान से उत्पादन तकनीक एवं अन्य कई तकनीकों को भी प्रस्तुत किया गया. जिसकी सराहना की गई. कुछ सुझाव के साथ अगली बैठक में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया. अनुसंधान परिषद का सोमवार को समापन समारोह आयोजित किया जायेगा. जिसमें किसानों से संबंधित विभिन्न तकनीक एवं रबी फसलों के उन्नत प्रभेदों की वाह्य विशेषज्ञों के द्वारा गहन समीक्षा के बाद रिलीज करने का निर्णय लिया जा सकता है.

Samastipur turmeric with 8% curcumin eyes GI tag

The Times of India 29.12.25 P 3

B K Mishra | TNN

Patna: The 'Rajendra Sonia' variety of turmeric grown abundantly in Samastipur district of Bihar may soon stake its claim for a Geographical Indication (GI) tag because of its very high curcumin content of 7 to 8 percent. Its curcumin content is even higher than that of Lakadong turmeric, a widely celebrated GI-tagged variety of Meghalaya.

According to a policy paper "Harnessing the potential of turmeric – the 'golden spice' in the state of Bihar" released by Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) at its thee-day research council meeting held at Pusa, concerted efforts would be made to boost the production of turmeric in Samastipur district which has huge potential in terms of yield and curcumin content. The district of Samastipur is identified for turmeric under 'One District One Product' programme.

The policy paper presents a holistic policy framework for upliftment of turmeric crop in the state and establishing sustainable value chains, which will directly increase income and employment opportunities. Given the Central government's thrust on turmeric via the formation of National Turmeric Board (NTB), Bihar can contribute significantly to the turmeric economy of India, the policy paper states.

Turmeric is one of India's most significant agricultural commodities, considered critical not only for its culinary purposes, but also for its therapeutic, medicinal, and industrial applications. As the world's largest producer and exporter, India accounted for 11.16 lakh tonnes of turmeric production in 2024–25, contributing over 70 percent to global supply. With the establishment of NTB in 2025, the nation has set an ambitious goal of doubling its turmeric production to 20 lakh tonnes over the next five years.

B K Mishra

'Rajendra Sonia' variety of turmeric's curcumin content is even higher than that of Lakadong turmeric, a widely celebrated GI-tagged variety of Meghalaya

As many as six varieties of Indian turmeric have received Geographical Indication (GI) tags, each possessing unique attributes. When it comes to global trade, curcumin content remains the key determinant of value. Global buyers particularly favour turmeric varieties with curcumin levels exceeding 5 percent, with premium markets rewarding even higher concentrations.

Ritambhara Singh of agribusiness management department at RPCAU, the leading author of the policy paper, told the newspaper that India exported 1.17 lakh tonnes of turmeric in 2024 and aspires to expand its reach in global markets much beyond this figure. This underscores the importance of promoting high-curcumin, and high-yielding varieties with strong export potential.

She further pointed out that Bihar presents a promising but underutilized opportunity in turmeric cultivation. Despite its warm, humid climate and suitable loamy soils, that make a favourable ambience for turmeric cultivation, the state contributes less than one percent to India's overall turmeric production. Recognising its latent potential, Samastipur district has been selected under the 'one district one product (ODOP)' initiative of the union government for turmeric promotion.

The 'Rajendra Sonia,' offers remarkable promise with high yields, short duration, and impressive curcumin content of 7 to 8 percent (the Indian Institute of Spice Research puts it at as high as 8.4). Despite such strengths, Bihar has not been able to capitalise fully on its turmeric potential so far, she said.

भास्कर 30.12.25 पेज 14

कार्यक्रम • यहां के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के कल्याण के लिए कर रहे कार्य

पूसा विवि देश को 2047 तक विकसित बनाने में देगा अपना अहम योगदान : वीसी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे अनुसंधान परिषद की बैठक के अंतिम दिन अनुसंधान कार्य से संबंधित विशेषज्ञों ने मक्का, दलहन, तिलहन, सब्जियां, फूल एवं अन्य विषयों से संबंधित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के प्रगति प्रतिवेदन को परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने अनुसंधान परिषद के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि विश्वविद्यालय पूसा देश को 2047 तक विकसित बनाने में अपना अहम योगदान देना चाहता है। यहां के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले चार दिनों तक लगातार अनुसंधान परिषद की बैठक सुबह दस बजे से रात के नौ से दस बजे तक चलती रही है। इतने ज्यादा समय तक बैठक का चलना ही देश को विकसित बनाने का ठोस प्रमाण है। उन्होंने कहा कि वे नहीं चाहते कि सिर्फ खानापूर्ति के लिए प्रभेद या तकनीक रिलीज किया जाएं। इन्ही कारणों से विश्वविद्यालय और बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा प्रभेद या तकनीक जारी करने से पहले कठोर समीक्षा की जा रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों की स्थानीय और व्यापक समस्याओं को ध्यान में रखकर अनुसंधान कर रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने तीन पालिसी पेपर जारी किया है जो ठोस अनुसंधान एवं डाटाओं पर आधारित है। इस पालिसी पेपर के आधार पर सरकार को निर्णय लेने में सहुलियत होगी और किसानों को भी फायदा होगा। उन्होंने कहा कि किसानों को अब व्यवसाय प्रबंधन एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देने की जरूरत है।

बैठक को संबोधित करते कुलपति। बैठक में मौजूद कृषि वैज्ञानिक व अन्य।

आने वाले समय में कृषि बड़ा व्यवसाय बनेगी

उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कृषि एक व्यवसाय का रूप ले सकता है इसके लिए किसानों को अभी से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को समझना होगा कि वे दुनिया भर में प्रतिभाशाली है और उन्हें सबसे बेहतर करना होगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने वैज्ञानिकों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर का लैब उपलब्ध करवाया है और यदि कहीं कोई कमी है तो उसको प्राथमिकता के आधार पर तुरंत दूर किया जायेगा। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में बोलते हुए शेर ए कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं श्रीनगर के पूर्व कुलपति डॉ. जे पी शर्मा ने कहा कि वे एक्सपर्ट के रूप में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में जाते रहते हैं लेकिन इस विश्वविद्यालय में अनुसंधान की जो प्रगति है उसको देखकर दावे के साथ कह सकते हैं कि आने वाले कुछ वर्षों के अंदर विश्वविद्यालय के अनुसंधान पूरी दुनिया को नई राह दिखायेगा।

अनुसंधान की पूरी जानकारी पहले साझा न करें

उन्होंने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे अनुसंधान की पूरी जानकारी तब तक साझा न करें जबतक उसका पूरा निष्कर्ष न आ जाए। नहीं तो दुनिया भर में लोग इसकी कापी कर सकते हैं और इससे भारत को और विश्वविद्यालय को नुकसान होगा। कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय कृषि में डिजिटल एग्रीकल्चर समेत विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि चल रहे अनुसंधान के निष्कर्ष कुछ वर्षों में आयेंगे और कृषि को नई दिशा देंगे। सह निदेशक अनुसंधान डॉ. संतोष ठाकुर ने कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन किया। जबकि संचालन डा.मुकेश कुमार एवं अन्य वैज्ञानिकों ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा, निदेशक गन्ना अनुसंधान डॉ.देवेन्द्र सिंह, डॉ. सी के झा, डॉ.महेश कुमार, डॉ.शिवपूजन सिंह, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी व कर्मी मौजूद थे।

भास्कर 30.12.25 पेज 13

संकट • कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड ने दी सलाह, आ

पाला गिरने से आलू की फस

भास्कर न्यूज | पूसा

आलू की फसल झुलसा रोग के प्रति काफी संवेदनशील होती है। आलू की फसल को सर्वाधिक नुकसान भी इसी रोग से पहुंचता है। आलू की फसल में यह रोग आम तौर पर दिसंबर और जनवरी के पहले सप्ताह में लगता है। कृषि वैज्ञानिक और विशेषज्ञों की मानें तो आलू के फसल में झुलसा रोग के लगने से पूर्व और रोग लगने के तत्काल बाद किया जाने वाला प्रबंधन ही इस फसल को बचाने का एक मात्र कारगर और महत्वपूर्ण उपाय हैं। बिहार के किसान इस रोग का ससमय और उचित प्रबंधन कर इस रोग से होने वाली क्षति को कम कर सकते है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में वातावरण में व्याप्त अत्यधिक नमी आलू की फसल में झुलसा रोग के प्रकोप को काफी तेजी से फैला सकते है। ऐसी परिस्थिति में आलू की अच्छी पैदावार के लिए किसानों को हर हाल में समय से पूर्व से ही रक्षात्मक तरीका अपनाना चाहिए।

झुलसा रोग से आलू को बचाने के लिए छिड़काव ।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 31 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि पछुआ हवाएं चलने और हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने के कारण उत्तर बिहार के जिलों मे ठंड बढ़ सकती है। जेट हवाओं के प्रभाव से कोल्ड डे की स्थिति बनी रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाए रहने की संभावना है। कहीं-कहीं बादल रह सकते हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
30 दिसंबर	15.4	11.0
31 दिसंबर	15.4	12.0
	दरभंगा	
30 दिसंबर	15.4	12.0
31 दिसंबर	17.5	12.0
	पटना	
30 दिसंबर	19.8	13.6
31 दिसंबर	19.8	13.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 30-12-25

पूर्ण मंथन के बाद ही प्रभेद व तकनीक होगा रिलीज

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अनुसंधान परिषद की बैठक के अंतिम दिन मक्का, दलहन, तिलहन, सब्जी, फूल एवं अन्य विषयों से संबंधित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया लेकिन कोई प्रभेद विकसित नहीं किया गया। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने अनुसंधान परिषद के समापन समारोह में बोलते हुए कहा कि विश्वविद्यालय देश को 2047 तक विकसित बनाने में अपना अहम योगदान देना चाहता है । यहां के विज्ञानी समर्पित भाव से किसानों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं। पिछले चार दिनों तक लगातार अनुसंधान परिषद की बैठक चलती रही। वे नहीं चाहते कि सिर्फ खानापूर्ति के लिए प्रभेद या तकनीक

4 दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक संपन्न

संबोधित करते कुलपति • जागरण

रिलीज कर दिया जाए इसलिए विश्वविद्यालय से प्रभेद या तकनीक जारी करने से पहले कठोर समीक्षा की जा रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों की स्थानीय और व्यापक समस्याओं को ध्यान में रखकर अनुसंधान कर रहा है। तीन पालिसी पेपर जारी किया गया है जो ठोस अनुसंधान एवं डाटाओं पर आधारित है। इस पालिसी पेपर के आधार पर सरकार को निर्णय लेने में सहूलियत होगी और किसानों को भी फायदा होगा। किसानों को अब व्यवसाय प्रबंधन एवं मार्केटिंग की प्रशिक्षण की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सब्जियों, फलों एवं अन्य फसलों के प्रोसेसिंग को लेकर भी किसानों को ट्रेनिंग दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कृषि एक व्यवसाय का रूप ले सकता है इसके लिए किसानों को अभी से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। कहा कि विश्वविद्यालय ने विज्ञानियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर का लैब उपलब्ध करवाया है और यदि कहीं कोई कमी है तो उसको प्राथमिकता के आधार पर तुरंत दूर किया जाएगा। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में बोलते हुए शेर ए कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं श्रीनगर के पूर्व कुलपति डा. जेपी शर्मा ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में अनुसंधान की जो प्रगति है उसको देखकर दावे के साथ कह सकते हैं कि आने वाले कुछ वर्षों के अंदर विश्वविद्यालय के अनुसंधान पूरी दुनिया को नई राह दिखाएगा। उन्होंने विज्ञानियों से आग्रह किया कि वे अनुसंधान की पूरी जानकारी तब तक साझा न करें जबतक उसका पूरा निष्कर्ष न आ जाए। मौके पर निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, सह निदेशक अनुसंधान डा. संतोष ठाकुर, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश झा, निदेशक गन्ना अनुसंधान डा. देवेन्द्र सिंह, डा. सी के झा, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक विज्ञानी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 30-12-2025

उत्साह | केन्द्रीय कृषि विवि की अदभुत छटा के साथ ग्रह-नक्षत्र व ऋषि-मुनियों के पौधे करेंगे लोगों को आकर्षित, परिसर के अधिकतर हिस्से पिकनिक स्पॉट में तब्दील

नववर्ष को लेकर सज-धजकर पूसा तैयार, हर वर्ष जुटते हैं हजारों सैलानी

पूसा, निज संवाददाता। नववर्ष के आगमन की तैयारी शुरू है। साल के पहले दिन को यादगार बनाना प्राथमिकताओं में शामिल है। इसको लेकर प्लान बनने शुरू हैं। कोई परिवार के साथ तो कुछ दोस्तों के साथ अपनी योजना तैयार कर रहे हैं। इस क्रम में पिकनिक स्पॉट सबसे अहम माना जाता है। वर्षों से डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि परिसर लोगों की पहली पसंद रही है। इसको लेकर विवि सज-धजकर तैयार है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मुख्यालय से लेकर परिसर के अधिकतर हिस्से पिकनिक स्पॉट में तब्दील रहता है। बाहर से आने वाले लोग इसकी अदभूत छंटा को अपने कैमरे में कैद करने को उत्सुक रहते हैं। विवि का जैव विविधता पार्क (पूर्व में बोटेनिकल गार्डन) इस वर्ष खास रहेगा। इस पार्क में कई अद्भूत पौधे व सजावटी सामाग्री लोगों को आकर्षित कर रही है। इस पार्क में ऋषि-मुनियों, ग्रह-नक्षत्रों के पौधों से सजा गार्डन आकर्षण का खास केन्द्र है। वनों का संग्रह ज्ञान के साथ आकर्षण का खास केन्द्र है।

पिकनिक के लिए सजधज कर तैयार विवि का जैव विविधता पार्क व पार्क में लगा तीर्थकर वन।

ऋषि गौतम व ऋषि कश्यप जैसे महापुरूषों के पौधे सप्तऋषि वन में देखा जा सकता है। तो तीर्थ वन में बेल-पाकड़ समेत कई विलुप्त हो रहे पौधे लगे हैं। वहीं तीर्थ वन में लगा बुद्ध-शनि ग्रह के पौधे ज्ञान बढ़ोतरी व मन मोहकर आनंदित करता है। हालांकि इसमें प्रवेश के लिए विवि ने 20 रुपये व 10 रुपये का टिकट लगाया है। इसके अलावा विवि परिसर स्थित बूढ़ी गंडक के निकट गोराई घाट (रिवर फ्रंट), तटबंध आदि स्थल पिकनिक स्पॉट के रूप में परिवर्तित रहता है।

विद्यापतिनगर में सुविधाओं से लैस बढ़ौना पार्क बनकर तैयार, एक को होगा उद्घाटन

विद्यापतिनगर, निसं। प्रखंड के बढ़ौना पंचायत के हाई स्कूल मैदान के समीप मनरेगा, ग्राम निधि और पंचायत निधि से निर्मित पार्क का निर्माण पूरा हो चुका है। एक जनवरी को इस पार्क का उद्घाटन होना है। इसके बाद यह पार्क आम जनमानस को समर्पित कर दिया जायेगा। मुखिया लालबाबू दास ने बताया कि इन पार्क में आधुनिक सुविधाओं का समावेश किया गया है। यहां रनिंग ट्रैक, बैठने के लिए बेंच, बच्चों के लिए झूले और युवाओं के लिए ओपन जिम की सुविधाएं उपलब्ध होंगी। वहीं बुजुर्गों को सेहत संवारने के लिए व्यायाम आदि करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। ग्रामीण क्षेत्र का यह आधुनिक पार्क और खेल मैदान बैडमिंटन कोर्ट, ओपेन जिम, सांस्कृतिक मंच, पुरुष व महिला शौचालय की व्यवस्था से परिपूर्ण है। साथ ही उन्होंने प्रखंड क्षेत्र के आम जनमानस से बढ़ौना पार्क आने का आग्रह किया है। मुखिया प्रतिनिधि माधव आनंद ने प्रेसवार्ता कर बताया कि बढ़ौना पंचायत के इतिहास में पहली बार एक जनवरी के मौके पर एक भव्य मेला एवं खेल-सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह बढ़ौना पार्क न केवल पंचायत के निवासियों के लिए है, बल्कि क्षेत्र के बच्चे और बुजुर्गों के लिए लाभदायक साबित होगा।

Hindustan 30-12-2025

'किसानों को व्यवसाय प्रबंधन सिखाने की जरूरत'

पूसा । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में अनुसंधान परिषद की बैठक के अंतिम दिन सोमवार को मक्का, दलहन, तिलहन, सब्जी, फूल एवं अन्य विषयों से जुड़ी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत की गई। मौके पर कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने समापन सत्र में कहा कि देश को 2047 तक विकसित बनाने में विवि अपना अहम योगदान देना चाहता है। यहां के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं।

Hindustan 30-12-2025

विद्यापति सभागार में अनुसंधान परिषद की बैठक का अंतिम दिन

वैज्ञानिक किसानों के कल्याण के लिए करें अनुसंधान : कुलपति

रिपोर्ट पेश

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते कुलपति.

सभागार में मौजूद वैज्ञानिक.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित विद्यापति सभागार में 20वीं अनुसंधान परिषद की बैठक के अंतिम दिन मक्का, दलहन, तिलहन, सब्जियां , फूल एवं अन्य विषयों से संबंधित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने अनुसंधान परिषद के समापन समारोह में बोलते हुए कहा कि विश्वविद्यालय देश को 2047 तक विकसित बनाने में अपना अहम योगदान देना चाहता है. यहां के वैज्ञानिक समर्पित भाव से किसानों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों की स्थानीय और व्यापक समस्याओं को ध्यान में रखकर अनुसंधान कर रहा है. तीन पालिसी पेपर जारी किया है जो ठोस अनुसंधान एवं डाटाओं पर आधारित है. इस पालिसी पेपर के आधार पर सरकार को निर्णय लेने में सहुलियत होगी. अब व्यवसाय प्रबंधन एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि सब्जियों, फलों एवं अन्य फसलों के प्रोसेसिंग को लेकर भी किसानों को ट्रेनिंग दिया जायेगा. उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कृषि एक व्यवसाय का रूप ले सकता है. इसके लिए किसानों को अभी से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है. वाह्य विशेषज्ञ के रूप में बोलते हुए शेर ए कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय जम्मू एवं श्रीनगर के पूर्व कुलपति डॉ जेपी शर्मा ने कहा कि वे एक्सपर्ट के रूप में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में जाते रहते हैं लेकिन इस विश्वविद्यालय में अनुसंधान की जो प्रगति है उसको देखकर दावे के साथ कह सकते हैं कि आने वाले कुछ वर्षों के अंदर विश्वविद्यालय के अनुसंधान पूरी दुनिया को नई राह दिखायेगा. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय कृषि में डिजिटल एग्रीकल्चर समेत विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए काम कर रहा है.

सह निदेशक अनुसंधान डॉ संतोष कुमार ठाकुर ने कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन किया. संचालन डा मुकेश कुमार ने किया. कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश कुमार झा, निदेशक गन्ना अनुसंधान डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सीके झा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन मौजूद थे.

Prabhat Khabar 30-12-2025

कार्यक्रम • दलहन फसल की रणनीतियां और हस्तक्षेप विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

दलहन उत्पादन के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिए किसानों को जागरूक करने की हैं आवश्यकता : डॉ. आरके झा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के संचार केंद्र में जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्रतिरोधी फसलों के रूप में ग्रीष्मकालीन दलहन फसल की रणनीतियां और हस्तक्षेप विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचे कृषि विभाग के कई बीएओ, एटीएम, बीटीएम के अलावे कई किसान भी हिस्सा ले रहे हैं। प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन विवि के डायरेक्टर एक्सटेंशन सह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.रत्नेश झा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. रत्नेश झा ने कहा की मौजूदा समय में दलहन उत्पादन के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिए किसानों को जागरूक करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन से निजात दिलाने की दिशा में दलहनी फसलों की खेती काफी उपयुक्त मानी जाती हैं। दलहनी फसलों को कम पानी की आवश्यकता होती हैं तथा इससे मिट्टी का स्वास्थ्य सुधरता हैं। उन्होंने कहा कि भारत दलहनी फसलों का आयात और निर्यात दोनों करता है। बावजूद इसके भारत में आबादी के अनुसार दलहन की उपलब्धता कम हैं। दलहन की इस उत्पादकता को बढ़ाना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि दलहन की खेती रबी और खरीफ दोनो सीजन में करने की जरूरत हैं। उन्होंने इस समय खेतों में लगे मटर, अरहर, मसूर, चना, बकुला, खेसारी आदि दलहनी फसलों में लगने वाले कीट व उसके प्रबंधन को लेकर जानकारी भी दी। उन्होंने आलू व सरसों उत्पादन प्राप्त कर लेने के बाद किसानों से अपने खाली पड़ें खेतों में मूंग जैसे दलहनी फसलों को लगाने की अपील भी की। डॉ. संजीव कुमार ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से तापमान में वृद्धि, अनियमित बारिश, कीटों और बीमारियों में बढ़ोतरी, मिट्टी की उर्वरता में कमी और पानी की उपलब्धता घटने से फसलों की पैदावार व गुणवत्ता घट रही है। ऐसे में किसानों को जलवायु स्मार्ट फसलों की खेती करने के लिए उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा की गर्मी को बर्दाश्त करने वाली फसल जैसे चना, अरहर, मूंगफली आदि की खेती पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। डॉ. सुनील कुमार ने कहा कि किसान जलवायु परिवर्तन से बचने और मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए खेतों की संरक्षित जुताई करें, फसल चक्र तकनीक को अपनाएं, खासकर जल प्रबंधन पर ध्यान दें, किसान मौसमीय प्रणाली का उपयोग करें। अतिथि का स्वागत व मंच संचालन डॉ. विनीता सतपति ने किया। मौके पर विवि के कई अन्य वैज्ञानिक व कर्मी मौजूद थे।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डॉ. आरके झा।

Dainik Bhaskar 31-12-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 4 जनवरी तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि लगातार पछुआ हवाएं चलने और हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने के कारण उत्तर बिहार के जिलों में ठंड की मात्रा बढ़ सकती है। उत्तर बिहार के सभी जिलों में तापमान में गिरावट की स्थिति बनी रहने की संभावना है। सुबह के समय कुहासा छाए रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
31 दिसंबर	15.0	10.0
01 जनवरी	15.0	10.5
	दरभंगा	
31 दिसंबर	15.0	10.5
01 जनवरी	16.0	10.5
	पटना	
31 दिसंबर	17.8	11.6
01 जनवरी	17.8	11.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 31-12-2025

कृषि अनुसंधान की जन्मस्थली पूसा आगंतुकों के लिए तैयार

जैव विविधता, तितली पार्क, भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर स्मृति उद्यान सहित प्रशासनिक भवन परिसर में आनंद ले सकते पर्यटक

नववर्ष की तैयारी

संस, जागरण, पूसाः राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात कृषि अनुसंधान की जन्मस्थली पूसा की धरती इस वर्ष भी आम लोगों के आगमन एवं पिकनिक मनाने को लेकर तैयार है। यहां घूमने के साथ-साथ कई विज्ञान और ज्ञान भी मिलेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन एवं स्थानीय प्रशासन मिलकर पूसा में किसी आगंतुकों को कोई दिक्कत ना हो इसलिए सारी व्यवस्था चुस्त कर दी गई है। यहां का प्रसिद्ध जैव विविधता पार्क (बोटैनिकल गार्डन), तितली पार्क, भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर स्मृति उद्यान सहित विश्वविद्यालय का प्रशासनिक भवन परिसर भी लोगों की आगवानी के लिए तैयार है। यहां हजारों की संख्या में लोग आकर परिवार के साथ लु उठाते हैं। इस बार विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में गाड़ी ले जाने पर रोक लगा दी है। उद्देश्य साफ है कि ट्रैफिक नियंत्रित रहे। विश्वविद्यालय का किसान मेला मैदान, सहित दो जगह गाड़ी लगाने की व्यवस्था प्रशासन के द्वारा की गई है। गाड़ी लगाकर आराम से घूमते हुए पूसा का लोग लु उठाएंगे।

पूसा का मुख्य द्वार एवं जैव विविधता पार्क● जागरण

पूसा का मुख्य द्वार एवं जैव विविधता पार्क● जागरण

उधर, बोस कंपनी चौक पर ही चौपहिया गाड़ी पर रोक लगा दी जाएगी और वहां से ही रूट चेंज हो जाएगा। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था विश्वविद्यालय एवं स्थानीय प्रशासन के द्वारा चुस्त कर दिया गया है। यहां लोग परिवार के साथ भी घूमने आते हैं ऐसे में उन्हें कोई कठिनाई न हो इसलिए चप्पे-चप्पे पर पुलिस की व्यवस्था रहेगी। थानाध्यक्ष रमेश कुमार एवं विश्वविद्यालय के सूचना पदाधिकारी डा. कुमार राजवर्धन ने बताया कि विश्वविद्यालय के गार्ड भी सभी जगह मौजूद रहेंगे। सादे लिबास में पुलिस प्रशासन भी सभी उच्चकों पर नजर रखेगी। नववर्ष के आगमन की खुशियां मनाने के लिए यहां पर मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, दरभंगा, वैशाली, मधुबनी तक के लोग आते हैं।

साल के स्वागत में बुके-गुलदस्तों की बढ़ी मांग

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : नववर्ष के आगमन को लेकर शहर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में उत्साह का माहौल है। नए साल के स्वागत में लोग घरों, दुकानों, कार्यालयों और सार्वजनिक स्थलों की सजावट में जुट गए हैं। शहर के फूल बाजारों में इन दिनों जबरदस्त रौनक देखने को मिल रही है। बुके से लेकर आकर्षक गुलदस्तों की मांग लगातार बढ़ रही है, इसके कारण फूल विक्रेताओं ने पहले से ही अतिरिक्त स्टॉक मंगाना शुरू कर दिया है। शहर के प्रसिद्ध फूल विक्रेता विक्की कुमार ने बताया कि नववर्ष को देखते हुए कोलकाता सहित अन्य बड़े शहरों से ताजे और उच्च गुणवत्ता वाले फूल मंगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि इस बार गुलाब, गेंदा, कारनेशन, लिली और ऑर्किड की मांग सबसे अधिक है। लोग न केवल एक-दूसरे को शुभकामनाएं देने के लिए बल्कि होटल, मैरिज हॉल, केक शॉप और पार्टी स्थलों की सजावट के लिए भी बड़ी संख्या में फूल खरीद रहे हैं। फूल विक्रेताओं के अनुसार मांग बढ़ने से कीमतों में मामूली इजाफा हुआ है।

फूल की खरीदारी करते लोग● जागरण

छोटे आकार के बुके 150 से 250 रुपये, मध्यम आकार के बुके 300 से 500 रुपये, जबकि विशेष डिज़ाइन और बड़े आकार के गुलदस्ते 600 से 1200 रुपये तक बिक रहे हैं। इसके अलावा गुलाब का फूल 20 से 30 रुपये प्रति नग, कारनेशन 25 से 40 रुपये प्रति फूल, लिली 80 से 120 रुपये प्रति डंठल तथा गेंदा 15 से 25 रुपये प्रति लड़ी के भाव पर उपलब्ध है। विक्रेताओं ने बताया कि नववर्ष की पूर्व संध्या और एक जनवरी को सुबह से ही फूलों की सबसे अधिक बिक्री होती है। कई ग्राहक पहले से ही बुके और गुलदस्तों का ऑर्डर दे रहे हैं, ताकि समय पर डिलीवरी मिल सके। बढ़ती मांग को देखते हुए दुकानों को देर रात तक खोला जा रहा है।नववर्ष को लेकर फूलों की इस बढ़ी हुई बिक्री से स्थानीय फूल विक्रेताओं में खासा उत्साह है। बाजारों में चहल-पहल बनी हुई है।

Dainik Jagran 31-12-2025

तीन दिवसीय प्रशिक्षण की हुई शुरुआत

आयोजन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में मंगलवार को 3 दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत हुई। प्रशिक्षण का विषय है जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी फसलों के रूप में ग्रीष्मकालीन दलहन : रणनीतियां और हस्तक्षेप। प्रशिक्षण का उद्घाटन विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा ने किया। संचालन प्रशिक्षण आयोजक डॉ. विनिता शतपति एवं धन्यवाद वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार ने किया। मौके पर सुरेश कुमार आदि मौजूद थे। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि मौसम के बदलते परिवेश में खेती को लाभकारी बनाना चुनौती है। ऐसे में खेती को बेहतर प्रबंधन से किसान लाभ ले सकते हैं। जरूरत है वैज्ञानिक तकनीकों को उपयोग करने की। इसमें प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका अहम है। वे किसानों व वैज्ञानिकों के बीच सेतू का कार्य कर लाभ पहुंचा सकते हैं।

विवि में आयोजित प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में मौजूद वैज्ञानिक व प्रशिक्षु।

Hindustan 31-12-2025

दलहनी फसलों का उत्पादन करने की जरूरत : डॉ झा

कार्यक्रम

प्रतिनिधि,पूसा

प्रशिक्षण वैज्ञानिकों के साथ मौजूद प्रतिभागी .

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में जलवायु प्रतिरोधी फसलों के रूप में ग्रीष्मकालीन दालें, रणनीतियां व हस्तक्षेप विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि सामाजिक संरचना के आधार पर दलहनी फसलों का उत्पादन करने की जरूरत है. केंद्र एवं राज्य सरकार ग्रीन क्रॉप्स एवं सीरियल क्रॉप्स के अलावे पल्सेज की खेती बढ़ाने की दिशा में कृतसंकल्पित है. हालांकि दलहन की खेती क्षेत्रवार घटती जा रही है. दलहनी फसलों में रासायनिक खाद या सिंचाई की जरूरत बिल्कुल नगण्य ही होती है. दलहनी फसलों का बेहतर उत्पादन लेने के लिए कम ग्रोथ वाली भूमि का चयन करने की आवश्यकता है. केंद्र सरकार एक बार और दलहनी फसलों को बढ़ावा देने के लिए हरी चादर योजना एवं पंक्ति में शक्ति योजना को धरातल पर लाकर उत्पादन बढ़ाने की दिशा में पहल की गयी थी. जबकि दलहन के उत्पादकता दर में बहुत ज्यादा वृद्धि दर्ज नहीं किया जा सका. मूंग की फसल 60 से 65 दिनों में पक कर तैयार हो जाता है. आलू एवं राई के फसल होने बाद उस खेतों में मूंग की फसल बेहतर उत्पादन देता है. दलहन के कोई भी फसलों को पंक्तिबद्ध विधि से करने पर उत्पादन में 10 से 15 प्रतिशत स्वाभाविक रूप से बढ़ने की संभावना होती है. जलवायु परिवर्तन की दौर में भूमि की उर्वरकता को संतुलित बनाए रखने की जरूरत है. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण सह कोर्स कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि भारत सरकार ने अभी अभी आत्मनिर्भर परियोजना में दलहनी फसलों को शामिल कर बढ़ावा देने का कार्य किया है. इस परियोजना के तहत प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण को शामिल किया गया है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ संजीव कुमार ने किया. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, एटीएम सुनील कुमार चौधरी, दरभंगा से अमृता, समस्तीपुर से निशा किरण, बेगूसराय से ऋचा कुमारी, खगड़िया से श्रेया चौधरी, मधुबनी से नीरजा लवली, बीटीएम टुन्नू कुमार, सूरज कुमार शामिल थे.

Prabhat Khabar 31-12-2025

खरपतवार फसल के साथ स्थान, पानी व पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं

गेहूं में खरपतवार नियंत्रण व सिंचाई उत्पादन के लिए वरदान : डॉ किशोर

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के शस्य वैज्ञानिक डॉ कौशल किशोर ने कहा कि खरपतवार हमारी फसल के साथ साथ स्थान, पानी व पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं. अगर इनका सही समय पर नियंत्रण नहीं किया गया तो उत्पादन में काफी कमी हो सकती है. किसानों के खेत में एक प्रत्यक्षण के दौरान वैज्ञानिक ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिस्थिति में रासायनिक विधि से खरपतवारों को नियंत्रित करना काफी सहज एवं आसान है. रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए कारफेंट्राजोन इथाइल 20 प्रतिशत प्लस सल्फोसल्फयूरान 25 प्रतिशत की 40 ग्राम प्रति एकड़ की मात्रा को 200 लीटर पानी में मिला कर बुवाई के 30 से 35 दिन के बाद छिड़काव करें. अथवा सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत प्लस मेटसल्फ्यूरान 5 प्रतिशत की 16 ग्राम प्रति एकड़ की मात्रा को 200 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 25 से 30 दिन पर छिड़काव करके खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है. डा किशोर ने बताया कि यह दवाएं सकरी व चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए प्रभावशाली होती है. फसलों के उचित वृद्धि एवं विकास के लिए सिंचाई का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है. गेहूं में पहली सिंचाई बुवाई के 21 दिन बाद करना चाहिए. इस अवस्था को सीआरआई अवस्था कहा जाता है. इस अवस्था में गेहूं की जड़ें जमीन में फैलती हैं. ताकि पोषक तत्वों एवं जल का समुचित अवशोषण कर सकें. गेहूं का पूरा विकास व पानी एवं पोषक तत्वों का जमीन से अवशोषण इन्हीं जड़ों पर निर्भर करता है. अतः पहली सिंचाई समय से करने के बाद नाइट्रोजन का छिड़काव का करने से पौधों का अच्छा विकास व उपज में वृद्धि होती है.

गेहूं फसल में कीटनाशी का प्रयोग करते किसान.

Prabhat Khabar 31-12-2025